

१९२३ ई० सँ प्रतिवर्ष प्रकाशित एवं प्रामाणिक एकमात्र

मिथिलादेशीय मकरन्दानुसारि

विद्यापति-पञ्चाङ्गम्

सन् १३९४ साल

वि० सं० २०४३-४४, शक: १९०८-९, सन् १३९४ साल, अं० १९८६-८७ ई०, ल० सं० ८७७-७८,
भारतीय स्वतन्त्रताब्द: ३८-३९, ने० सं० ११०६-११०७

राजा—शुक्रः मन्त्री—चन्द्रमाः ● वर्षा—१५ धान्यम्—७

पंचांगलेखक :
पं० श्री रमानन्द झा, ग० फ० ज्यौ० आचार्य
एवं वराहमिहिर

सहयोगी : पं० श्री देवकीनन्दन झा; ग० ज्यौ० धा०, सा० आचार्य

पुस्तकभंडार, पटना : लहेरियासराय

[मूल्य ७ टाका २५ पैसा]

मुद्रक : श्री हिमालय प्रेस (ऑफसेट), पटना]

दूर्वाक्षतमन्त्र

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी, महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् । ॐ मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ।।

ॐ दीर्घायुर्भव (पुरुषक हेतु); सौभाग्यवती भव स्त्रीक हेतु) मंतमे कहीं ।

कार्यंसुमार्गाऽरोहणयन्त्रं कार्यसमग्राऽऽलोकनतन्त्रम् ।
गायति विज्ञो यस्य सुवर्णं राजति नव्यं तत्तिथिपर्णम् ।।

निवेदन

६३ वर्षसँ अनवरत प्रकाशित एकमात्र मकरन्दानुसारि मिथिला देशीय पंचाग—विद्यापति पंचांगकेँ प्रकाशित करैत हमरा अपार हर्ष भऽरहल अछि। पुस्तकभंडारक संस्थापक मैथिलीविभूति मैथिलतुलसी आचार्य श्रीरामलोचनशरण जी अनेकानेक हानि होइतहुँ एकरा प्रकाशित करैत रहलाह अछि एवं हमहूँ ओहि परम्पराकेँ आगू बढ़ा रहल छी।

विद्यापति पंचांगक स्नेहीलोकनिसँ अनुरोध अछि जे पंचांगक सुधारक विषयमे अपन-अपन विचार अवश्य पठाबथि।

याद लेल जाए अपन प्रियतम पंचाग—विद्यापति पंचांग, जे अपनेक हाथमे अछि।

—प्रकाशक

ग्रहक अनुसार रत्नधारण :

ग्रह	रत्न		जड़ि
सूर्य—	माणिक	अभावमे अकौनक जड़ि	
चन्द्रमा—	मोती	,,	पलाश
[illegible]—	मूंगा	,,	खैर
	पन्ना	,,	चिड़चिड़ी
[illegible]	पोखराज	,,	पीपल
	हीरा	,,	गूलरि
[illegible]	नीलम	,,	शमी
[illegible]	गोमेद	,,	दूब
केतु—	लाजावर्त वा लहसुनिया	,,	कुश

प्रत्यन्तर्दशा साधन सारिणी

प्रत्यन्तर स्वामी एवं हुनक अवधि

प्रत्यन्तर स्वामी	रवि मा.दि.	चंद्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहु मा.दि.	बृह० मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.	केतु मा.दि.	शुक्र मा.दि.	महा०
र.	०।५	०।९	०।६	०।१७	०।१५	०।१७	०।१५	०।६	०।१८	रवि ६ वर्ष
चं.	०।९	०।१५	०।११	०।२७	०।२४	०।२९	०।२६	०।११	१।०	
मं.	०।६	०।१०	०।७	०।१९	०।१६	०।२०	०।१७	०।७	०।२१	
रा.	०।१६	०।२७	०।१९	१।१८	१।१४	१।२१	१।१६	०।१९	१।२४	
बृ.	०।१४	०।२४	०।१७	१।१३	१।८	१।१६	१।११	०।१७	१।१८	
श.	०।१७	०।२९	०।२०	१।२२	१।१६	१।२४	१।१९	०।२०	१।२७	
बु.	०।१५	०।२५	०।१७	१।१६	१।१०	१।१८	१।१३	०।१८	१।२१	
के.	०।७	०।११	०।८	०।१८	०।१७	०।२०	०।१८	०।७	०।२१	
शु.	०।१८	१।००	०।२१	१।२४	१।१८	१।२७	१।२१	०।२१	२।०	
चं.	०।१५	०।२५	०।१८	१।१५	१।१०	१।१८	१।१३	०।१८	१।२०	चन्द्र १० वर्ष
मं.	०।१०	०।१७	०।१२	१।२	०।२८	१।३	०।२९	०।१२	१।५	
रा.	०।२७	१।१५	१।१	२।२१	२।१२	२।२६	२।१७	१।१	३।०	
बृ.	०।२४	१।१०	०।२८	२।१२	२।४	२।१६	२।८	०।२८	२।२०	
श.	०।२९	१।१८	१।४	२।२५	२।१६	३।०	२।२१	१।१	३।५	
बु.	०।२५	१।१२	०।२९	२।१७	२।८	२।२०	२।१२	१।०	२।२५	
के.	०।११	०।१८	०।१३	१।१	०।२८	१।४	१।००	०।१२	१।५	
शु.	१।०	१।२०	१।५	३।०	२।२०	३।५	२।२५	१।५	३।१०	
र.	०।९	०।१५	०।१०	०।२७	०।२४	०।२८	०।२५	०।१०	१।०	
मं.	०।८	०।१२	०।८	०।२२	०।२०	०।२४	०।२१	०।९	०।२४	मंगल ७ वर्ष
रा.	०।१९	१।२	०।२२	१।२६	१।२१	२।००	१।२४	०।२२	२।०३	
बृ.	०।१६	०।२८	०।२०	१।२१	१।१४	१।२३	१।१७	०।१९	१।२६	
श.	०।२०	१।३	०।२३	१।२९	१।२४	२।३	१।२७	०।२४	२।७	
बु.	०।१८	१।००	०।२१	१।२४	१।१७	१।२५	१।२०	०।२१	१।२९	
के.	०।८	०।१२	०।८	०।२२	०।२०	०।२४	०।२१	०।८	०।२५	
शु.	०।२१	१।५	०।२५	२।३	१।२६	२।६	१।२९	०।२५	२।१०	
र.	०।६	०।११	०।७	०।१९	०।१६	०।२१	०।१६	०।७	०।२१	
चं.	०।१०	०।१७	०।१२	१।२	०।२८	१।३	१।००	०।१२	१।५	

प्रत्यन्तर स्वामी	रवि मा.दि.	चन्द्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहु मा.दि.	बृह० मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.	केतु मा.दि.	शुक्र मा.दि.	महा०
रा.	१।१८	२।२१	१।२६	४।२५	४।१०	५।४	४।१८	१।२७	५।१२	राहु १८ वर्ष
बृ.	१।१३	२।१२	१।२१	४।१०	३।२५	४।१७	४।०३	१।२०	४।२४	
श.	१।२२	२।२६	२।००	५।०४	४।१७	५।१२	४।२६	२।०	५।२१	
बु.	१।१६	२।१६	१।२३	४।१८	४।२	४।२५	४।१०	१।२४	५।३	
के.	०।१९	१।२	०।२२	१।२६	१।२०	२।००	१।२३	०।२२	२।३	
शु.	१।२४	३।०	२।३	५।१२	४।२४	५।२१	५।३	२।३	६।०	
र.	०।१६	०।२७	०।१९	१।१९	१।१३	१।२२	१।१६	०।१९	१।२४	
चं.	०।२७	१।१५	१।२	२।२७	२।१२	२।२५	२।१७	१।१	३।०	
मं.	०।१९	१।१	०।२२	१।२७	१।२१	२।००	१।२३	०।२२	२।३	
बृ.	१।८	२।४	१।१४	३।२५	३।१२	४।२	३।१८	१।१४	४।८	बृहस्पति १६ वर्ष
श.	१।१६	२।१६	१।२४	४।१७	४।२	४।२४	४।१०	१।२३	५।२	
बु.	१।११	२।८	१।१७	४।३	३।१८	४।९	३।२५	१।१८	४।१६	
के.	०।१७	०।२८	०।२०	१।२०	१।१४	१।२३	१।१८	०।१९	१।२६	
शु.	१।१८	२।२०	१।२६	४।२४	४।८	५।२	४।१६	१।२६	५।१०	
र.	०।१४	०।२४	०।१७	१।१३	१।९	१।१६	१।११	०।१७	१।१८	
चं.	०।२४	१।१०	०।२८	२।१२	२।४	२।१६	२।८	०।२८	२।२०	
मं.	०।१७	०।२८	०।१९	१।२१	१।१४	१।२३	१।१७	०।२०	१।२६	
रा.	१।१३	२।१२	१।२१	४।०९	३।२६	४।१७	४।३	१।२०	४।२४	
श.	१।२४	३।०	२।३	५।१३	४।२५	५।२१	५।४	२।३	६।१	शनि १९ वर्ष
बु.	१।१९	२।२१	१।२७	४।२५	४।९	५।३	४।१७	१।२७	५।१२	
के.	०।२०	१।३	०।२३	२।००	१।२३	२।४	१।२७	०।२४	२।६	
शु.	१।२७	३।५	२।६	५।२१	५।२	६।०	५।११	२।६	६।१०	
र.	०।१७	०।२९	०।२०	१।२१	१।१६	१।२४	१।१९	०।२०	१।२७	
चं.	०।२८	१।१७	१।४	२।२६	२।१६	३।०	२।२१	१।३	३।५	
मं.	०।२०	१।३	०।२३	२।००	१।२३	२।४	१।२६	०।२३	२।६	
रा.	१।२१	२।२६	२।०	५।३	४।१७	५।१२	४।२५	२।०	५।२१	
बृ.	१।१६	२।१६	१।२३	४।१७	४।१	४।२४	४।१०	१।२३	५।२	

प्रत्यन्तर स्वामी	रवि मा.दि.	चन्द्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहु मा.दि.	बृह० मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.	केतु मा.दि.	शुक्र मा.दि.	महा०
बु.	१।१४	२।१२	१।२१	४।१०	३।२५	४।१७	४।२	१।२१	४।२४	बुध १७ वर्ष
के.	०।१८	१।०	०।२१	१।२४	१।१८	१।२७	१।२१	०।२०	२।०	
शु.	१।२१	२।२५	१।२९	५।३	४।१६	५।१२	४।२४	२।००	५।२०	
र.	०।१५	०।२६	०।१८	१।१६	१।११	१।१९	१।१४	०।१८	१।२१	
चं.	०।२५	१।१२	१।०	२।१६	२।८	२।२०	२।१२	१।०	२।२५	
मं.	०।१८	१।०	०।२०	१।२४	१।१७	१।२६	१।२१	०।२०	१।२९	
रा.	१।१६	२।१६	१।२४	४।१७	४।३	४।२६	४।१०	१।२४	५।३	
बृ.	१।११	२।८	१।१८	४।३	३।१८	४।०९	३।२५	१।१८	४।१६	
श.	१।१८	२।२१	१।२६	४।२५	४।१०	५।३	४।१८	१।२६	५।१२	
के.	०।८	०।१२	०।८	०।२२	०।२०	०।२४	०।२१	०।८	०।२४	केतु ७ वर्ष
शु.	०।२१	१।५	०।२५	२।३	१।२६	२।६	२।०	०।२५	२।१०	
र.	०।६	०।११	०।७	०।१९	०।१७	०।२०	०।१८	०।७	०।२१	
चं.	०।१०	०।१७	०।१३	१।२	०।२८	१।४	१।०	०।१२	१।५	
मं.	०।८	०।१२	०।८	०।२२	०।१९	०।२३	०।२१	०।९	०।२४	
रा.	०।१९	१।२	०।२२	१।२६	१।२१	२।०	१।२४	०।२२	२।३	
बृ.	०।१६	०।२८	०।२०	१।२१	१।१४	१।२३	१।१७	०।१९	१।२६	
श.	०।२०	१।३	०।२३	२।०	१।२४	२।३	१।२६	०।२४	२।७	
बु.	०।१८	१।०	०।२१	१।२३	१।१७	१।२६	१।२०	०।२१	२।०	
शु.	२।०	३।१०	२।१०	६।०	५।१०	६।१०	५।२०	२।१०	६।२०	शुक्र २० वर्ष
र.	०।१८	१।०	०।२१	१।२४	१।१८	१।२७	१।२१	०।२१	२।००	
चं.	१।०	१।२०	१।५	३।०	२।२०	३।५	२।२५	१।५	३।१०	
मं.	०।२१	१।५	०।२४	२।३	१।२६	२।७	१।२९	०।२५	२।१०	
रा.	१।२४	३।०	२।३	५।१२	४।२४	५।२१	५।३	२।३	६।००	
बृ.	१।१८	२।२०	१।२६	४।२४	४।८	५।२	४।१६	१।२६	५।१०	
श.	१।२७	३।५	२।७	५।२१	५।२	६।०	५।१२	२।६	६।१०	
बु.	१।२१	२।२५	१।२९	५।३	४।१६	५।१२	४।२४	२।००	५।२०	
के.	०।२१	१।५	०।२५	२।३	१।२६	२।६	२।०	०।२४	२।१०	

परिशिष्ट

शुद्धाऽशुद्ध निर्णय

श्रावणशुक्ल ४ शनिसँ श्रावणशुक्ल ११ शनि धरि शुद्ध। भाद्रशुक्ल १५ बृहस्पतिसँ कातिककृष्ण १ शनि धरि शुद्ध। कातिकशुक्ल ५ बृहस्पतिसँ मार्गशुक्ल १४ सोम धरि शुद्ध। पौषशुक्ल १५ बृहस्पतिसँ फाल्गुनकृष्ण १४ शुक्र धरि शुद्ध। बैशाखशुक्ल ३ शुक्रसँ आषाढ़कृष्ण ३० शुक्र धरि शुद्ध।

गतवर्षक सिंहावलोकन

प्रस्तुत पञ्चाङ्गमे लिखल छल जे अधिकारी वर्गमे अधिकाधिक पापग्रहे छथि। मकरन्दक अनुसार रोहिणीक वास तटगत अछि, तेँ उपज सन्तोषप्रद नहि, विविधोत्पात, समय प्रतिकूल इत्यादि फल अक्षरशः चरितार्थ भेल।

वर्तमान (२०४३) **वर्षक पदाधिकारी** प्रमाथी नामक सम्वत्सर अछि। एहि वर्षमे मकरन्दक अनुसार ग्रहमन्त्रि-मण्डलक पदाधिकारी अधोलिखित निर्वाचित छथि: **अध्यक्ष–शुक्र, प्रधान मन्त्री–चन्द्रमा, गृहमन्त्री–गुरु, मेघ (पुष्कर) मन्त्री–गुरु, सिचाई मन्त्री–शुक्र, खाद्यमन्त्री–बुध, रक्षामन्त्री–गुरु, ग्रहमन्त्रिमण्डलमे सब शुभग्रहे छथि।**

वर्षफल २०४३-४४

प्रमाथी नामक सम्वत्सरक फल—दुर्भिक्ष, अर्थक हानि, चोर द्वारा पीड़ा, अधिक विग्रह इत्यादि अशुभ फल होयत, पराधंमे पृथ्वीपर सभ प्रकारक धान्यक उपज निर्विघ्नतापूर्वक होयत आ मधु-मद्य-घृत महार्घ होयत।

अध्यक्ष शुक्रक फल—राजा नीतिपूर्वक राज्य संचालन करताह। शास्त्रक अनुकूल धर्मक पालन होयत। मेघ समयानुसार वर्षा करत, पृथ्वी स्फीत रहतीह। पृथ्वी चोरक उपद्रवसँ आतंकित रहतीह। राजा उत्सुकतासँ राज्य संचालन करताह आ प्रजालोकनि यज्ञादिक कार्यमे निरत रहताह।

प्रधानमन्त्री–चन्द्रमाक फल—पृथ्वी शुभकर्म द्वारा सदा फलवती आ प्रसन्ना रहतीह। वृक्ष उन्नतशील रहत। ब्राह्मण धनोपार्जनमे संलग्न रहताह। मेघ सदा धान्यक वृद्धि करएवाली वृष्टि करत, आ राजा शत्रुक आतंकसँ पीड़ित रहताह।

गृहमन्त्री गुरुक फल—ब्राह्मण प्रतिदिन सत्कर्ममे लीन भय यज्ञ कर्ममे प्रवृत्त रहताह। राजा प्रसन्न भय राज्य संचालन करताह। दुष्टजनक नाश होयत, मेघ सदा जल देत। रोगक नाश होयत आ समस्त पृथ्वी अनेक प्रकारक धानसँ युक्त रहतीह।

मेघमन्त्री गुरुक फल—मेघ अधिक बलशाली जल देत।

सिचाई मन्त्री शुक्रक फल—पृथ्वी सदा अधिक जलसँ युक्त रहतीह।

खाद्यमन्त्री बुधक फल—धान्य के वृद्धि करऽवाली वृष्टि पृथ्वीपर सदा होयत, आ उपद्रवरहित प्रजावर्ग रहताह।

रक्षामन्त्री गुरुक फल—प्रजावर्ग धन-धान्यसँ पूर्ण।

पुष्कर नामक मेघक फल—समस्त पृथ्वी चित्र-विचित्र रहतीह आ वृष्टि विचित्र होयत, तथा पृथ्वी धान्यसँ पूर्ण।

रोहिणीक वास समुद्रमे—अधिक जलसँ पृथ्वी व्याप्त।

चैत्रशुक्ल पड़िव तिथिक फल—अतिवृष्टि।

शाके सँ वर्षाक ज्ञान—समान वृष्टि।

अथ लोकव्यवहारार्थं विश्वा लिख्यते—

वर्षा १५, धान्य–७, शीत–५, तृण–६, उष्ण–११, वायु–१३, प्रजावृद्धि–१५, प्रजाक्षय–१५, विग्रह–११, क्षुधा–५, तृष्णा–१३, निद्रा–७, आलस्य–१३, उद्यम–७, शान्ति–११, क्रोध–३, दण्ड–३, मैत्री–१, उत्सव–१३, पाप–७, पुण्य–११, रसादि–६, उग्रत्व–३, रसोत्पत्ति–१३, फलोत्पत्ति–१३, रोग–७, रोगक्षय–१७, आचार–१३, अन[illegible]र–१५, मरण–६, जनन–१५, चौरभय–१६, चौर-शान्ति–५, अग्निभय–६, अग्निशान्ति–१७।

आय-व्यय चक्र

राशि	मेष वृश्चिक	वृष तुला	मिथुन कन्या	कर्क	सिंह	धनु मीन	मकर कुम्भ
आय	२	११	१४	८	११	५	८
व्यय	८	१४	११	११	५	१४	८
फल	लाभ	हानि	हानि	सौख्य	विजय	सौख्य	विजय

राशिफल

मेष राशिक फल—ग्रह-गोचरवश ई वर्ष सामान्य-कोटिक रहत। वातविकारजन्य कष्ट, उदर विकार, मैत्रीमे बाधा, पशुक हानि, सन्तानजन्य कष्ट, पत्नीक कष्ट, अपव्यय, शारीरिक कष्ट विशेष, अर्थोपार्जनमे अधिकारी-वर्गसँ सहयोग भेटत, कष्टनिवारणार्थं शनि, राहुक आराधना, कारी तिल, लोह, कारी वस्त्र धारण करी।

वृष राशिक फल—ग्रहस्थितिक अनुसार ई वर्ष साधारण रहत। शारीरिक आ मानसिक कष्ट होयत, नौकरीमे बाधा रहैत परिणाम सुखद रहत, किछु अपव्ययक जीवन सुखद होयत। सन्तानसुख नीक रहत, स्त्रीजन्यकष्ट होयत, क्लेशशान्त्यर्थं शनि, राहुक जपादि आ कारी वस्त्र, लोह धारणसँ लाभ होयत।

मिथुन राशिक फल—ई वर्ष ग्रहस्थितिक अनुसार नीक रहत। पारिवारिक जीवन सुखद होयत। रोग आ शत्रु पर विजय रहत। कृषि आ व्यापार एवं नौकरीमे लाभ होयत। पदोन्नति होयत, पत्नीकेँ ताप आ रक्तजन्य कष्ट होयत। किन्तु अपव्यय द्वारा सुखमे बाधा थीक. तदर्थं शिवक आराधना श्रेयस्कर।

कर्क राशिक फल—ग्रहस्थितिक अनुसार ई वर्ष नीक रहत, आयसँ व्यय अधिक होयत। तथापि जीवन सुखद रहत, चिन्तामुक्त रहब, उदरविकार रहत। सन्तान-सम्बन्धी चिन्ता रहत, तदर्थं शनिक आ[illegible]धना, कारी वस्त्र, कारी तिलक सेवन लाभप्रद रहत। [illegible]म्पत्य जीवन नीक रहत, स्थान लाभ, समाजमे प्रतिष्ठा भेटत।

सिंह राशिक फल—ई वर्ष ग्रहगोचरवश मध्यकोटिक रहत, पत्नीसुख नीक रहत, सन्तान सुखमे किछु बाधा होयत, परिणाम सुखद रहत, अर्थोपार्जनमे लाभ नीक रहत, पदोन्नति अनायास होयत, आयसँ व्यय अल्प रहत, परिणाममे विजय होयत, किछु मानसिक चिन्ता रहत, तदर्थं शनि, मंगल, गुरुक आराधना, लोह, मूंगा, पोखराज धारणसँ विशेष शान्तिक लाभ होयत।

कन्या राशिक फल—ग्रहस्थितिक अनुसार ई वर्ष उत्तम कोटिक रहत। सामान्य जीवन नीक रहत। सन्तान-जन्य सुख अनुकूल रहत, परिवारमे सौमनस्य रहत। कृषि-व्यापारमे लाभ होयत, शत्रु आ मित्रसँ सुखानुभव होयत। समाजमे प्रतिष्ठा भेटत, आयसँ व्यय अल्प रहितहु चिन्ता-ग्रस्त रहब। उत्तम स्थानक लाभ होयत। नीला वस्त्र, लोह, मूंगा धारण लाभ-प्रद रहत।

तुला राशिक फल—ई वर्ष उत्तम कोटिक रहत। पारिवारिक सुख उत्तम रहत। समाजमे प्रतिष्ठा रहत, कार्यमे सिद्धि भेटत। धनधान्यक लाभ होयत, व्यापारमे वृद्धि रहत। धर्म (यज्ञादि) कार्यमे व्यय होयत। नूतन [illegible]क योग अछि। शनिक साढ़ेसाती द्वारा किछु [illegible]। रोग आ शत्रुसँ चिन्तित रहब। शनिक [illegible] विशेष शान्ति भेटत।

[illegible]क राशिक फल—ग्रहगोचरक अनुसार ई वर्ष [illegible] कोटिक रहत। व्यापारमे हानि, समाजमे कलंक, स्थानभ्रष्ट, कार्यमे बाधा इत्यादि फल होयत। वर्षक उत्तरार्ध नीक होयत, पारिवारिक सुख नीक रहत। शनिक साढ़ेसातीक कारण आ पत्नीभावमे मंगल के कारणसँ पत्नी-

जन्य कष्ट होयत। तदर्थ शनि-मंगलक भाराधना, कारी वस्त्र, लोह, कारी तिल, मूँगा आ लाल वस्त्र सेवनसँ शान्ति भेटत, परिणाममे लाभ होयत।

धनु राशिक फल—ई वर्ष मध्यमकोटिक रहत। भायसँ व्यय अधिक रहत, तथापि परिणाम सुखद रहत, रोग-शत्रु पर विजय रहत। सन्तान सुख नीक रहत। व्यवसायमे बाधा होयत, कदाचित् मित्रवर्गसँ विरोधक सम्भावना अछि। शनिक साढ़ेसातीसँ किछु अपव्यय होयत, एतदर्थ शिव आ दुर्गाक आराधना श्रेयस्कर रहत।

मकर राशिक फल—ग्रहगोचरवश ई वर्ष उत्तम रहत। पारिवारिक सुख नीक रहत। धन-धान्यक लाभ होयत, विवाहादि मंगल कार्यमे व्यय अधिक होयत, सुख-शान्तिक प्रसार होयत। मंगल द्वारा सन्तान किछु सीदित रहत, तेँ मंगलक आराधना—लाल मूँगा, लाल वस्त्र धारणसँ सुखानुभव होयत। शनिक सन्तुष्टिक हेतु लोह, कारीवस्त्र, तिल सेवनसँ लाभ होयत, सन्तान सुखी रहत।

कुम्भ राशिक फल—ग्रहगोचरवश ई वर्ष मध्यम कोटिक रहत। श्रमपूर्वक अर्थोपार्जन होयत। पारिवारिक स्थिति नीक रहत। शारीरिक कष्ट साधारण होयत। मानसमे किछु अशान्ति रहत। साधारण अपव्यय होयत। परिणाममे विजय होयत। दुर्गापाठ आ शंकरक आराधना श्रेयस्कर थीक।

मीन राशिक फल—ई वर्ष ग्रहस्थितिक अनुसार मध्यम कोटिक रहत। धन-धान्यक लाभ होयत, शारीरिक समाचार नीक रहत, सन्तान-सुख नीक रहत। पत्नी सुख अल्प होयत। आयसँ व्यय अधिक रहत। तथापि समय सुखद रहत। वर्षक उत्तरार्ध विशेष नीक रहत। समाजमे प्रतिष्ठा, गृहकार्यमे उद्यम, व्यापारमे लाभ इत्यादि सुख होयत। अनिष्टक शान्त्यर्थ शिवाराधन विशेष लाभप्रद होयत।

मासफल

श्रावण मासक फल—एहि मासमे वर्षाक योग अल्प अछि। पश्चिम प्रदेशक जनताकेँ विशेष कष्ट अनुभव हेतैक। अमावास्या के लगभग प्रत्येक धातुपदार्थमे तेजी होयत, खाद्य पदार्थक भावमे उन्नति होयत। एहि मासमे जनवर्ग सीदित रहत। तेलहन आदि रस पदार्थक भावमे तेजी होयत। कपास आदि वस्त्रक भाव उन्नत रहत।

भाद्र मासक फल— एहि मासमे वर्षाक योग नीक अछि। कृषकवर्गमे प्रसन्नता रहत। पशु वर्गके हानि होयत। लाल पदार्थ एवं तेलहनक भावमे किछु मन्दता आओत। खाद्य पदार्थक भावमे शिथिलता होयत। मासान्तमे खाद्यान्नक भावमें तेजी होयत।

आश्विन मासक फल—एहि मासमे उपज नीक होयत, तथापि खाद्यान्नक भाव परम महँग रहत। सोना, चानी, तामा, पित्तल एवं लाल पदार्थ, तेलहन, गुड़ आदिक भावमे विशेष तेजी रहत। एहि मासक पूर्णिमा के खग्रास चन्द्रग्रहण भय रहल आछि, तेँ सिंह, कन्या, धनु, कुम्भ के साधारण क्लेश, होयत। मासान्तमे वस्तुक भावमे मंदी।

कार्तिक मासक फल—एहि मासमे खाद्य पदार्थक भाव समता रहत। राष्ट्रीय विस्फोटक विशेष समाधान होयत। वर्षाक योग साधारण अछि। बंगाल आ कोणस्थ उड़ीसा पर विशेष क्षति होयत। धातु पदार्थक तेजी होयत। एहि मास मे विश्व के कोनो देश के विध्वंसक सम्भावना अछि। प्रजा वर्गमे अशान्ति आ क्लेश अनुभवक योग आछि।

मार्ग मासक फल—एहिमासमे खाद्यान्नक भावमे समानता रहत। राजनैतिक क्षेत्रमे उथल-पुथल होयत। विदेशी वा पड़ोसीसँ विशेष भय थीक। जन विरोधसँ जनवर्ग अशान्त रहत। खाद्य-पदार्थक भाव तेजी रहत। व्यापारीवर्ग लाभान्वित रहत। राष्ट्रमे युद्धक सामग्री विशेष संग्रह होयत। मासक उत्तरार्धमे शीतलहरीक प्रकोप सेहो सम्भव अछि।

पौष मासक फल—खाद्यान्नक भावमे समता रहत। राजनैतिक विरोधमे सन्धिक योग अछि। समुद्री तटपर विशेष दुर्भीक्ष, विश्वयुद्धक सम्भावना अछि। पश्चिमोत्तर प्रदेशमे युद्ध अथवा कोनो आकस्मिक दुर्घटनाक योग आछि। शीतलहरीक प्रकोपसँ जीवमात्र सीदित रहत। सर्वत्र उपज नीक होयत। कफक वृद्धिसँ जनवर्ग विशेष क्लेशित रहत।

माघ मासक फल--एहि मासमे खाद्यान्नक भावमे समर्घता रहत। राजनैतिक क्षेत्रमे सुख-शान्तिक स्थापना होयत। पूर्व-दक्षिण देशमे दुर्भीक्षक सम्भावना थीक। जलक अभाव दृश्य होयत, पशुवर्ग रोगसँ पीड़ित होयत। मासक मध्यमे सुभीक्षक-स्थापना होयत। जनवर्गमे शान्तिक स्थिति दृश्य होयत।

फाल्गुन मासक फल—एहि मासमे खाद्यान्नक भावमे विशेष तेजी होयत। राष्ट्रीय संघर्ष, गृह विद्रोह, जनवर्गमे विवादक स्थिति उपस्थित होयत। समुद्री तटवासी के विशेष कष्टक योग थीक। प्रायः सब वस्तुमे तेजी होयत। तेल, तेलहन, लोह आदिक भावमे सेहो तेजी होयत।

चैत्र मासक फल—खाद्यान्नक भावमे समानता रहत। देशक स्थिति नीक रहत। किछु प्रदेश नेताद्वारा आतंकित रहत। तेलहन वस्तु आ तिल, गहूम, मसुरी आदिक भावमे तेजी रहत। सोना, चानी, पित्तल आदिक धातु पदार्थमे उन्नतिक सम्भावना थीक। तापमान अधिक रहत।

वैशाख मासक फल—एहि मासमे खाद्य पदार्थक भावमे समता रहत। तापमान आ वातप्रकोप अधिक रहत। रोगजन्य अपव्यय अधिक होयत। क्षुद्रजनक उपद्रवसँ जनवर्ग अशान्त रहत। पशु वर्गक हानि होयत। लाल पदार्थक भावमे उन्नति होयत। देशक स्थिति नीके रहत।

ज्येष्ठ मासक फल--एहि मासमे खाद्यान्नक भावमे विशेष तेजी होयत। गुड़, मसुरी, तीसी आदि लाल पदार्थक विशेष तेजी होयत। राजा या प्रजा वर्गमे परस्पर प्रेमक स्थापना होयत, मास भरि तापमान आ वातप्रकोप अधिक जारी रहत, मौसम प्रतिकूल रहत।

आषाढ़ मासक फल—एहि मासमे अन्नक भाव समान रहत। लाल वस्तुक भाव तेज रहत। विश्व (देश) मे शान्तिक स्थापना होयत। सरकार राज्य संचालनमे हर्षित रहताह। प्रजालोकनि निरन्तर अपना कार्यमे लागल रहताह। आकाश मेघाच्छन्न रहत। समय सुखद. किन्तु कृषक वर्गमे अशान्ति रहत।

सन् १३६४ सालक पर्व-सूची

पर्व	तिथि	मास
मौनापंचमी	२६	जुलाई
मधुश्रावणी	८	अगस्त
नागपंचमी	१०	,,
रक्षाबंधन	१६	,,
कृष्णाष्टमी	२७	,,
कुशी अमावास्या	४	सितंबर
तीज एवं चौठचंद्र	७	,,
अनन्त चतुर्दशी	१६	,,
विश्वकर्मा पूजा	१७	,,
जितिया	२६	,,
कलश-स्थापन	७	अक्टूबर
विजयादशमी	१२	,,
कोजागरा, चंद्रग्रहण	१७	,,
दीपावली	१	नवंबर
भ्रातृ द्वितीया, चित्रगुप्त पूजा	४	,,
प्रतिहारषष्ठी	७	,,
अक्षयनवमी	१०	,,
देवोत्थान एकादशी	१२	,,
कार्तिकी पूर्णिमा	१६	,,
सोमवारी व्रत	१	दिसंबर
विवाहपंचमी	६	,,
रविव्रतविधि आरंभ	७	,,
तिलासंक्रान्ति	१४	जनवरी
नरकनिवारण १४	२८	,,
सरस्वती पूजा	३	फरवरी
अचलासप्तमी	५	,,
शिवरात्रिव्रत	२६	,,
होलिकादाह	१५	मार्च
होली	१६	,,
रामनवमी	७	अप्रैल
जूड़शीतल	१३	अप्रैल
सोमवारी व्रत	२७	अप्रैल
अक्षयतृतीया	१	मई
रविव्रतविधि समाप्ति	१०	,,
वटसावित्री	२७	मई
गंगादशहरा	७	जून
रथयात्रा	२८	,,
हरिशयनी ११	७	जुलाई
गुरुपूर्णिमा	११	,,

उपनयनक दिन

फरवरी : ८।१६।१६।१८

मई : ३।८

विवाहक दिन

नवंबर : २७।२८

दिसंबर : ५।११

जनवरी : १६।२१।२२

फरवरी : २।४।८।१६।१८।१९। २२।२३।२५

मई : ८।१०।१७।१८।२२।२४

जून : १२।

द्विरागमनक दिन

नवंबर : २०।

दिसंबर : ३।५।११

फरवरी : १६।

मार्च : २।११।

अथ मेषादिषड्राशीनां लग्नसारिणी

अंशाः	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	३६	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	००	८	१६	२५	३३
३।३८	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	१२	२४	४६	७	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२
वृ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१
४।११	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६
मि.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२
५।३	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६
क.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४३	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७
५।४३	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	२४	००	३३	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	४	४२	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४
सि.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८
	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८
५।४७	२८	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६
क.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३
	२९	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६
५।३८	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६

अथ तुलादिषड्राशीनां लग्नसारिणी

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
तु.	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	७	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०
५।३८	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	५०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४
वृ.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	३	१३	२५
५।४७	२८	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६
ध.	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	३९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०
५।४३	३१	५७	२४	५०	१६	४२	८	३४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६
म.	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१७	०६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६
५।३	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४८	७	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२
कु.	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
	१५	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	[illegible]	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४
४।११	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६
मी.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२
३।३८	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१०	३२	४८	४	२०	३६

महामृत्युञ्जय-मन्त्र—ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ ।

लघुमृत्युञ्जयक मन्त्र—ॐ जूं सः ।

ध्यानम्—चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत् सुदीप्तममलं हास्यास्यपङ्केरुहम् । सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् ।

प्रद्वाधिकत्वाद्द्वाविंशत्ययनांशे मिथिलायां प्रथमलग्नसारिणी । लग्नानयनार्थपद्यम् ॥
इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतं च ॥ यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलाऽनुपातात् ।

गोचरी ग्रहक विचार—जन्मराशिसँ वा नाम राशिसँ, सूर्य, मंगल-शनि तथा राहु १।२।४।५।७।८।९।१०।१२ स्थानमे हो तँ अशुभ । १०म सूर्य अशुभ नहि होइछ । केतुक फल राहुक समान । चन्द्र—४।६।८।१२ अशुभ ।

बुध—१।३।५।७।९।१२ अशुभ । बृ. १।३।४।६।८।१०।१२ । **शुक्र** ६।७।८।१० अशुभ । उपर्युक्त लिखित फल साधारण थिक । विशेष फलाफल जन्म कुण्डलीक आधारपर मिलैछ । धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण शुभदा ग्रहाः । धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः ॥

ता.	ज.	फ.	मा.	अ.	म.	जू.	जु.	अ.	सि.	अ.	न.	दि.	ता.	ज.	फ.	मा.	अ.	म.	जू.	जु.	अ.	सि.	अ.	न.	दि.
१	०४	१४	१२	४	३	२	४	६	+	१०	१६	११	१७	०१०	१४	८	+१	४	०१	६	४	+६	१५	१५	४
२	४	१४	१२	४	३	२	४	६	×	११	१६	१०	१८	११	१४	८	१	४	१	६	४	६	१५	१५	३
३	५	१४	१२	३	३	२	२	६	१	११	१६	१०	१९	११	१४	८	१	४	१	६	३	६	१५	१४	३
४	५	१४	१२	३	३	२	४	६	१	११	१६	१०	२०	११	१४	८	१	४	१	६	३	७	१५	१४	२
५	६	१४	१२	३	४	२	४	६	१	१२	१६	९	२१	१२	१४	७	१	४	२	६	३	७	१५	१४	२
६	६	११	११	२	४	२	४	६	२	१२	१६	९	२२	१२	१४	७	२	४	२	६	३	७	१५	१४	१
७	७	१४	११	२	४	१	५	६	२	१२	१६	८	२३	१२	१४	७	२	३	२	६	२	८	१६	१३	१
८	७	१४	११	२	४	१	५	५	२	१२	१६	८	२४	१२	१३	६	२	३	२	६	२	८	१६	१३	×
९	७	१४	११	२	४	१	५	५	३	१३	१५	७	२५	१३	१३	६	२	३	२	६	२	८	१६	१३	×
१०	८	१४	१०	१	४	१	५	५	३	१३	१६	७	२६	१३	१३	६	२	३	३	६	२	९	१६	१२	०१
११	८	१४	१०	१	४	१	५	५	३	१३	१६	६	२७	१३	१३	५	२	३	३	६	१	९	१६	१२	१
१२	९	१४	१०	१	४	×	५	५	४	१४	१६	६	२८	१३	१३	५	३	३	३	६	२	९	१६	१२	२
१३	९	१४	१०	×	४	×	५	५	४	१४	१६	६	२९	१३	१२	५	३	३	३	६	२	१०	१६	११	२
१४	९	१४	९	×	४	×	६	४	५	१४	१५	५	३०	१४	×	४	३	३	३	६	×	१०	१६	११	३
१५	१०	१४	९	×	४	×	६	४	५	१४	१५	५	३१	१४	×	४	×	३	×	६	×	×	१६	×	३
१६	१०	१४	९	+	४	०	६	४	५	१४	१५	४													

वेलान्तर सारिणी

स्टैंडर्ड टाइमसँ लोकल टाइम बनएबाक विधि—प्रायः सम्पूर्ण भारतमे स्टैण्डर्ड टाइम एके अछि, एहिमे सर्वत्र एकहि साथ १२ बजैत अछि। किंतु धूप घड़ीक समय प्रत्येक स्थानक भिन्न-भिन्न होइछ। अन्तरक निवारणार्थ दूटा संस्कार देशान्तर तथा वेलान्तरक आवश्यक होइछ। स्टैण्डर्ड टाइममे मिथिला (दरभंगा) के हेतु १३ मि. ४८ से. सर्वदा जोड़ी—जे रेखांशान्तर (देशान्तर) अछि। कोष्ठ मे ० चिह्नसँ लगातार ऋण+चिह्नसँ लगातार धनक लेल मिनट रूपक वेलान्तर अछि। पटनाक हेतु १०।५२ युक्त करी।

मुजफ्फरपुर--१२।२४, जमशेदपुर—१४।४०, जयनगर—१३।३६, मुंगेर—१२।०, गया हेतु—१०।०।

बालकमरणाशौचविचारः

ब्राह्मणबाले सप्तमासात् प्राक्मृते ब्राह्मणानां सद्यश्शौचम्, केशनखच्छेदनं स्नानञ्च। सप्तममासमारभ्य जन्मतो द्वितीयवर्षपर्यन्तमेकाहोरात्रमशौचम् उभयत्र भूमिखननं श्मश्रुवादिच्छेदनञ्च। तदूर्ध्वं षड्वर्षं यावत्त्रिरात्रम्, तत्र दाहं कृत्वा पिण्डदानं द्वितीयदिनेऽस्थिसञ्चयनं तदसम्भवे तृतीयदिने पिण्डदानमस्थिसञ्चयनं नखकेशच्छेदनञ्च चतुर्थदिने ब्राह्मणभोजनमिति। षड्वर्षानन्तरं त्रयाणां ब्राह्मणादीनां सम्पूर्णाशौचमिति।

क्षत्रियाणां सप्तमासपर्यन्तं सद्यः अनन्तरं २ वर्षपर्यन्तं द्व्यहम्। तदूर्ध्वं ६ वर्षपर्यन्तं ६ दिनमशौचम्। वैश्यानां ७ मासपर्यन्तं सद्यः, अनन्तरं २ वर्षपर्यन्तं त्र्यहं, ऊर्ध्वं ५ वर्षपर्यन्तं नवरात्रम्। षड्वर्षानन्तरं ब्राह्मणक्षत्रियविशां सम्पूर्णाशौचम्, एकादशाहादिक्रियाश्च। शूद्राणां ७ मासं यावत् सद्यः, अनन्तरं २ वर्षं यावत् पञ्चाहं भूमिखननञ्च। तदूर्ध्वं षोडशवर्षपर्यन्तं अविवाहिते मृते १२ दिनम्, अनन्तरं मासमशौचं श्राद्धादिक्रियाश्च। पञ्चवर्षानन्तरं १६ वर्षं अभ्यन्तरे च विवाहिते मृते मासमशौचं श्राद्धादिक्रियाश्च।

जन्मतो द्वितीयवर्षपर्यन्तं कन्यामरणे सर्ववर्णानां सद्यश्शौचम्। द्वितीय वर्षादूर्ध्वं तुभ्यमेषा कन्या दातव्या इति वाक्प्रयोगपर्यन्तमेकाहोरात्रमशौचम् तादृशवाक्यप्रयोगानन्तरं विवाहपर्यन्तं पितृकुले पतिकुले च त्रिरात्रम्। यत्र वाग्दानं नास्ति तत्र द्वितीयवर्षानन्तरं विवाहपर्यन्तमेकाहोरात्रमशौचम्।

दाहकर्तुस्तत्रापि त्रिरात्रमशौचमेव, 'दहित्वा च वहित्वा च त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्' इति वचनात्। असम्बन्धिद्विजान् दहित्वा वहित्वा च सद्यःशौचम्। सम्बन्धे सति त्रिरात्रमिति पैठीनसिवचनात्। (कृत्यसारसमुच्चये)

ग्रहाणां यजुर्वेदीयशान्तिमन्त्राः

अथ सूर्यस्य—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन्।

अथ चन्द्रस्य—ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यं पुत्रममुष्य पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाम्वं राजा।

अथ कुजस्य—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाम्वं रेताम्वंसि जिन्वति॥

अथ बुधस्य—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसम्वं सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

अथ गुरोः—ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

अथ शुक्रस्य—ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं, विपानम्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

अथ शनेः—ॐ शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये संयोरभिस्रवन्तु नः।

अथ राहोः—ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदा वृ[illegible] सखा कया शचिष्ठया वृता॥

अथ केतोः—ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अ[illegible] समुषद्भिरजायथाः॥

इति नवग्रहमन्त्राः। तान्त्रिक मन्त्र तथा शान्ति[illegible] सामग्री आदि पृष्ठ ३८ मे देखू।

वास्तु (गृह) विचार

वास्तु (गृह) विचार—गृहारम्भ प्रवेश मुहूर्त [illegible] अछि। गृह-निर्माणसँ पहिने भूमिपरीक्षा, प्लव एवं [illegible] विचार, शल्यशोधन, काकिणी विचार, वंश [illegible] खात विचार, गृहकाष्ठ विचार, अहिबलचक्र विचार, [illegible] दीपादि परीक्षा, गृह-समीप वृक्षजलाशयादि विचार [illegible] पिण्ड आदि विचार परम आवश्यक। पुकारक नाम [illegible] गामक राशि २-५ ९-१०-११ म शुभ होइछ। [illegible] द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिस्तु [illegible] योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥ किन्तु कश्यप, वसिष्ठ, [illegible] आदिक विचारसँ ग्रामक काकिणीसँ पुरुषक [illegible] अधिक होयबाक चाही।

विशेष—गृहक नक्षत्र तथा गृहपतिक नक्षत्र [illegible] नहि होएबाक चाही।

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घ. मि.	योगाः या. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः कर्क-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	क. ल. घं मि.	ने. गते	अ. ति.
१	मं.	२२।२७	दि. २।१५	श्र. ४६।२७	रा. १। ३	प्री. ४०।१४	कौ. २२।२७	मकर	५।३३।१३	३३।३८	५।१६	६।४४	७।१२	६	२२
२	बु.	१८।१५	,, १२।३५	ध. ४७।३६	,, १२।१६	आ. ३४।३२	ग. १८।१५	म. १८।३२	६।३०।२५	३३।३५	५।१७	६।४३	७। ८	७	२३
३	बृ.	१४।१५	,, ११।००	श. ४६।४२	,, ११।५६	सौ. २६।३३	वि. १४।१५	कुम्भ	७।२७।३७	३३।३२	५।१८	६।४२	७। ४	८	२४
४	शु.	१२।४०	,, १०।२२	पू. ४७।००	,, १२। ६	शो. २५।२६	बा. १२।४०	कु. ३१।५६	८।२४।४६	३३।३०	५।१८	६।४२	७। ०	९	२५
५	श.	११।२६	,, ९।५२	उ. ४८।३१	,, १२।४२	अ. २२।१९	तै. ११।२६	मीन	९।२२। १	३३।२८	५।१८	६।४२	६।५६	१०	२६
६	र.	११।५३	,, १०। ४	रे. ५१।१७	,, १।५०	सु. २०।१०	व. ११।५३	मी. ५१।१७	१०।१९।१२	३३।२६	५।१९	६।४१	६।५२	११	२७
७	चं.	१५। ५	,, ११।२१	अ. ५५।१५	,, ३।२५	धृ. १९। ६	व. १५। ५	मेष	११।१६।२३	३३।२४	५।१९	६।४१	६।४८	१२	२८
८	मं.	१६। ८	,, ११।२७	भ. ६०।००	अहोरात्र	शू. १८।४१	कौ. १६। ८	मेष	१२।१३।३४	३३।२२	५।२०	६।४०	६।४४	१३	२९
९	बु.	१९।५७	,, १।१९	भ. ००।१८	प्रा. ५।२७	गं. १९।३०	ग. १९।५७	मे. १६।४६	१३।१०।३७	३३।१८	५।२०	६।४०	६।४०	१४	३०
१०	बृ.	२४।२८	,, ३। ८	कृ. ६।११	,, ७।४६	वृ. २०।४२	वि. २४।२८	वृष	१४। ७।४०	३३।१५	५।२१	६।३९	६।३६	१५	३१
११	शु.	२९।२६	,, ५। ८	रो. १२।३५	दि. १०।२४	ध्रु. २२।१४	बा. २९।२६	वृ. ४५।५१	१५। ४।४३	३३।१२	५।२२	६।३८	६।३२	१६	१
१२	श.	३४।३१	रा. ७।१०	मृ. १९। ७	,, १। १	व्या. २३।५४	कौ. १।५९	मिथुन	१६। १।४५	३३। ९	५।२२	६।३८	६।२८	१७	२
१३	र.	३९। ६	,, ९। १	आ. २५।२१	,, ३।३१	ह. २५।१३	ग. ६।४९	मिथुन	१६।५८।४७	३३। ६	५।२३	६।३७	६।२४	१८	३
१४	चं.	४२।५९	,, १०।३५	पु. ३०।५४	,, ५।४५	व. २६। ३	बि. ११। ३	मि. १४।३१	१७।५५।४९	३३। ३	५।२३	६।३७	६।२०	१९	४
३०	मं.	४५।४५	,, ११।४२	पु. ३५।३०	रा. ७।३६	सि. २६। ९	च. १४।२२	कर्क	१८।५२।५१	३३।००	५।२४	६।३६	६।१६	२०	५

श्रावणकृष्णपक्षः ।

संवत्, २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, ई० जुलाई-अगस्त १९८६ ई० ।
वर्षासु प्रबलौ वायुस्तस्मान्मिष्टादयस्त्रयः । रसाः सेव्या विशेषेण पवनस्योपशान्तये । मधुराम्ललवणाः ।—भावप्रकाशे ।

अशून्यशयनव्रतम् । पूर्वोदितो बुधः ५५।४६ । **अगुडसमयः** । **पञ्चकारम्भः*** भ. ४६।५५ उ. ।
*(भदवा) ४६।२७ उ. ।
भ. १४।१५ या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
विषशस्त्रादिनिर्माणदिनम् ।
द. ति. ११।२६ उ. । मार्गी बुधः १२।४५ । मौना पञ्चमी, श्रीमनसादेव्युत्थानम् ।
भ. ११।५३ उ. ४३।२९ या. । द. ति. ११।५३ या. । ग. ३९।१७ उ. ५४।१७ या. ।†
उत्तरदिशि यात्रा दिवा घं. ११ मि. ५१ उ. । †**पञ्चकान्तः** (भदवा) ५१।१७ उ. ।
मद्यनिर्माणदिनम् ।
भ. ५२।१२ उ. ।
भ. २४।२८ या. । पूर्वदिशि यात्रा दि. घं. ७ मि. ४६ उ. ।
कामदा **एकादशीव्रतं सर्वेषाम्** । पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा । (अगस्त ८) ।
लतापादपादिरोपणम् ।
भ. ३९।६ उ. मार्गी शनिः २२।३१ । **श्लेषायां रविः** २७।३३ स्त्रियोर्योगः । **प्रदोषत्रयोदशी व्रतम्** । पुन. ४ च. कर्क+ +बुधः १९।५१ ।
भ. ११।३ या. । **चतुर्दशी १४ व्रतम्** ।
श्रावणी अमा. ३० । पार्वणम् । वक्रगत्या कुम्भे गुरुः ५१।५२ मन्वादिः ।

श्रा. कृ. १ मं. मि. मा. ४६।४६		
र.	३। ५।३३।१३	५६।५६
मं.	८।१७।३२।४७	०।२७
बु.	३।२६।२४।१६	१४।२३
बृ.	११।००।५०।३६	१।४५
शु.	४।१९।१८। ६	४६।५५
श.	७। ७।५२।४५	२। ६
के.	६। ३।३४।११	३।११
रा.	०। ३।३४।११	३।११
ल.	२२।१८।३२	—

श्रा. कृ. ८ मं. मि. मा. ४६।४१		
र.	३।१२।१३।३४	५७। ६
मं.	८।१६।१६।४८	२।१३
बु.	३।२७। ८।२६	२७।१७
बृ.	११।००।३०।१७	२।२८
शु.	४।२६।५४।५७	५१।११
श.	७। ७।४३।१५	१। ८
के.	६। ३।११।५५	३।११
रा.	०। ३।११।५५	३।११
ल.	२२।१८।३३	—

श्रा. कृ. ३० मं. मि. मा. ४६।३०		
र.	३।१८।५२।५१	५७।१४
मं.	८।१५।३४।३५	६।१५
बु.	३। २।२९।२१	६१। ६
बृ.	१०।२९।५९।३४	४।२६
शु.	५। ४।२४।१९	५२।२७
श.	७। ७।३९।४७	०।११
के.	६। २।४९।३९	३।११
रा.	०। २।४९।३९	३।११
ल.	२२।१८।३४	—



आकाशक बात— (काल—पश्चिममे)

याम्यायन, सौम्यगोल, वर्षाऋतु, **अशुद्ध समय**, शु. मार्गी, शेष ग्रह वक्री, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. २६ के बु. मार्गी, ता. ३ के श. मार्गी ।

मौसम—पक्षभरि वर्षाक योग साधारण, तापमान अधिक, कृषक-लोकनिक समय प्रतिकूल ।

विशेष-कथन—"सिंहकर्कटयोर्मध्ये सर्वा नद्यो रजस्वलाः । तासु स्नानं न कुर्वीत वर्जयित्वा समुद्रगाः" ॥ "तपनस्य सुता गङ्गा गोमती च सरिद्वरा । रजसा च न दुष्यन्ति···॥ "उपाकर्मणि चोत्सर्गे प्रेतस्नाने तथैव च । चन्द्रसूर्यग्रहे चैव रजो दोषो न विद्यते ।" नदीतीरवासिनान्तु रजोयोगेऽपि सर्वदा नदीस्नाने दोषाभावमाह नियमः— "न दुष्येत्तीरवासिनाम्" । **मौना पञ्चमीमे** सर्पक माता मनसा देवी (बिसहरा) क पूजन कर्त्तव्य । मनसा देवीक पूजा कएलासँ सर्पक भय दूर होइछ । मड़रै आदि मूलक (माण्डर ब्राह्मण) किछु ब्राह्मण तथा शूद्रकें छोड़ि सभक हेतु इएह पंचमी होइत अछि । **नागपूजाक** हेतु वर्षाऋतु उपयुक्त समय, कारण जे एही ऋतुमे सर्पकें बाहर होयबाक समय होइछ । शीतकालमे तऽ सर्प बहारे नहि होइछ, प्रायः गर्मीमे बहराइछ आ वर्षामे तऽ विवर (बिएरि) मे जल प्रवेशक कारण विवश भऽ बाहर होबहि पड़ैत छैक । एहि हेतु प्रत्यक्ष नागपूजाक इएह समय उचित, एहि समयमे कतहु ने कतहु भोकर दर्शन भइए जाइछ । सर्पपूजन सदासँ प्रचलित अछि—'नमोऽस्तु सर्पेभ्यः०—एहि वैदिक मन्त्रसँ ज्ञात होइछ जे ईहो संस्कृति अछि ।

श्रावण शुक्लपक्षः । संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं. अगस्त १९८६ ई० । *भूमिष्ठं च नवोदकम् ।
श्रावणे वर्जयेच्छाकं दधि भाद्रपदे त्यजेत् । अजा गावो महिष्यश्च ब्राह्मणी च प्रसूतिका ।। दशरात्रेण शुध्यन्ति*

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः क. सि. राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	कर्क. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.	
१	बु.	४७।२८	रा. १२।२४	श्ले. ३६।००	रा. ६। १	व्य. २५।१६	कि. १८। ७	क. ३६।००	१६।५०।११	३२।५६	५।२५	६।३५	६।१२	२१	६	गं. २८।०० उ. ४३।०० या. ।
२	बृ.	४७।४८	,, १२।३२	म. ४९।१३	,, ६।५४	व. २३।३०	बा. १७।३८	सिंह	२०।४७।३१	३२।५३	५।२५	६।३५	६। ८	२२	७	चन्द्रदर्शनम् ।
३	शु.	४६।५०	,, १२।१०	पू. ४२। ६	,, १०।१८	प. २०।४०	तै. १७।१६	सि. ५७। ५	२१।४४।५१	३२।५०	५।२६	६।३४	६। ४	२३	८	गुरुवक्रशुद्धिः, **शुद्धारम्भश्च** ५८।२६ उ. । **मधुश्रावणीव्रतम्** । मणिपर्वतमेला ।
४	श.	४४।४०	,, ११।१६	उ. ४१।५४	,, १०।१३	शि. १६।४६	ब. १५।४५	कन्या	२२।४२।१०	३२।४७	५।२७	६।३३	६। ०	२४	९	भ. १५।४५ उ. ४४।४० या. ।
५	र.	४१।२८	,, १०। २	ह. ४०।३३	,, ६।४०	सि. १२। ५	ब. १३।११	कन्या	२३।३९।२९	३२।४४	५।२७	६।३३	५।५६	२५	१०	**नागपञ्चमी ५ ।** कुलिकनामनागराजः सितवर्णः । द.ति. ४१।२८ उ. । पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा रात्रौ घं. १०मि. २ या. ।
६	चं.	३७।१९	,, ८।२४	चि. ३८।२४	,, ८।५०	सा. ६।३२	कौ. ६।२४	क. ६।२९	२४।३६।४८	३२।४१	५।२८	६।३२	५।५२	२६	११	द. ति. ३७।१९ या. । ††मि. १५ उ. । वाजसनेयिनामृषितर्पणम् । **पञ्चकारम्भः** । (भदवा) ६।३ उ. ।
७	मं.	३२।२१	सं. ६।२४	स्वा. ३५।२२	,, ७।३७	शु. ००।१६	ग. ४।५०	तुला	२५।३४। ७	३२।३८	५।२८	६।३२	५।४८	२७	१२	शुक्लयोगक्षयः दं. ५३।१२ । भ. ३२।२१ उ. ५९।३५ या. । मार्गी कुजः १।१९। दक्षिणपश्चिमयोर्यात्रा ।
८	बु.	२६।४६	दि. ४।१३	वि. ३१।४७	सं. ६।१२	ब्र. १६।११	व. २६।४६	तु. १७।४१	२६।३१।३६	३२।३५	५।२९	६।३१	५।४४	२८	१३	लतापादपारोपणदिनम् ।
९	बृ.	२०।५१	,, १।५०	अ. ५७।४७	दि. ४।३७	ऐं. ३८।३७	कौ. २०।५१	वृश्चिक	२७।२९।११	३२।३२	५।३०	६।३०	५।४०	२९	१४	राजमार्गनिर्माणदिनम् । *विष्णुपदीसंक्रान्तेः पु. दं. १५।४५ उ. ३१।४५ या. ।मु. ४५ फलं समर्घम् †
१०	शु.	१४।४२	,, ११।२३	ज्ये. २३।३३	,, २।५५	वै. ३०।५७	ग. १४।४२	वृ. २३।३३	२८।२६।४३	३२।२९	५।३०	६।३०	५।३६	३०	१५	भ. ४१।३७ उ. । गं. १७।३३ उ. ३२।३३ या. । † **अगस्त्यारम्भः** । कृतयुगान्तः ।
११	श.	८।३३	,, ८।५६	मू. १९।२४	,, १।१७	वि. २३।२१	वि. ८।३३	धनु	२९।२४।१४	३२।२६	५।३१	६।२९	५।३२	३१	१६	भ. ८।३३ या. । **पुत्रदा एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । मासान्तः ।**
१२	र.	२।३१	,, ६।३१	पू. १५।२६	,, १२। ३	प्री. १५।५३	बा. २।३१	ध. २९।३६	०।२१।४५	३२।२३	५।३१	६।२९	सिं. ७।५०	१	१७	त्रयोदशीक्षयः दं. ५४।२६ । श्री-श्रीधर १२ दूर्वादलेन पारणा । प्रदोष १३ व्रतम् । **मघायां सिंहे रविः २३।४६***
१४	चं.	५१।५३	रा. २।१७	उ. ११।५८	,, १०।१९	आ. ८।४७	ग. २४।२५	मकर	१।१९।१६	३२।२०	५।३२	६।२८	७।४६	२	१८	भ. ५१।५३ उ. । **चतुर्दशी १४ व्रतम् । मासादिः ।**
१५	मं.	४६।३८	,, १२।११	श्र. ६। ३	,, ६। ६	सौ. २।१४	वि. १६।१६	म. ३८। ३	२।१६।४७	३२।१८	५।३२	६।२८	७।४२	३	१९	शोभनयोगक्षयः ५४।२ । भ. १६।१६ या. । **श्रावणी-पूर्णिमा १५** । क्षेत्रस्नानम् **रक्षिकाबन्धनम्** । दिवा घं. ११†

श्रा. शु. ७ मं. मि. मा. ४६।४६		
र.	३।२५।३४। ७	५७।२५
मं.	८।१५।३६।३४	१०।५३
बु.	३।११। ३।३८	८२।३७
बृ.	१०।२९।२१। ८	५।२९
शु.	५।११।३६।११	५४।५६
श.	७। ७।४०।१४	०।४७
के.	६। २।२७।२४	३।११
रा.	०। २।२७।२४	३।११
ल.	२२।१८	३।११

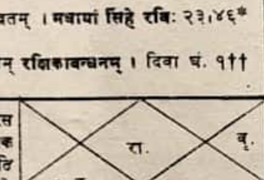
श्रा. शु. १५ मं. मि.मा. ४६।३८		
र.	४। २।१६।४७	५७।३८
मं.	८।१६।१८।१९	१४।५४
बु.	३।२१।२९।५०	६४। १
बृ.	१०।२८।३४।४५	६।१३
शु.	५।१८।३८। १	८। ६
श.	७। ७।४७।४९	१।४६
के.	६। २।५ । ६	३।११
रा.	०। २।५ । ६	३।११
ल.	२२।१८।३६	—

आकाशक बात— (**काल—पश्चिमोत्तर मे**)

याम्यायन—सौम्य गोल, वर्षा ऋतु, अशुद्ध-शुद्ध समय, मं., वृ., वक्री. शेष ग्रह मार्गी, ता. १२ के मं. मार्गी शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. १७ के अगस्त्यारम्भ ।

मौसम—पक्षक पूर्वार्धमे वर्षाक योग स.धारण, उत्तरार्धमे अनुकूल. कृषकवर्गमे उल्लासक समय ।

विशेष कथन—मधुश्रावणीमे सौभाग्यवृद्धिक हेतु सधवा स्त्री विशेषतः नव विवाहिता स्त्रीलोकनिसँ श्रीगौरीक पूजन कर्त्तव्य । नागपंचमी दिन तिक्त तथा अम्लरस खएबाक विधान सेहो अछि । श्रा. शु. सप्तमीमे मेघाडम्बर रहए तऽ आगू नीक वर्षा होइछ, शुक्लपक्षक पंचमीमे दक्षिण वा पश्चिम बसात बहए तऽ दुर्भिक्ष होइछ । **रक्षाबन्धनक मन्त्र**—"येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रति बध्नामि रक्षे, माचल मा चल" । "भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा । श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ।" **देशक मुख्य चारि पावनि**—रक्षाबन्धन (राखी), विजयादशमी, दीपावली, होलिकोत्सव, क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रसँ सम्बन्धित अछि, तथापि सभ पावनिमे सभक समाने समादर होइछ, कारण जे संघटित समाजक कोनो अंगक कार्य समग्र समाजहिक कार्य मानल जाइछ । कहल जाइछ जे बृहस्पति द्वारा श्रावणीमे एहि रक्षा-सूत्र धारण कयलाक बादे इन्द्र, महाबली दानवराजकेँ बध कैलन्हि । रक्षाबन्धनक प्रभावसँ आयु-आरोग्यक वृद्धि होइछ । श्रावणी (पूर्णिमा) और श्रवणा (नक्षत्र) जाहि श्रवणाक पति विष्णु मानल जाइत छथि जे सर्वजगतक पालक छथि, हुनक अतिरिक्त आयु-आरोग्य देनिहार के भएसकैछ? श्रावणी-श्रवणाक योग श्रावणेटामे होइछ ।



भाद्रकृष्णपक्षः । **संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, ई० अगस्त-सितम्बर-१९८६ ई० ।** *पीत्वा सर्पदष्टः सुखी भवेत् ।
"सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः ।" पन्नगान् ये न हिंसन्ति तान्न हिंसन्ति पन्नगाः ।"—रम्भास्तम्भरसं*

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः सि.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सि. स. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.	भाद्रकृष्णपक्षः
१	बु.	४४।१६	रा. ११।१५	ध. ७। ३	दि. ८।२२	अ. ५१। ३	बा. १५।२७	कुम्भ	३।१४।३०	३२।१४	५।३३	६।२७	७।३८	४	२०	नृपदर्शनदिनम् ।
२	बृ.	४१।५८	,, १०।२१	श. ५।५२	,, ७।५५	सु. ४६।३९	तै. १३। ७	कु. ५०।४९	४।१२।१३	३२।१०	५।३४	६।२६	७।३४	५	२१	गुल्मलतौषधीनां रोपणम् ।
३	शु.	४०।५४	,, ९।५७	पू. ५।५०	,, ७।५५	धृ. ४३।१७	व. ११।२६	मीन	५। ९.५६	३२। ६	५।३५	६।२५	७।३०	६	२२	भ. ११।२६ उ. ४०।५४ या. ।
४	श.	४१। ५	,, १०। १	उ. ७।००	,, ८।२३	शू. ४०।५३	व. ११।००	मीन	६। ७।३९	३२। ३	५।३५	६।२५	७।२६	७	२३	श्रीगणेश ४ व्रतम् । **बहुला** ४ । गं. ५७।३२ उ. । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा दिवा घं. ८ मि. २३ उ. ।
५	र.	४२।४०	,, १०।४०	रे. ९।३२	,, ९।१५	गं. ३९।३३	कौ. ११।५३	मी. ९।३२	७। ५।२२	३२। ०	५।३६	६।२४	७।२२	८	२४	बेला ५ । **पञ्चकान्तः** (मदवा) ९।३२ उ. । गं. ३।३२ या. । उत्तरदिशि यात्रा ।
६	च.	४५।१६	,, ११।४३	अ. १३। ९	,, १०।५३	वृ. ३९। २	ग. १३।५८	मेष	८। ३। ५	३१।५७	५।३७	६।२३	७।१८	९	२५	भ. ४५।१६ उ. । वरुण ६ । पूर्वास्तो बुधः ४३।५७ पूर्वाम्बिनायात्राऽश्विन्याम् ।
७	मं.	४९। ६	,, ११।१५	भ. १७।६६	,, १२।४७	ध्रु. ३९।२५	वि. १७।११	मे. ३४।२१	९।००।४७	३१।५४	५।३७	६।२३	७।१४	१०	२६	भ. १७।११ या. ।
८	बु.	५३।३८	,, ३। ५	कृ. २३।३७	,, ३। ५	व्या. ४०।२६	बा. २१।२२	वृष	९।५८।४३	३१।५०	५।३८	६।२२	७।१०	११	२७	**श्रीकृष्णाष्टमीव्रतम् श्रीकृष्णजयन्तीव्रतञ्च** । मोहरात्रिः । मन्वादिः ।
९	बृ.	५८।३९	,, ५। ७	रो. २९।५७	,, ५।३८	ह. ४१।२३	तै. २६। ९	वृष	१०।५६।३९	३१।४६	५।३९	६।२१	७। ६	१२	२८	द. ति. ५८।३९ उ. ।
१०	शु.	६०।००	अहोरात्र	मृ. ३६।३८	रा. ८।१९	व. ४३।२६	व. ३०।५३	वृ. ३।१८	११।५४।३५	३१।४२	५।४०	६।२०	७। २	१३	२९	भ. ३०।५३ उ. । द. ति. ६०।०० या. ।
१०	श.	३। ६	प्रा. ६।५४	आ. ४२।४७	,, १०।४७	सि. ४४।४९	वि ३। ६	मिथुन	१२।५२।३१	३१।३८	५।४०	६।२०	६।५८	१४	३०	भ. ३।६ या. । द. ति. ३।६ या. ।
११	र.	८।२८	,, ९। ४	पु. ४८।२९	,, १। ५	व्य. ४५।४२	बा. ८।२७	मि. ३२। ४	१३।५०।२७	३१।३४	५।४१	६।१९	६।५४	१५	३१	**पूर्वफल्गुन्यां रविः** १७।५७, स्त्रियोर्योगः । **अजा एकादशीव्रतम् सर्वेषाम्** ।
१२	च.	१२।२४	,, १०।४०	पु. ५३।२१	, ३। २	व. ४५।५५	तै. १२।२४	कर्क	१४।४८।२२	३१।३१	५।४२	६।१८	६।५०	१६	१	**प्रदोष १३ व्रतम्** । चित्रा ३ च. तुलायां शुक्रः २१।२ ।
१३	मं.	१५।१९	,, ११।५०	श्ले. ५७। ६	,, ४।३२	प. ४५।११	व. १५।१९	क. ५७। ६	१५।४६।१७	३१।२८	५।४२	६।१८	६।४६	१७	२	भ. १५।१९ उ. ४६।१४ या. । **चतुर्दशीव्रतम्** । द्वापरयुगादिः ।
१४	बु.	१७। ९	,, १२।३५	म. ५९।३८	,, ५।३५	शि. ४३।३४	श. १७। ९	सिंह	१६।४४।२७	३१।२४	५।४३	६।१७	६।४२	१८	३	मघभर १४ । श्रीभैरव पूजा ।
३०	बृ.	१७। ७	,, १२।३५	पू. ६०।००	अहोरात्र	सि. ४०।५५	ना. १७। ७	सिंह	१६।४२।३७	३१।२०	५।४४	६।१६	६।३८	१९	४	भाद्री-अमा-३० । पार्वणम् **कुशोत्पाटनम्, कुशी-अमावस्या** ।

भा. कृ. ७ मं. मि. मा. ४५।५७		
र.	४। ९। ०।४७	५७।५२
मं.	८।१७।३६।१९	१८।५५
बु.	४। ३। ८।५०	१०२।३८
बृ.	१०।२७।४२।३२	७। ७
शु.	५।२१।२१।३८	५५।३७
श.	७। ७।५९।१०	१।४६
के.	६। १।४२।५४	३।११
रा.	०। १।४२।५४	३।११
अ.	२२।१८।३७	—

भा. कृ. १३ मं. मि. मा. ४५।४४		
र.	४।१५।४६।१७	५८। ४
मं.	८।१९।२९।१३	२१।५१
बु.	४। ५।२६।२७	१०८। ७
बृ.	१०।२६।४५। २	७। ७
शु.	६। १।३५।२८	५५।४९
श.	७। ८।१६।१९	२।४३
के.	६। १।२०।३९	३।११
रा.	०। १।२०।३९	३।११
अ.	२२।१८।३८	—

आकाशक बात— (काल—उत्तरमे)

याम्यायन, सौम्य गोल, वर्षा ऋतु, अशुद्ध समय, बृ. वक्री, शेष ग्रह मार्गी शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित । ता. २५ के बु. पूर्वास्त ।

मौसम—पक्षधरि वर्षाक योग नीक । कृषकवर्गमे खुशियाली, समय सुखद ।

विशेष कथन—बहुला गणेश-चतुर्थी-व्रत कएलासँ अनेक शुभ मनोरथ सिद्ध होइछ । **श्रीकृष्णाष्टमी व्रत** प्रत्येक नर-नारीकेँ कर्त्तव्य थिक—"नरो वा यदि वा नारी कृष्णजन्माष्टमीव्रतम् । न करोति तदा घोरा व्याली भवति कानने" (भविष्य पुराण) ।। **कुशीअमावस्यामे** उपाड़ल कुश वर्ष पर्यन्त शुद्ध रहैछ । चिता-स्थान, रास्ता, यज्ञभूमि, शय्या, आसन तथा पिण्ड एहिठाम सभक कुश अशुद्ध मानल गेल अछि । **कुशोत्पाटन मन्त्र**—"कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः । कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि !" ।। कुशप्रतिनिधीनाह स्नानसूत्रभाष्ये—कुशाः काशमया दूर्वा उशीराश्च सकुन्दराः ।। इति कुशाः कुशकार्यंकरिणः । कुश स्वयं उपाड़बाक चाही—अन्य द्वारा शूद्र द्वारा च कुशग्रहणमनुचितमुक्तं हारीतेन ।।—"समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत् । शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः" ।। **काल विचार**—मार्गे पौषे तथा माघे पूर्वस्यां राहुसंस्थितिः । फाल्गुने च तथा चैत्रे वैशाखे दक्षिणे भवेत् ।। ज्येष्ठे मासि तथाषाढे श्रावणेऽपि च पश्चिमे । भाद्रे तथाश्विने मासे कार्त्तिके चोत्तरे भवेत् ।। दक्षिणे सम्मुखे राहौ स्त्रीयात्रां परिवर्जयेत् । गृहारम्भप्रवेशौ च सम्मुखे चैव वर्जयेत् ।। (ज्यो. च. ८७ श्लो.) एहि श्लोकक सारांशमे इहो लिखल गेल अछि जे पितृगृह यात्रामे कालक विचार नहि हो ।



भाद्रशुक्लपक्षः ।

संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३६४ साल, अं० सितम्बर १९८६ ई० । *गृह्णन्ति पूजा भवति निष्फला ।" "समित्पुष्पकुशादीनि वहतो नाभिवादयेत् ।" "स्नानं कृत्वा तु यत्किञ्चित् पुष्पं चिन्वन्ति वै द्विजाः । देवतास्तन्न*

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः सि. क. राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सि. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.	
१	शु.	१६।४६	दि. १२।२७	पू. ००।४६	प्रा. ६। ५	सा. ३७।१६	व. १६।४६	सि. १५।४६	१८।४०।४७	३१।१६	५।४५	६।१५	६।३४	२०	५	चन्द्रदर्शनम् ।
२	श.	१४।४४	,, ११।४०	उ. ००।५०	,, ६। ६	शु. ३२।३६	कौ. १४।४४	कन्या	१९।३८।५७	३१।१२	५।४६	६।१४	६।३०	२१	६	हस्तक्षयः घं. ५८।५३ ।
३	र.	११।३७	,, १०।२५	चि. ५७।४३	रा. ४।५१	शु. २७।१३	ग. ११।३७	क. २८।४३	२०।३७। ७	३१। ८	५।४६	६।१४	६।२६	२२	७	भ. ३९।३५ उ. । **हरितालिका** (तीज) **व्रतम्** । विनायक ४ (**चौठचन्द्र पूजा**,), चन्द्रादर्शनम् । छन्दोगानामृषितर्पणम् ।
४	चं.	७।३४	,, ८।५०	स्वा. ५४।५२	,, ३।४४	ब्र. २९। ७	वि. ७।३४	तुला	२१।३५।१६	३१। ४	५।४७	६।१३	६।२२	२३	८	भ. ७।३४ या. । ऋषिपंचमीव्रतम् ।
५	मं.	२।४३	प्रा. ६।५३	वि. ५१।२१	,, २।२०	ऐ. १४।२१	बा. २।४३	तु. ४२।२२	२२।३३।२५	३१। ०	५।४८	६।१२	६।१८	२४	९	षष्ठीक्षयः दं. ५४।३० । पर्वट ६ ।
७	बु.	५१।३०	रा. २।२५	अ. ४७।२५	,, १२।४७	वै. ७। ७	ग. २४।२२	वृश्चिक	२३।३१।५०	३०।५६	५।४९	६।११	६।१४	२५	१०	विष्कुम्भयोगक्षयः द. ५२।२६ । भ. ५१।३० उ. । उ.फ. २ च. कन्यायां बुधः ४९।२६ ।
८	बृ.	४५।१५	,, ११।५६	ज्ये. ४३।१५	,, ११। ८	प्री. ५१।५२	वि. १८।२३	वृ. ४३।१५	२४।३०।१५	३०।५२	५।५०	६।१०	६।१०	२६	११	भ. १८।२३ या. गोपाष्टमी ८ । महालक्ष्मीकथारम्भः । **राधिकाष्टमी श्रीराधिकाजयन्ती** । गं. ३७।१५ उ. ५२।१५ या. ।
९	शु.	३९।१०	,, ९।३१	मू. ३९। ३	,, ९।२७	आ. ४४। ९	बा. १२।१३	धनु	२५।२८।४०	३०।४८	५।५०	६।१०	६। ६	२७	१२	पूर्वोत्तरयोर्यात्रा ।
१०	श.	३३।१४	,, ७। ९	पू. ३५। १	,, ७।५१	सौ. ३६।३७	तै. ६।१२	ध. ४९। ६	२६।२७। ५	३०।४४	५।५१	६। ९	६। २	२८	१३	**उत्तरफल्गुन्यां** रविः ५९।३०, स्त्रीपुम्भयोर्योगः । अच्युत-१० ।
११	र.	२७।४०	दि. ४।५६	उ. ३१।२३	सं. ६।२५	शो. २९।१७	व. ०।२७	मकर	२७।२५।३०	३०।४०	५।५२	६। ८	५।५८	२९	१४	भ. ००।२७ उ. २७।४० या. **श्रीहरेः पार्श्वपरिवर्तनम्–कर्मा-धर्मा एकादशीव्रतम्** सर्वेषाम् ।
१२	चं.	२२।३९	,, २।५७	श्र. २८।१८	दि. ५।१२	अ. २२।२७	बा. २२।३९	म. ५७।११	२८।२३।५५	३०।३७	५।५३	६। ७	५।५४	३०	१५	**श्रीहृषीकेश** १२ । कुष्माण्डेन पारणा । इन्द्रोत्थानम् । **प्रदोष १३ व्रतम्** । **पञ्चकारम्भः** (भदवा) २८।१८ उ. ।
१३	मं.	१८।२६	,, १।१५	ध. २६। ५	,, ४।१९	सु. १६।१७	तै. १८।२६	कुम्भ	२९।२२।१९	३०।३४	५।५३	६। ७	५।५१	३१	१६	**चतुर्दशी-१४ व्रतम्** । **मासान्तः** । * मु. १५ फलं महर्घम् । गुद्धारम्भः २३।५५ उ. । **श्रीअनन्त-१४ व्रतम्** ।
१४	बु.	१५। ४	,, ११।१६	श. २४।३९	,, ३।४६	धृ. १०।४८	व. १५। ४	कुम्भ	००।२०।५९	३०।३०	५।५४	६। ६	क. ८। ९	१	१७	भ० १५।४ उ. ४४।५६ या. । उ. फ. २ च. **कन्यायां रविः** २३।५५ । षडशीतिसंक्रान्तेः पुण्यकालः दं. २३।५५ उ. ।*
१५	बृ.	१२।४७	,, ११। २	पू. २४।१८	,, ३।३८	शू. ६। ८	ब. १२।४७	कु. ३।३३	१।१९।३९	३०।२६	५।५५	६। ५	८। ५	२	१८	**भाद्री-पूर्णिमा-१५** । क्षेत्रस्नानम् । **अगस्त्यार्घदानम्** । सत्ययुगान्तः । **महालयारम्भश्च** १२।४७ उ. । **मासादिः** ।

भा. शु. ५ मं. मि. मा. ४५।३०

र.	४।२२।३३।२५	५८।१९
मं.	८।२१।५१।२५	२५।३५
बु.	४।२८। १।२९	१११।१४
बृ.	१०।२५।५०।५६	७। ७
शु.	६। ७।१७।१५	४८।२
श.	७। ८।३७।३४	३।४१
के.	६। ०।५८।२४	३।११
रा.	०। ०।५८।२४	३।११
म.	२२।१८।३९	—

भा. शु. १३ मं. मि. मा. ४५।१७

र.	४।२९।२२।१९	५८।३२
मं.	८।२४।३२।३५	२८।२६
बु.	५।१०।३३।५४	१०७।२४
बृ.	९।२४।५१।४३	७। ७
शु.	६।१२।२०।३४	३९।२४
श.	७। ९। ३।५८	४।३८
के.	६। ०।३६। ९	३।११
रा.	०। ०।३६। ९	३।११
म.	२२।१८।४०	—

आकाशक बात— (काल—उत्तरमे)

याम्यायन, सौम्यगोल, वर्षा- शरद् ऋतु, अशुद्ध-शुद्ध समय, बृ. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षधरि वर्षाक योग नीक, झंझावात, समय सुखद ।

विशेष कथन—महर्षि नारद कृष्णकें कहलथिन्ह जे अहाँ भाद्रशुक्ल चतुर्थीचन्द्रकें देखने छी, तें अहाँकें व्यर्थ कलंक लागल । हुनक कथनानुसार भाद्र शुक्ल गणेश चतुर्थीमे गणेशजीक व्रत-पूजनसँ मिथ्या अपवादक शुद्धि होइछ । "सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः । सुकुमारक, मारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः" एहि मन्त्रसँ चन्द्रमा के दर्शन फल-फूल पक्वान्नपूरित वंश पात्र (चङ्गेरा) लय करबाक विधान अछि, 'दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् । नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् । एहि मन्त्रसँ दधिपात्र समर्पण कएलाक बाद–'रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवन् प्रदेहि मे । पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहि मे'—प्रार्थना करी । **अगस्ति-तर्पण**—कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम । उदयं ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयम्प्रतिगृह्यताम् ।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।।उ०।। कासपुष्पप्रतीकास-वह्निमारुतसम्भव ।।उ०।। आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः । समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ।।



आश्विनकृष्णपक्षः ।

संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० सितम्बर-अक्टूबर १९८६ ई० ।

"सूर्ये कन्यांगते श्राद्धं यो न कुर्याद् गृहाश्रमी । धनं पुत्राः कुतस्तस्य पितृनिःश्वासपीडनात् ॥"

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः क..-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	क. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.	
१	शु.	११।४३	दि. १०।३७	उ. २५।१०	दि. ४।००	गं. २।२६	कौ. ११।४३	मीन	२।१८।१९	३०।२२	५।५६	६। ४	८। १	३	१९	वृद्धियोगक्षयः दं. ५७।१८ । **पितृपक्षारम्भः** (पार्वणारम्भश्च) ।
२	श.	११।५५	,, १०।४२	रे. २७।१६	,, ४।५०	ध्रु. ५८। २	ग. ११।५५	मी. २७।१६	३।१६।५६	३०।१८	५।५६	६। ४	७।५७	४	२०	भ. ४२।४२ उ. । गं. १५।१६ उ. ३०।१६ या. । **पञ्चकान्तः** (भदवा) २७।१६ उ. ।
३	र.	१३।३०	,, १०।२१	अ. ३०।४३	सं.. ६।१४	व्या. ५७।१५	वि. १३।३०	मेष.	४।१५।३६	३०।१४	५।५७	६। ३	७।५४	५	२१	भ. १३।३० या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
४	चं.	१६। ८	,, १२।२५	भ. ३५।१३	रा. ८। ३	ह. ५७।२२	वा. १६। ८	मे. ५१।४०	५।१४।१६	३०।१०	५।५८	६। २	७।५०	६	२२	मद्यनिर्माणदिनम् ।
५	मं.	२०। १	,, १।५६	कृ. ४०।४३	,, १०।१६	व. ५८।१२	तै. २०। १	वृष.	६।१२।५८	३०। ६	५।५९	६। १	७।४६	७	२३	वसुन्धरा ५ ।
६	बु.	२४।३६	,, ३।५१	रो. ४६।५१	,, १२।४३	सि. ५६।२६	व. २४।३६	वृष.	७।११।५४	३०। ३	५।५९	६। १	७।४२	८	२४	भ. २४।३६ उ. ५७।११ या. ।
७	बृ.	२९।४४	सं. ५।५४	मृ. ५३।२३	,, ३।२१	व्य. ६०।००	व. २९।४४	वृ. २०। ७	८।१०।५०	३०। ०	६।००	६।००	७।३८	९	२५	महालक्ष्मीव्रतम् । द. ति. २९।४४ उ. ।
८	शु.	३४।५७	रा. ८।००	आ. ५९।४८	,, ५।५६	व्य. ०।५६	बा. २।२१	मिथुन	९। ९।४६	२९।५७	६। १	५।५९	७।३४	१०	२६	द. ति. ३४।५७ या. । शाकाष्टका ८ । **श्रीजीमूतवाहनव्रतम्** (जितिया) । पश्चिमोदितो बुधः ३७।३ ।
९	श.	३९।४२	,, ९।५४	पु. ६०।००	अहोरात्र	व. २।२२	तै. ७।२०	मि. ४९।१४	१०। ८।४२	२९।५४	६। १	५।५९	७।३०	११	२७	**हस्ते रविः** ३६।३ । स्त्रियोर्योगः । अन्वष्टका ९ नवमी । मातृकृत्यम् । श्रीजीमूतवाहनव्रतस्य पारणा । चि. ३*
१०	र.	४३।४९	,, ११।३४	पु. ५।४२	दि. ८।१९	प. ३।१९	ब. ११।४६	कर्क	११। ७।३७	२९।५२	६। २	५।५८	७।२७	१२	२८	भ. ११।४६ उ. ४३।४९ या. । उ. भा. २ च. मकरे कुजः २७।५४ । *च. तुलायां बुध. ५७।४२ ।
११	चं.	४६।४७	,, १२।४५	पु. १०।४९	,, १०।२२	शि. ३। ४	प. १५।१८	कर्क	१२। ६।३२	२९।५०	६। २	५।५८	७।२४	१३	२९	**इन्दिराएकादशीव्रतं सर्वेषाम्** ।
१२	मं.	४८।१५	,, १।२०	श्ले. १४।५१	,, ११।५८	सि. ३। ७	कौ. १७।४६	क. १४।५१	१३। ५।२७	२९।४८	६। २	५।५८	७।२०	१४	३०	गं. ३।५१ उ. १८।५१ या. ।
१३	बु.	४९।१९	,, १।४८	म. १७।४१	,, १। ८	सा. १।४३	ग. १८। २	सिंह.	१४। ४।३६	२९।४२	६। ४	५।५६	७।१६	१५	१	शुभयोगक्षयः दं. ५७।३४ । भ. ४९।१९ उ. । **प्रदोष १३ व्रतम्** । गजच्छायायोगः (अक्तूबर–१०) ।
१४	बृ.	४८।३३	,, १।३०	पू. १९।१५	,, १।४७	शु. ५५।४९	वि. १८।५६	सि. ३४। २	१५। ३।५१	२९।३६	६। ५	५।५५	७।१२	१६	२	भ. १८।५६ या. । **चतुर्दशीव्रतम्** शस्त्रादिहतानामद्यैव श्राद्धम् ।
३०	शु.	४६।३७	,, १२।४५	उ. १८।३३	,, १।३१	ब्र. ५१।२२	च. १७।३२	कन्या	१६। ३। ३	२९।३०	६। ६	५।५४	७। ९	१७	३	आश्विनीअमा. ३० । **पार्वणान्तः** । महालयान्तश्च ।

आ. कृ. ५ मं. मि. आ. ४५।३

ग्रह		
र.	५। ६।१२।५८	५८।५०
मं.	८।२७।४५।२५	३०।१५
बु.	५।२२।४५।१३	१०७।२४
बृ.	१०।२३।५६।१६	७। ७
शु.	६।१६।५४।१४	३३। ६
श.	७। ९।३३।२१	४।३८
के.	६। ०।१३।५४	३।११
रा.	०। ०।१३।५४	३।११
अ.	२२।१८।४१	—

आ. कृ. १२ मं. मि. आ. ४४।५१

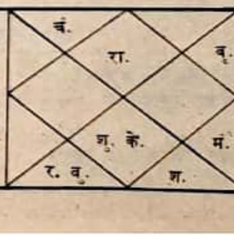
ग्रह		
र.	५।१३। ५।२७	५९। २
मं.	९। ११३।४८	३२।२०
बु.	६। ४।२२।००	९४। ३
बृ.	१०।२३। २।३५	६।१३
शु.	६।१९।११। ६	१९।१९
श.	७।१०। ९।३९	४।३८
के.	५।२९।५१।३९	३।११
रा.	११।२९।५१।३९	३।११
अ.	२२।१८।४२	—

आकाशक वात— (काल—उत्तरमे)

याम्यायन—सौम्यगोल, शरदृतु, शुद्ध समय, बृ. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. २६ के बु. पश्चिमोदित ।

मौसम—एहि पक्षमे वर्षाक योग नीक, साधारण वात, समय सुहावन ।

विशेष कथन—जितियामे पारणक दिन पारणसँ पूर्व असमर्थावस्थामे दूध-शरबत आदि पेय पदार्थ ग्रहण कयल जासकैछ, भविष्योत्तरमे एहन प्रमाण भेटैछ । "शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः । तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया ।"—ई व्रत पुत्रवती स्त्रीगणसँ अवश्य कर्त्तव्य । **कथाक सारांश**—नर्मदा नदीक पश्चिम बाहूटाल नामक मरुस्थलमे षुषुपाकड़िक थोधड़िमे गिदरनी आ डारिपर एक चिल्होड़ि रहैत छलि । स्त्रीगण द्वारा जितिया व्रत-पूजादि करैत देखि दुनू ओहो व्रत कैलक । गिदरनी चुप्पे मुर्दाक मांस खा लेलक आ चिल्होड़ि नियमानुसार नवमीमे पारण कैलक । दोसर जन्ममे गिदरनी मलयकेतुक रानी (कर्पूरावती) भेलि आ चिल्होड़ि बुद्धिसेनक रानी शीला भेलि । जितियाव्रतक प्रभावसँ शीलाकेँ क्रमशः सात पुत्र भेलैन्ह जे जीवित रहलन्हि आ कर्पूराकेँ सेहो सात टा पुत्र भेलैन्हि मुदा व्रत भंगक दुष्प्रभावसँ सातो पुत्र नष्ट भऽगेलैन्ह । ईर्ष्यासँ कर्पूरा पारणक दिन शीलाक सातो पुत्रक मूड़ी कटवा कऽ बाँसक डालामे वस्त्रसँ झाँपि शीलाक सातो पुतोहुकेँ पारणक हेतु पठौलथिन्ह, मुदा जीमूतवाहन, अपन व्रतक प्रभावसँ सातो पुत्रकेँ जीवित कए देल ।



आश्विनशुक्लपक्षः ।

संवत् २०४३, शाकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० अक्तूबर १९८६ ई०। *मूलेनावाहयेद्देवीं श्रवणेन विसर्जयेत् ।
इक्षवः शालयो मुद्गाः सरोऽम्भः क्वचित पयः । शरद्यन्तानि पथ्यानि प्रदोषे चेन्दुरश्मयः ॥"—भावप्रकाश ।*

ति.	वा.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न.	दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः क. तु. राशौ	दि. मा. द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	क. ल. घं. मि.	ने. गते	घ. ता.	आश्विनशुक्लपक्षः
१	श.	४३।३७	रा. ११।३४	ह.	१८।४४	दि. ११।३७	ऐ. ४६। ६	कि. १५। ७	क. ४७।४८	१७। २।१५	२९।२५	६। ७	५।५३	७। ६	१८	४	शारदीयनवरात्रारम्भः । दुर्गोत्सवः । कलशस्थापनम् । तुरगवाहनम् । फलमशुभम् ।
२	र.	३६।४०	„ १०।००	चि.	१६।५३	„ १२।५३	वै. ४०। ७	वा. ११।३६	तुला	१८। १।२६	२९।२०	६। ८	५।५२	७। २	१९	५	चन्द्रदर्शनम् । रेमन्तपूजा । †कृत्यम् द. ति. ५।४७ या. ।
३	चं.	३४।५२	„ ८। ६	स्वा.	१४।१३	„ ११।५०	वि. ३३।२८	तै. ७।१६	तु. ५६।४३	१९।००।३६	२९।१५	६। ९	५।५१	६।५८	२०	६	दक्षिणपश्चिमयोर्यात्रा मध्यमा । A पूजनम् । दिवाऽभोजनम् । चि. ३ च. तुलायां रविः ४६।४३, मु. ३० फलं साम्यम् । B
४	मं.	२६।२६	सं. ५।५८	वि.	१०।५३	„ १०।३१	प्री. २६।१६	व. २।११	वृश्चिक	१९।५९।४८	२९।१०	६।१०	५।५०	६।५४	२१	७	भ. २।११ उ. २६।२६ या. । B चन्द्रग्रहणं स्पर्शः रात्रौ घं. १०, मि. ५८ मोक्षः घं. २ मि. ३५ उ. । C
५	बु.	२३।४२	दि. ३।४०	अ.	७। २	„ ९।००	आ. १८।४४	बा. २३।४२	वृश्चिक	२०।५९।१६	२९। ६	६।११	५।४९	६।५०	२२	८	वक्री भृगुः ३१।३६ । गं. ५६।५३ उ. । C पञ्चकान्तः (भद्रा) ४५।२१ उ. ।
६	बृ.	१७।४०	„ १।१६	ज्ये.	२।५३	„ ७।२१	सौ. ११। १	तै. १७।४०	वृ. २।५३	२१।५८।४५	२९। २	६।१२	५।४८	६।४७	२३	९	मूलक्षयः द. ५५।४६ । गजपूजा । बिल्वाभिमन्त्रणम् । गं. ११।५३ या. ।
७	शु.	११।३७	„ १०।५१	पू.	५४।३४	रा. ४। २	शो. ३। ८	व. ११।३७	धनु	२२।५८।११	२८।५८	६।१२	५।४८	६।४४	२४	१०	प्रतिगण्डक्षयः द. ५२।१५ । भ. ११।३७ उ. ३८।४२ या. । द. ति. ११।३७ उ. । पत्रिका प्रवेशः । निशापूजा ।*
८	श.	५।४७	„ ८।३२	उ.	५०।५०	„ २।३३	सु. ४७।५५	व. ५।४७	ध. ८।३८	२३।५७।३८	२८।५४	६।१३	५।४७	६।४०	२५	११	चित्रायां रविः ७।३६ । स्त्रीपुम्भयोर्योगः । महाष्टमीव्रतम् । महानवमीव्रतञ्च । त्रिशूलिनी पूजा, बलिदानादि†
९	र.	००।१७	प्रा. ६।२१	श्र.	४७।३६	„ १।१६	धृ. ४०।५०	कौ. ००।१७	मकर	२४।५७। ५	२८।५०	६।१४	५।४६	६।३६	२६	१२	दशमी क्षयः द. ५५।३, प्रवमम् । विजयादशमी । अपराजिता पूजा, देवीविसर्जनम् । मन्वादिः । पञ्चकारम्भः । +
११	चं.	५१।१३	रा. २।४४	ध.	४५। ६	„ १२।१६	शू. ३४।२५	व. २७।५६	म. १६।२३	२५।५६।३२	२८।४७	६।१५	५।४५	६।३३	२७	१३	पाशांकुशा एकादशीव्रतं स्मार्तानाम् । भ. २७।५६ उ. ५१।१३ या. । +(भद्रा) ४७।३६ उ. ।
१२	मं.	४७।५५	„ १।२५	श.	४३।३०	„ ११।३६	गं. २८।३८	व. १६।३४	कुम्भ	२६।५५।५६	२८।४४	६।१५	५।४५	६।३०	२८	१४	पद्मनाभ द्वादशी । गुडेन पारणा । वैष्णवानां ११ व्रतम् ।
१३	बु.	४५।४३	„ १२।३३	पू.	४२।५३	„ ११।२५	वृ. २३।४०	कौ. १६।४७	कु. २८। २	२७।५५।४२	२८।४०	६।१६	५।४४	६।२६	२९	१५	प्रदोषत्रयोदशी व्रतम् । *महारात्रिः ।
१४	बृ.	४४।४३	„ १२।१०	उ.	४३।३०	„ ११।४१	ध्रु. १६।३६	ग. १५।१३	मीन	२८।५५।२५	२८।३६	६।१७	५।४३	६।२२	३०	१६	भ. ४४।४३ उ. । मासान्तः ।
१५	शु.	४४।५६	„ १२।२८	रे.	४५।२१	„ १२।२६	व्या. १६।३२	वि. १४।५१	मी. ४५।२१	२९।५५। ८	२८।३२	६।१८	५।४२	तु. ६।१८	३१	१७	भ. १४।५१ या. । गं. ३३।२१ उ. ४८।२१ या. । आश्विनीपूर्णिमा-१५ । क्षेत्रस्नानम् । कोजागरा । प्रदोषे लक्ष्मीA

आ. शु. ४ मं. मि. आ. ४४।३५		
र.	५।१९।५९।४८	५९।१६
मं.	९। ४।५६।११	३४।४२
बु.	६।१४।२५।१६	७१।५८
बृ.	१०।२२।१३।४०	६।१३
शु.	६।२०।२८। ६	२।५६
श.	७।१०।४३।५३	६।३३
के.	५।२९।२९।२३	३।११
रा.	११।२९।२९।२३	३।११
ग्र.	२२।१८।४३	—

आ. शु. १२ मं. मि. आ. ४४।२२		
र.	५।२६।५५।५९	५९।३४
मं.	९। ८।५१।३६	३५। ७
बु.	६।२२।४८।४१	४८।५०
बृ.	१०।२१।३४।१३	४ ।२६
शु.	६।१९।४३।४०	११।४७
श.	७।११।२५।५७	६।३१
के.	५।२९। ७। ७	३।११
रा.	११।२९। ७। ७	३।११
ग्र.	२२।१८।४४	—

आकाशक बात— **(काल—उत्तरमे)**

याम्यायन, सौम्यगोल, शरद् ऋतु, शुद्ध समय, बृ. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. ८ के शु. वक्री ।

मौसम—पक्षधरि वर्षाक योग नीक । समय सुखद ।

विशेष कथन—खञ्जन दर्शन-मन्त्र—नीलकण्ठ, शुभग्रीव, सर्वकामफलप्रद ! पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट, नमोऽस्तु ते ॥ त्वं योगयुक्तो मुनिपुत्रकस्त्वमदृश्यतामेषि शिखोद्गमेन । संदृश्यसे प्रावृषि निर्गतायां त्वं खञ्जनाश्चर्य ! नमोनमस्ते ॥ **दर्शन-फल**—पूर्वमे कार्यसिद्धि, अग्निकोणमे भय, दक्षिणमे अग्निभय, नैऋत्यमे कलह, पश्चिममे लाभ, वायव्यमे अन्न-वस्त्र, उत्तरमे दिव्यांगनाक प्राप्ति, ईशानमे अनिष्ट, उड़ैत खञ्जन–दर्शनसँ अर्थागम । कमल, गाय, घोडा, हाथी, सर्प आ पवित्र दूभि पर देखलासँ आरोग्य, अर्थागम; छाउर, हड्डी, काष्ठ, केश, नख, (लोह) आर भुस्सा पर देखलासँ दुःख । अशुभफल-शान्ति आदि कृत्यासारमे देखी । **दुर्गाक पाठ**—यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानां च यथा हरिः । स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशती स्तवः । "चण्ड्याः शतावृत्तिपाठात् सर्वाः सिद्ध्यन्ति सिद्धयः" नवरात्र भगवानक सबसँ पैघ शक्ति काल मानल जाइछ—"सोऽनन्तोऽन्तकरः कालोऽनादिरादिकृदव्ययः । जनं जनेन जनयन् मारयन्मृत्युनान्तकम्" भगवानहिक समय रूप शक्तिक अनुभूयमान स्वरूप ऋतुचक्र(संवत्सर) जे सामान्यतः ३६० दिनक मानल जाइछ, ताहिमे ४०(४०×९=३६०) नवरात्र होइछ, ताहिमे चैत्रशुक्ल आ ओर आश्विनशुक्ल नवरात्र शक्ति-पूजाक हेतु प्रधान मानल जाइछ ।



कार्त्तिककृष्णपक्षः ।

संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, ई० अक्टूबर-नवम्बर १९८६ ई० ।

"तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुत्तमम् । द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेकं कलौ युगे ॥"—मनुः

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः तुला-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	तु. ल. घ. मि.	ने. गते	अं. ता.	कार्त्तिककृष्णपक्षः
१	श.	४६।४०	रा. १२।५८	अ. ४८।२८	रा. १।४१	ह. १४।२७	वा. १५।५०	मेष	००।५४। १	२८।२८	६।१८	५।४२	८।३३	१	१८	यवविषुवसंक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा घं. १२ या. । मासादिः ।
२	र.	४६।२१	,, २। ३	भ. ५२।४१	,, ३।२३	व. १३।२३	तै. १८। ६	मेष	१।५४।३३	२८।२४	६।१९	५।४१	८।२९	२	१९	क्षीणः शुक्रः ५०।२४ । अशुद्धारम्भश्च ५०।३४ उ. ।
३	चं.	५३।१७	,, ३।३९	कृ. ५७।५९	,, ५।३२	सि. १३।११	व. २१।५८	मे. ९।००	२।५४।१५	२८।२०	६।२०	५।४०	८।२५	३	२०	भ. २१।५८ उ. ५३।१७ या. ।
४	मं.	५८।००	,, ५।३३	रो. ६०।००	अहोरात्र	व्य. १३।४७	व. २५।३९	वृष	३।५३।५७	२८।१६	६।२१	५।३९	८।२१	४	२१	श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
५	बु.	६०।००	अहोरात्र	रो. ४।००	दि. ७।५८	व. १४।५४	कौ. ३०।३५	वृ. ३५।४४	४।५३।५६	२८।१२	६।२२	५।३८	८।१८	५	२२	पूर्वदिशि यात्रा । लतापादपादिरोपणम् ।
५	बृ.	३।१०	दि. ७।३८	मृ. ७।२९	,, ९।२२	प. १६।२०	तै. ३।३०	मिथुन	५।५३।५४	२८। ८	६।२२	५।३८	८।१४	६	२३	पश्चिमदिशि यात्रा ।
६	शु.	८।३८	,, ९।४६	आ. १६।५६	,, ११। ६	शि. १७।४३	व. ८।२८	मिथुन	६।५३।५२	२८। ४	६।२३	५।३७	८।१०	७	२४	भ. ८।२८ उ. ४०।५४ या. । अशोकचन्दन ६ । पश्चिमास्तः शुक्रः ५०।३४ । **स्वात्यां रविः** ३१।८*
७	श.	१३।२१	,, ११।४४	पु. २२।५९	,, ३।३६	सि. १८।४५	व. १३।२१	मि. ६।२८	७।५३।५०	२८।००	६।२४	५।३६	८। ६	८	२५	पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा दिवा घं. ११ मि. ४४ उ. । *स्त्रियोर्योगः ।
८	र.	१७।३२	,, १३।२६	पु. २८।२०	सं. ५।४५	सा. १९।१२	कौ. १७।३२	कर्क	८।५३।४८	२७।५६	६।२५	५।३५	८। ३	९	२६	वक्री बुधः १५।५५ ।
९	चं.	२०।३४	,, २।३९	श्ले. ३२।४५	रा. ७।३१	शु. १८।५३	ग. २०।३४	क. ३२।४५	९।५३।४६	२७।५३	६।२५	५।३५	७।५९	१०	२७	भ. ५१।३५ उ. । †निशीथे श्यामापूजा । कालरात्रिः । पितृविसर्जनम् । रात्रिशेषे शूर्पवादनम् ।††
१०	मं.	२२।३७	,, ३।२९	म. ३५।४४	,, ८।४४	शु. १७।४२	वि. २२।३७	सिंह	१०।५३।४४	२७।५०	६।२६	५।३४	७।५५	११	२८	भ. २२।३७ या. । ††दरिद्रानिःसारणञ्च । (नवम्बर ११) ।
११	बु.	२३।१९	,, ३।४५	पू. ३७।३६	,, ९।२९	ब्र. १५।३०	बा. २३।१९	सि. ५२।४५	११।५३।५७	२७।४६	६।२७	५।३३	७।५१	१२	२९	**रम्भा एकादशीव्रतम् सर्वेषाम्** । पश्चिमास्तो बुधः ४३।५५ ।
१२	बृ.	२२।३६	,, ३।२९	उ. ३८।१३	,, ९।४४	ऐ. १२।१५	तै. २२।३६	कन्या	१२।५४।१०	२७।४३	६।२७	५।३३	७।४७	१३	३०	**प्रदोष १३ व्रतम्** ।
१३	शु.	२०।४४	,, २।४६	ह. ३७।३७	,, ९।३१	वै. ८। १	व. २०।४४	कन्या	१३।५४।२३	२७।४०	६।२८	५।३२	७।४३	१४	३१	भ. २०।४४ उ. ४९।१५ या. । **चतुर्दशी १४ व्रतम्** । **यमपञ्चकारम्भः** । यमदीपदानम् ।
१४	श.	१७।४७	,, १।३६	चि. ३६। १	,, ८।५३	वि. २।५८	श. १७।४७	क. ६।४७	१४।५४।३६	२७।३७	६।२९	५।३१	७।३९	१५	१	प्रीतियोगक्षयः दं. ५४।४ । **दीपमालिका (सुखरात्रिः)**, दिवाऽभोजनम् । **प्रदोषे लक्ष्मीपूजनम्** । उल्काभ्रमणम् ।†
३०	र.	१३।५४	,, १२। ३	स्वा. ३३।३५	,, ७।५६	आ. ५०।३२	ना. १३।५४	तुला	१५।५४।४९	२७।३४	६।२९	५।३१	७।३५	१६	२	कार्त्तिकी अमा.-३० । पार्वणम् ।

का. कृ. ४ मं. मि.मा. ४४।८

र.	६। ३।५३।५७	५९।५१
मं.	६।१२।५७।४०	३६।१०
बु.	६।२८। ५।१३	२८।४१
बृ.	१०।२०।५९।२९	३।३२
शु.	६।१७। ७। ७	२९।३५
श.	७।११।४६।४८	६। १
के.	५।२८।४४।५२	३।११
रा.	११।२८।४४।५२	३।११
अ.	२२।१८।४५	—

का. कृ. १० मं. मि. मा. ४३।५५

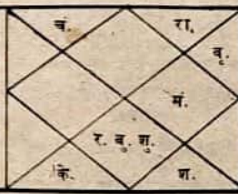
र.	६।१०।५३।४४	६०। ७
मं.	६।१७।१२।५५	३७।४५
बु.	६।२८।५१।५९	१७।४७
बृ.	१०।२०।३४।३७	१।४५
शु.	६।१२।५४। ८	२३।५४
श.	७।१२। ७।४०	६।३१
के.	५।२८।२२।३७	३।११
रा.	११।२८।२२।३७	३।११
अ.	२२।१८।४६	—

आकाशक बात— (काल—उत्तरमे)

याम्यायन—याम्यगोल, शरदृतु, शुद्ध अशुद्ध समय, वृ. शू. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, ता. २६ के बु. वक्री, बु. शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. २९ के बुध पश्चिमास्त । ता. २४ के शु. पश्चिमास्त ।

मौसम—पक्षधरि वर्षाक योग नीक । समय सुहावन ।

विशेष कथन—देशमे सर्वोत्तम ऋतु दुइएटा अछि—शरद् तथा वसन्त । अतएव शरद् ऋतुमे राजासँ रंक तक लक्ष्मीक पूजन करैत छथि । इजोरिया राति दीपावलीक हेतु तेहन उपयोगी नहि, जतेक अमावास्याक घोर अन्धकार; कारण जे एहिमे रोगक कीटाणुक प्राचुर्य रहैछ, जे दीपावलीक प्रकाशसँ अनायासे नष्ट भऽ जाइछ । एहि दिन सन्ध्यामे सर्वत्र दीपमालाक आयोजन करक चाही । कारण, एहि अर्द्धरात्रिमे लक्ष्मी भ्रमण करैत छथि एवं जे घर सभ प्रकाश, धूप-दीप आदिसँ अलंकृत रहैत अछि, ततए निवास करैत छथि । अतः, सम्पूर्ण रात्रि दीपादि प्रकाशसँ गृहादिकेँ जगमगौने रहक चाही । रात्रिक चतुर्थ प्रहरमे सूप आदि बजाकऽ दरिद्राकेँ बहार करबाक प्रथो तऽ प्रचलिते अछि । **उल्का भ्रमण**—"शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः । उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना ।। अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम । उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमाङ्गतिम् । यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये । उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते ।" पितर लोकनिके मार्गदर्शनार्थ ऊँक भाँजल जाइछ ।



कार्त्तिकशुक्लपक्षः।

संवत् २०४३, शाके १९०८, सन् १३९४ साल, अं० नवम्बर १९८६ ई०।

बेलपत्र तोड़बाक मंत्र—अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदाप्रिय। क्षमस्व शिवपूजार्थं बिल्वपत्रं चिनोम्यहम् ॥

ति.	वा.	तिथय: दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगा: यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशय: रा. द. प.	सूर्यांशा: तु.-वृ.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि	तु. ल. घं. मि.	ने. गते	प्र. ता
१	चं.	६।११	दि. १०।१०	वि. ३०।२२	रा. ६।३६	सौ. ४३।२५	व. ७।११	तु. १६।१०	१६।५५। २	२७।३१	६।३०	५।३०	७।३१	१७	३
२	मं.	३।५०	,, ८। २	अ. २६।३८	सं. ५। ६	शो. ३५।५१	कौ. ३।५०	वृश्चिक	१७।५५।१५	२७।२८	६।३०	५।३०	७।२७	१८	४
४	बु.	५२। ६	रा. ३।२३	ज्ये २२।३२	दि. ३।३६	अ. २८। ५	व. २५। ६	वृ. २२।३२	१८।५५।४०	२७।२४	६।३१	५।२६	७।२३	१९	५
५	वृ.	४६।११	,, १।००	मू. १८।२०	,, ११५२	सु. २०। ८	व. २६।१०	धनु	१९।५६। ५	२७।२०	६।३२	५।२८	७।१८	२०	६
६	शु.	४०।२१	,, १०।४१	पू. १४।१२	,, १२।१४	धृ. १२।१८	कौ. १३।१६	ध. २८।१४	२०।५६।३०	२७।१६	६।३३	५।२७	७।१४	२१	७
७	श.	३४।५८	,, ८।३२	उ. १०।२१	,, १०।४१	शू. ४।४०	ग. ७।४०	मकर	२१।५६।५५	२७।१३	६।३३	५।२७	७।१०	२२	८
८	र.	३०। ७	,, ६।३७	श्र. ६।५९	,, ९।२२	वृ. ५०।४३	वि २।३३	म. ३५।३७	२२।५७।१९	२७।१०	६।३४	५।२६	७। ६	२३	९
९	चं.	२६। ४	सं. ५। १	ध. ४।१५	,, ८।२०	ध्रु. ४४।४१	कौ. २६। ४	कुम्भ	२३ ५७।४३	२७। ७	६।३५	५।२५	७। २	२४	१०
१०	मं.	२२।५४	दि. ३।३५	श. २।२५	,, ७।३३	व्या. ३९।२४	ग. २२।५४	कु. ४६।४६	२४।५८। ७	२७। ४	६।३५	५।२५	६।५८	२५	११
११	बु.	२०।४८	,, २।५५	पू. १।३३	,, ७।१३	ह. ३४।५९	वि. २०।४८	मीन	२५।५८।४६	२७।००	६।३६	५।२४	६।५४	२६	१२
१२	वृ.	१९।५७	,, २।३६	उ. १।५२	,, ७।२२	व. ३१।३५	वा. १९।५७	मीन	२६।५९।२५	२६।५७	६।३७	५।२३	६।५०	२७	१३
१३	शु.	२०।२०	,, २।४५	रे. ३।२३	,, ७।५८	सि. २९। ९	तै. २०।२०	मी. ३।२३	२८।००। ४	२६।५४	६।३७	५।२३	६।४६	२८	१४
१४	श.	२२। ७	,, ३।२९	अ. ६।१०	,, ९। ६	व्य. २७।४६	व. २२। ९	मेष	२९।००।४३	२६।५१	६।३८	५।२२	६।४२	२९	१५
१५	र.	२४।४८	,, ४।३७	भ. १०। ८	,, १०।४१	व. २७।१३	प. २४।५८	मे २६।२३	००। १।२२	२६।४८	६।३८	५।२२	वृ. ८।५७	१	१६

ने. गते	प्र. ता	
१७	३	वह्न्युत्थानम्। चन्द्रदर्शनम्। पूर्वोदितः शुक्रः ३५।४४।
१८	४	तृतीयाक्षयः दं. ५४।१८। कटमहुली ३। **भ्रातृद्वितीया, चित्रगुप्तपूजा-च**।
१९	५	भ. २५।९ उ. ५२।९ या.। गं. १६।३२ उ. ३१।३२ या.।
२०	६	**विशाखायां रविः** ४७।४५। पुष्टः शुक्रः ३५।४३ उ.। **गुह्वारम्भश्च** ३५।४३ उ. प्रतिहार षष्ठीव्रतस्य पूर्वदिनकृत्यम् * *(खरना)।
२१	७	**प्रतिहारषष्ठी ६ (छठि) व्रतम्**। सायंकालीनार्घदानम्।
२२	८	गण्डयोगक्षयः दं. ५२।४७। भ. ३४।५८ उ.। प्रातःकालीनार्घदानम्। **प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य पारणा**।†
२३	९	भ. २।३३ या.। **गोपाष्टमी** ८। यमदंष्ट्रारम्भः। **पञ्चकारम्भः** (भदवा) ६।५९ उ.। †**सामा पूजा** प्रारम्भः।
२४	१०	**अक्षयनवमी ९**। त्रेतायुगादिः। मार्गी गुरुः ४५।३३। + मु. ३० फलं साम्यम्। विष्णुपदी संक्रान्तेः पुण्यकालः× ×दिवा घं. १२ उ.। त्रेतायुगान्तः। मन्वादिः।
२५	११	भ. ४१।५१ उ.। पश्चिमास्तः शनिः २२।३२।
२६	१२	भ. २०।४८ या.। **देवोत्थान एकादशीव्रतम्** सर्वेषाम्। भीष्मपञ्चकव्रतारम्भः। द. ति. २०।४८ उ.।
२७	१३	दामोदर १२। तुलसीदलेन पारणा, प्रदोष १३ व्रतम्। द. ति. १९।५७ या.। गं. ५१।२ उ.।
२८	१४	**चतुर्दशी १४ व्रतम्**। पूर्वोदितो बुधः ४३।३२। **विद्यापतिस्मृतिदिनम्**। **पञ्चकान्तः** (भदवा) ३।३२ उ.। गं. ६।२३ या.।
२९	१५	भ. २२।७ उ. ५३।३२ या.। **मासान्तः**। सामाविसर्जनम्।
१	१६	कार्त्तिकी पूर्णिमा-१५। **हरिहरक्षेत्रस्नानम्**। सोनपुर मेला। भीष्मपञ्चकव्रतसमाप्तिः। वि. ४ च. **वृश्चिके रविः** ४२।२६।+

का. शु. २ मं. मि. मा. ४३।४४		
र.	६।१७।५५।१५	६०।२०
मं.	९।२१।४६।११	३८।२६
बु.	६।२४।५७। ९	५५।५१
वृ.	१०।२०।२०।५१	००।५१
शु.	६। ८।३१।१८	२६।५६
श.	७।१४।३५।५०	६।३१
के.	५।२८।००।२२	३।११
रा.	११।२८।००।२२	३।११
अ.	२२।१८।४७	—

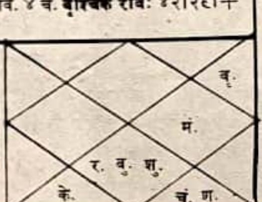
का. शु. १० मं. मि. मा. ४३।३२		
र.	६।२४।५८। ७	६०।३४
मं.	९।२५।२४।३८	३८।३६
बु.	६।१९।२५। २	४४।३६
वृ.	१०।२०।१७।३७	०७। ३
शु.	६। ५।१७। ९	१९।४१
श.	७।१४।२६।३६	७।१०
के.	५।२७।३७। ७	३।११
रा.	११।२७।३७। ७	३।११
अ.	२२।१८।४८	—

आकाशक बात-- (काल—उत्तरमे)।

याम्यायन—याम्यगोल, शरदऋतु। अशुद्ध-शुद्ध समय। बु. वृ. शु. वक्री शेष ग्रह मार्गी, ता. १० के वृ. मार्गी, बु. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ता. ११ के श. पश्चिमास्त। ता. १४ के बु. पूर्वोदित।

मौसम—एहि पक्षमे वर्षाक योग साधारण, समय सुखद।

विशेष कथन—यमद्वितीयायाम्—या तु भोजयते नारी भ्रातरं युग्मके तिथौ। अर्चयेच्चापि ताम्बूलैर्न सा वैधव्यमाप्नुयात्। भ्रातुरायुःक्षयो राजन् न भवेत्तत्र कर्हिचित्। **भगिन्या पठनीयो मन्त्रः**—भ्रातस्तवानुजाताऽहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः॥ ज्येष्ठभगिन्यास्तु–'भ्रातर्ज्येष्ठाऽनुजाताऽहम्।' इति शेषः॥ **छठिमे संकल्प**—नमोऽद्येत्यादि इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुःखदारिद्र्यसकलपातकक्षयअपस्मारकुष्ठादिमहाव्याधिसकलरोगक्षयचिरजीविपुत्रादिलाभगोधनधान्यादिसमृद्धि-सुखसौभाग्यअवैधव्यसकलकामावाप्तिकामा अद्य स्वश्च सूर्यायार्घमहं दास्ये इति संकल्प्य नमो भगवते सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य पूजनादिकं कुर्यात्॥ **एकादश्यां रात्रौ देवोत्थापनम्**—ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्तातवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ॥ मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्रः शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द, त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन उत्थितं भुवनत्रयम्॥



मार्गकृष्णपक्षः। संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० नवंबर-दिसंबर १९८६ ई०। *गोमूत्रक संग पीसि व्यवहार करी।
“कस्तूरीवरकुङ्कुमागुरुयुतम्ष्णाम्बु शौचं तथा स्निग्धं स्त्रीषु सुखं गुरुव्यवसनं सेवेत हेमन्तके।” मकड़ाक विषमे आमिल*

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न.	दं. प.	घं. मि.	योगा. यो.	द. प.	करणानि क. द. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः वृ. राशौ	वि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	बृ. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.	मार्गकृष्णपक्षः
१	चं.	२६। १	रा. ६।१५	कृ.	१५। ६	दि. १२।४३	प.	२७।३३	कौ. २६। १	वृष	१। २।००	२६।४५	६।३६	५।२१	८।५२	२	१७	**मासादिः।** घं. ३ च. **कुम्भे** कुजः ३६।४७।
२	मं.	३३।४९	,, ८।१२	रो.	२१।२५	,, ३। ४	शि.	२८।२८	तैं. १। ५	वृ. ५४।२६	२। २।३८	२६।४२	६।४०	५।२०	८।४८	३	१८	मार्गी बुधः १६।४१।
३	बु.	३९। ३	,, १०।१७	मृ.	२७।२७	सं. ५।३९	सि.	२९।४३	व. ६।२६	मिथुन	३। ३।२८	२६।३९	६।४०	५।२०	८।४४	४	१९	भ. ६।२६ उ. २९।३ या.। मार्गी भृगुः ५७।४१ अनुराधायां रविः ५९।४१।
४	बृ.	४४।२५	,, १२।२७	आ.	३३।५८	,, ८।२६	सा.	३९। ८	व. ११। ४	मिथुन	४। ४।१८	२६।३६	६।४१	५।१९	८।३९	५	२०	श्रीगणेश ४ व्रतम्। द्विरागमनं रात्रौ घं. १२ मि. २७ उ.।
५	शु.	४९।२२	,, २।२६	पु.	४०। ९	,, १०।४५	शु.	३२।१४	कौ. १६।५४	मि. २३।३६	५। ५। ८	२६।३३	६।४१	५।१९	८।३६	६	२१	वीड़ ५। श्रीमनसादेवीशयनम्। दक्षिणदिशि यात्रा।
६	श.	५३।३६	,, ४। ८	पु.	४५।३९	,, १२।४७	शु.	३२।५४	ग. २१।२९	कर्क	६। ५।५८	२६।३०	६।४२	५।१८	८।३२	७	२२	भ. ५३।३६ उ.।
७	र.	५६।४२	,, ५।२४	श्ले.	५०।१३	,, २।२८	ब्र.	३२।४७	वि. २४।१९	क. ५०।१३	७। ६।४८	२६।२७	६।४३	५।१७	८।२८	८	२३	भ. २४।१९ या.। गं. ३६।१३ उ. ५४।१३ या.।
८	चं.	५८।४६	,, ६।१३	म.	५३।४०	,, ४।११	ऐं.	३१।५०	वा. २७।४४	सिंह	८। ७।३८	२६।२४	६।४३	५।१७	८।२३	९	२४	विपणस्त्रादिनिर्माणदिनम्। नि. विवाहः।
९	मं.	५९।२५	,, ६।३०	पू.	५५।५१	,, ५। ४	वै.	२९।५४	तैं. २९। ६	सिंह	९। ८।२७	२६।२२	६।४४	५।१६	८।१९	१०	२५	द. ति. ५९।२५ उ.। पूर्वदिशि यात्रा मध्यमा।
१०	बु.	५८।४६	,, ६।१४	उ.	५६।४४	,, ५।२६	वि.	२६।५८	व. २९। ४	सि. ११।४	१०। ९।२९	२६।२०	६।४४	५।१६	८।१५	११	२६	भ. २९।४ उ. ५८।४६ या.। द. ति. ५८।४६ या.।
११	बृ.	५६।५४	,, ५।३०	ह.	५६।२५	,, ५।१८	प्री.	२३।००	व. २७।५०	कन्या	११।१०।३०	२६।१८	६।४४	५।१६	८।११	१२	२७	**उत्पन्ना एकादशीव्रतम् स्मार्तानाम्।** पूर्वदिशि यात्रा। नि. विवाहः।
१२	शु.	५४।००	,, ४।२१	चि.	५५। २	,, ४।४५	आ.	१८। २	कौ. २५।२७	क. २५।४४	१२।११।३१	२६।१६	६।४५	५।१५	८। ६	१३	२८	**वैष्णवानां एकादशीव्रतम्।** नि. विवाहः।
१३	श.	५०। ७	,, २।४८	स्वा.	५२।५०	,, ३।५३	सौ.	१२।२७	ग. २१।३४	तुला	१३।१२।३२	२६।१५	६।४५	५।१५	८। १	१४	२९	भ. ५०।७ उ.। **प्रदोष १३ व्रतम्।**
१४	र.	४५।२४	,, १२।५५	वि.	४९।४७	,, २।४०	शो.	६।४१	वि. १७।४६	तु. ३५।३३	१४।१३।३३	२६।१४	६।४५	५।१५	७।५७	१५	३०	प्रतिगण्डयोगक्षयः दं. ५२।५९। भ. १७।४६ या.। चतुर्दशीव्रतम्। ज्ये. १ च. शनिः ३८।१४।
३०	चं.	४०। ६	,. १०।४७	अ.	४६।११	,, १।१३	सु.	५१।३३	चं. १२।४५	वृश्चिक	१५।१४।३४	२६।१३	६।४५	५।१५	७।५३	१६	१	मार्गी-अमा. ३०। पार्वणम्। **सोमवारी व्रतम्** (दिसम्बर१२)।

मार्ग कृ. २ मं. मि. मा. ४३।११

र.	७। २। २।३८	६०।४४
मं.	१०।००।४४। २	३६।४७
बु.	६।१७।१६। ३	१।१५
बृ.	१०।२०।२४।३४	१।५०
शु.	६। ३।५८।५४	१।१७
श.	७।१५।१३। ८	७।३०
के.	५।२७।१५।५२	३।११
रा.	११।२७।१५।५२	३।११
प्र.	२२।१८।४९	—

मार्ग कृ. ६ मं. मि. मा. ४३।११

र.	७। ९। ८।२७	६०।५७
मं.	१०। ५।२२।४८	४०।२८
बु.	६।२०। ३।४१	४४।२७
बृ.	१०।२०।४०।४४	२।४४
शु.	६। ४।४७।४९	१६।१८
श.	७।१६। ३।१७	७।२८
के.	५।२६।५३।३७	३।११
रा.	११।२६।५३।३७	३।११
प्र.	२२।१८।५०	—

आकाशक बात— (काल—पूर्वमे)

याम्यायन, याम्यगोल, हेमन्त ऋतु, शुद्ध समय। बु. शु. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, ता. १८ बु. मार्गी वा. १९ शु. मार्गी। श. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित।

मौसम—पक्षधरि वायुक प्रकोप, शीतलहरीक प्रकोप। समय सामान्य रहत।

विशेष कथन—पञ्चोपचार पूजासामग्री—चानन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य। **षोडशोपचार**—“आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च।। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा।।” **पञ्चगव्य**—“गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्।।” **जैमिनीक मतानुसार आयुसाधन**—१. लग्नेश-अष्टमेशसँ, २. लग्न-चन्द्रमासँ, ३. लग्न-होरालग्नसँ। चन्द्रमा लग्न या सप्तममे होथि त लग्न-चन्द्रसँ, अन्यथा शनि-चन्द्रसँ। **दीर्घायु**:—चरे लग्नेशः चरे अष्टमेशः, स्थिरे लग्नेशः द्विस्वभावेऽष्टमेशः द्वि० लग्नेशः स्थिरेऽष्टमेशः। **मध्यायु**:—चरे लग्नेशः स्थिरेऽष्टमेशः, स्थिरे लग्नेशः चरेऽष्टमेशः द्वि० लग्नेशः द्वि० अष्टमेशः। **अल्पायु**:—चरे लग्नेशः द्वि० अष्टमेशः, स्थिरे लग्नेशः अष्टमेशश्च, द्वि० लग्नेशः चरेऽष्टमेशः। तीन प्रकारसँ वा दू प्रकारसँ आयु आबए से ग्रहण करी, तीनू प्रकारसँ भिन्नता भेने लग्न-होरा लग्नसँ जे आयु प्राप्त सएह ग्राह्य। **होरा लग्न**—पलात्मक इष्टमे ५ भागसँ लब्धि अंशादि, तकरा राशि आदि बना सूर्यमे जोड़लासँ होरा लग्न होइछ। विषमेऽङ्के रवौ योज्यं समेऽङ्के लग्नभादिषु।” दीर्घायु ९६, १०८, १२०, मध्यायु ६४, ७२, ८०, अल्पायु ३२, ३६, ४० वर्ष।



ति.	वा.	तिथयः दं. प.		घं. मि.	नक्षत्राणि न.	दं. प.		घं. मि.	योगाः यो.	दं. प.	करणानि क.	दं. प.	राशयः रा.	दं. प.	सूर्यांशाः वृ.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	त्. ल. घ. मि.	ने. गते	अं. ता.	मार्गशुक्लपक्षः ।
१	मं.	३४।२३	रा.	८।२०	ज्ये.	४१।५६	रा.	११।३४	धृ.	४३।४६	कि.	७।१५	वृ.	४१।५६	१६।१५।३५	२६।१२	६।४६	५।१४	७।४८	१७	२	**हरिशोव्रतम्** । गं. ३५।५६ उ. ५०।५६ या. ।
२	बु.	२८।३०	,,	६।१०	मू.	३७।५५	,,	६।५६	शू.	३५।५३	बा.	१।२७	धनु		१७।१६।४४	२६।१०	६।४६	५।१४	७।४४	१८	३	चन्द्रदर्शनम् । **ज्येष्ठायां रविः** ७।६ । नवान्नपार्वणम् । द्विरागमनम् ।
३	बृ.	२२।३४	दि.	३।४८	पू.	३३।४५	,,	८।१६	गं.	२८।००	ग.	२२।३४	ध.	४७।४६	१८।१७।५३	२६। ८	६।४६	५।१४	७।४०	१९	४	भ. ४९।४३ उ. । उमामाहेश्वरव्रतम् । *दिवा. घं. १ मि. ३२ उ. वधूप्रवेशः ।
४	शु.	१६।५२	,,	१।३२	उ.	२६।५१	,,	६।४३	वृ.	२०।१८	वि.	१६।५२	मकर		१९।१९। २	२६। ६	६।४७	५।१३	७।३६	२०	५	भ. १६।५२ या. । बि. ४ च. वृश्चिके बुधः ३२।३८ । नि. विवाहः । द्विरागमनम्*
५	श.	११।३४	,,	११।२५	श्र.	२६।१७	सं.	५।१८	ध्रु.	१२।५२	बा.	११।३४	म.	५४।५१	२०।२०।१०	२६। ५	६।४७	५।१३	७।३१	२१	६	**विवाहपञ्चमी** (श्रीजानकीविवाहोत्सवः)।**पञ्चकारम्भः** (भदवा) २६।१७ उ. ।
६	र.	६।४७	,,	९।२०	ध.	२३।२५	दि.	४। ९	व्या.	५।५५	तै.	६।४७	कुम्भ		२१।२१।१८	२६। ४	६।४७	५।१३	७।२७	२२	७	**हर्षणयोगक्षयः** द. ५३।४६।**षाड्मासिकरविव्रतारम्भः** ।
७	चं.	२।५१	,,	७।५५	श.	२१।२४	,,	३।२१	ह.	५४। ६	व.	२।५१	कुम्भ		२२।२२।५६	२६। ३	६।४७	५।१३	७।२३	२३	८	अष्टमीक्षयः दं. ५७।०० । भ. २।५१ उ. ३१।२१ या. ।
९	मं.	५७।५५	रा.	५।५८	पू.	२०।१४	,,	२।५४	सि.	४९।२२	बा.	२८।५३	कु.	५।३२	२३।२३।३६	२६। २	६।४८	५।१२	७।१९	२४	९	द. ति. ५७।५५ उ. । ††विवाहः, द्विरागमनम् वधूप्रवेशः ।
१०	बु.	५७।१३	,,	५।४१	उ.	२०।३५	,,	३। २	व्य.	४५।३५	तै.	२७।३४	मीन		२४।२४।५१	२६।००	६।४८	५।१२	७।१४	२५	१०	द. ति. ५७।१३ या. । †२४।३ या. पञ्चकान्तः (भदवा) २१।३ उ. नि.††
११	बृ.	५७।४६	,,	५।५६	रे.	२१। ३	,,	३।१३	व.	४२।४८	व.	२७।३१	मी.	२१। ३	२५।२६। ८	२५।५६	६।४८	५।१२	७।१०	२६	११	भ. २७।३१ उ. ५७।४६ या. **मोक्षदा एकादशी व्रतं स्मार्तानाम्** । गं. ६।३ उ.†
१२	शु.	५६।४७	,,	६।४३	अ.	२३।५५	,,	४।२२	प.	४१। ३	व.	२८।४८	मेष		२६।२७।२५	२५।५८	६।४८	५।१२	७। ६	२७	१२	केशव १२ । गोमूत्रेण पारणा । **वैष्णवानां एकादशी ११ व्रतम्** ।
१३	श.	६०।००	अहोरात्र		भ.	२७।३६	रा.	५।५३	शि.	४०। ६	को.	३१।१७	मे.	४३।४१	२७।२८।४१	२५।५७	६।४९	५।११	७। २	२८	१३	**प्रदोषत्रयोदशी व्रतम्** । चुल्हिकास्थापनम् ।
१३	र.	२।४७	दि.	७।५६	कृ.	३२।२७	,,	७।४८	सि.	४०।१०	तै.	२।४७	वृष		२८।२९।५७	२५।५६	६।४९	५।११	६।५७	२९	१४	**चतुर्दशी १४ व्रतम्** । चुल्हिकास्थापनम् ।
१४	चं.	६।५६	,,	९।३७	रो.	३८। ८	,,	१०। ४	सा.	४०।५३	व.	६।५६	वृष		२९।३१।१३	२५।५५	६।४९	५।११	६।५३	३०	१५	भ. ६।५६ उ. ३६।२६ या. । **मासान्तः** । ‡(दिवा घं. ११ मि. १७ उ.)मु. ३० फलं साम्यम् ।
१५	मं.	११।५४	,,	११।३५	मृ.	४०।२८	,,	११।००	शु.	४२। १	व.	११।५४	वृ.	११।१८	०।३२।२९	२५।५४	६।४९	५।११	घ. ६। ६	१	१६	मार्गी-पूर्णिमा १५ । क्षेत्रास्नानम् । **मूले धनुषि रविः** ११।६ । धनुर्द्धारम्भः ११।६ उ. ।षडशीतिसंक्रान्तेः पुण्यकालः ११।६ उ.‡

संवत् २०४३,शाकः १९०८, सन् १३६४ साल, ई० दिसम्बर १९८६ ई० ।

"त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् । त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥" एहि मंत्रसँ बेलपत्र चढ़ाबी ।

मार्ग शु. १५ मं. मि. मा. ४२।५७		
र.	८। ०।३२।२९	६१।१८
मं.	१०।१९।३८।५२	४०।५६
बु.	७।१६।३०।१४	९६।२६
बृ.	१०।२२।२८।२५	७।१२
शु.	६।१६।००।४०	४८।१५
श.	७।१८।३२। ९	७।२८
के.	५।२५।४६।५१	३।११
रा.	११।२५।४६।५१	३।११
प्र.	२२।१८।५८	—

मार्ग शु. १ मं. मि. मा. ४३।६		
र.	७।१६।१५।३५	६१। ५
मं.	१०।१०। ८।३४	३६।५५
बु.	६।२६।४१।४७	७०। ६
बृ.	१०।२१। ९।२०	५।२५
शु.	६। ७।१३।३६	३१।१८
श.	७।१६।५२।१८	७।२८
के.	५।२६।३१।२२	३।११
रा.	११।२६।३१।२२	३।११
प्र.	२२।१८।५१	—

मार्ग शु. ९ मं. मि. मा. ४३।१		
र.	७।२३।२३।३४	६१।१३
मं.	१०।१४।५१।४६	४०।३४
बु.	७। ५।४६।३३	८६। ७
बृ.	१०।२१।४५।५७	६।१९
शु.	६।११। ८।३२	३६। १
श.	७।१७।४१।४२	७।२८
के.	५।२६। ६। ७	३।११
रा.	११।२६। ६। ७	३।११
प्र.	२२।१८।५२	—

आकाशक बात— (काल—पूर्वमे)

याम्यायन-याम्यगोल, हेमन्त ऋतु, शुद्धसमय । सब ग्रह मार्गी, श. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षधरि समय सुहावन आ सुखद रहत ।

विशेष कथन—मार्गमासीय शुक्लपक्षीयप्रथमरविवासरादौ रविव्रतारम्भः । वैशाखमासे तच्छुक्लपक्षीयान्तिमरविवासरे तद्व्रतविराम इति स्मृतिप्रमाणम् । **नवान्नभोजन-निर्णय**—कृत्यसार परिशिष्टमे कोनो मतसँ १३ अंश, कोनोसँ १५ और कोनोसँ २३ वृश्चिकांश ग्राह्य, मुगनेताँ पूर्वहि कर्त्तव्य लिखल अछि । **ध्रुवतारा द्वारा लग्नक ज्ञान**—ध्रुवक चारू काते १ श्वेत आ १ लाल (शूलिनी) नामक तारा २४ घंटामे मेषसँ मीन धरि घुमैत अछि । ध्रुवसँ पश्चिममे वृ., वायव्यमे मि., उत्तरमे कर्क, सि., ईशानमे कन्या. पूर्वमे तु. वृ., आग्नेयमे धनु., दक्षिणमे म. कु., नैऋत्यमे मीन । शूलिनी पश्चिमादि हो तँ क्रमशः मेष-वृषादि लग्न जानी । **लग्नमान**—घं. मि. से. मेष-मीन—१।२७।१५, वृष-कुम्भ—१।४०।२४, मिथुन-मकर—२।१।१२, कर्क-धनु—२।१७।१२, सिंह-वृश्चिक—२।१८।४६, कन्या-तुला—२।१४।१२, चन्द्रोदयास्त साधन—तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे । विषयशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च ॥ **उदाहरण**—कोनो कृष्णपक्ष पंचमीक रात्रिमान ३०। ३०×५=१५०, १५० – २=१४८, १४८÷१=६।५२ लब्ध चन्द्रोदयमान ।



पौषकृष्णपक्षः ।

संवत् २०४१, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० दिसम्बर १९८६ ई० ।

"सर्वे वै सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥"

तिथयः				नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	राशयः	सूर्यांशाः	दि. मा.	सू. उ.	सू. अ.	घ. ल.	ने.	प्र.	
ति.	वा.	दं. प.	घं. मि.	न. दं. प.	घं. मि.	यो. दं. प.	क. दं. प.	रा. द. प.	ध. राशौ	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	गते	ता.	
१	बु.	१७।१७	दि. १।४५	आ. ५१। ४	रा. ३।१६	शु. ४३।२४	को. १७।१७	मिथुन	१।३३।५१	२५।५२	६।५०	५।१०	९। १	२	१७	पूर्वास्तो बुधः ४५।५७ । **मासादिः** । द. ति. १७।१७ उ. ।
२	वृ.	२२।४१	,, ३।५४	पु. ५७।२४	,, ५।४८	वृ. ४४।३६	ग. २२।४१	मि. ४०।४६	२।३५।१३	२५।५०	६।५०	५।१०	८।५६	३	१८	भ. ५५।१० उ. ति. २२।४१ या. ।
३	शु.	२७।४०	रा. ५।५४	पु. ६०।००	अहोरात्र	ऐ. ४५।२२	वि. २७।४०	कर्क	३।३६।३४	२५।४८	६।५०	५।१०	८।५२	४	१९	भ. २७।४० या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
४	श.	३१।५०	,, ७।३५	पु. ३। ८	दि. ८। ६	वै. ४५।३२	बा. ३१।५०	कर्क	४।३७।५५	२५।४७	६।५१	५। ९	७।४७	५	२०	ग. ५६।५६ उ. ।
५	र.	३४।५४	,, ८।४६	श्ले. ७।५६	,, ९।५६	वि. ४४।४६	को. ३।२२	क. ७।५६	५।३९।१६	२५।४६	६।५१	५। ९	८।४२	६	२१	ग. १२।५६ या. ।
६	चं.	३६।५२	,, ९।३६	म. ११।४४	,, ११।३३	प्री. ४३।१३	ग. ५।५३	सिंह	६।४०।३७	२५।४५	६।५१	५। ९	८।३८	७	२२	भ. ३६।५२ उ. । पूर्वोदितः शनिः ५६।५२ ।
७	मं.	३७।३८	,, ९।५४	पू. १४।१८	,, १२।३४	आ. ४०।३६	वि. ६।५०	सि. २९।२२	७।४१।५८	२५।४४	६।५१	५। ९	८।३३	८	२३	भ. ६।५० या. । पूर्वदिशि यात्रा ।
८	बु.	३६।४५	,, ९।३३	उ. १५।२९	,, १। ३	सौ. ३६।५७	वा. ७। ७	कन्या	८।४३।२३	२५।४६	६।५१	५। ९	८।२८	९	२४	अपूपाष्टका—८ । मूले धनुषि बुधः४८।९ ।
९	वृ.	३४।४९	,, ८।४६	ह. १५।३२	,, १। ४	शो. ३२।२२	तै. ५।४७	क. ४४।५८	९।४४।४८	२५।४८	६।५०	५।१०	८।२४	१०	२५	अन्वष्टका ९ ।
१०	शु.	३१।५०	,, ७।३४	चि. १४।२४	,, १२।३६	अ. २६।५६	व. ३।२०	तुला	१०।४६।१३	२५।५०	६।५०	५।१०	८।१९	११	२६	भ. ३।२० उ., ३१।५० या. । दक्षिणदिशि यात्रा ।
११	श.	२७।५५	,, ६।००	स्वा. १२।२४	,, ११।४८	सु. २०।४६	वा. २७।५५	तु. ५५।१८	११।४७।३८	२५।५१	६।५०	५।१०	८।१४	१२	२७	**सकला एकादशीव्रतम् सर्वेषाम् ।**
१२	र.	२३।११	दि. ४। ६	वि. ९।३५	,, १०।४०	धृ. १३।५७	तै. २३।११	वृश्चिक	१२।४९। ३	२५।५२	६।५०	५।१०	८।१०	१३	२८	**प्रदोषत्रयोदशी व्रतम् ।**
१३	चं.	१७।५३	,, १।५६	अ. ९। ६	,, ९।२५	शू. ३। ६	व. १७।५३	वृश्चिक	१३।५०।२८	२५।५३	६।४९	५।११	८। ५	१४	२९	भ. १७।५३ उ, ४५।२ या. । **गण्डयोगक्षयः**, दं. ५२।१९ । **पूर्वाषाढ़े रविः** १२।५७ । चतुर्दशी १४ व्रतम् ।*
१४	मं.	१२।१२	,, ११।४२	ज्ये. २।११	,, ७।४१	वृ. ५१। ३	श. १२।१२	वृ. २।११	१४।५१।५२	२५।५४	६।४९	५।११	८। ०	१५	३०	मूलक्षयः दं. ५५।५२, गं. ११।११ या. । दशतारकारम्भः २।११ उ. ।
३०	बु.	६।१८	,, ९।१०	मू. ३।५१	,, ८।२१	ध्रु. ४५।१०	ना. ६।१८	धनु	११।५३। ९	२५।५६	६।४९	५।११	७।५६	१६	३१	पौषी-अमा. ३० । पार्वणम् । पू. भा. ४ च. मीने कुजः ।

*गं. ५६।११ उ. ।

पौ. कृ. ७ मं. मि. मा. ४२।५२

र.	८। ७।४१।५८	६१।२४
मं.	१०।२४।२७।४३	४०।२६
बु.	७।२८। ७।२७	१०३।३१
वृ.	१०।२३।२४।१६	८।११
शु.	६।२१।४४।५०	५१। ७
श.	७।१९।१२।२२	७।२८
के.	५।२५।२४।३५	३।११
रा.	११।२५।२४।३५	३।११
ग.	२२।१८।५४	—

पौ. कृ. १४ मं. मि. मा. ४२।५७

र.	८।१४।५१।५२	६१।२६
मं.	१०।२९।१७।४४	४०।४७
बु.	८। ९।३१। २	१०६।४१
वृ.	१०।२४।२५। ६	९।००
शु.	६।२८। १।३१	५६।२६
श.	७।२०। ८।००	६।३३
रा.	५।२५। २।२०	३।११
के.	११।२५। २।२०	३।११
ग.	२२।१८।५५	—

आकाशक बात— (काल—पूर्वमे)

याम्यायन, याम्यगोल, हेमन्त ऋतु । अशुद्ध समय । सब ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, श. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित । ता. २२ के. श. पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षभरि समय सुखद आ सुहावन रहत ।

विशेषकथनम्—एहि वर्ष पौषी अमा, अशुभ दिनमे तथा दीपावली आ होलिका शुभ दिनमे पड़ल अछि जकर फल—दुर्भीक्ष तथा सुभीक्ष कहल गेल अछि। पूसक पछबा बसात नीक नहि मानल गेल अछि, एहिसँ उपज स्वल्प होइछ । पौषकृष्ण सप्तमीमे घटा मात्र भेलासँ आद्रा एवं श्रावणीमे नीक वर्षा होइछ । पौषकृष्ण त्रयोदशीमे घटा भेलासँ श्रावणी अमा आर, पूर्णिमामे नीक वर्षा होइछ । "पूस अमावस मूल को सरसँ चारों वाय (वायु) । निश्चय बाँधो झोपड़ी, वर्षा होय सवाय ।" "सोम, शुक्र, गुरु दिवस, पौष अमावस होय । घर-घर बाजे बधावड़ा, दुखी न देखे कोय" ॥ **गोचरमे शनिक सुवर्णादि चरणविचार**—शनिक राशि-संचार समय चन्द्रमा जन्म राशिसँ १।६।११ मे होथि त सुवर्णपाद, २।५।९मे रजतपाद, ३।७।१०मे ताम्रपाद, आ ४।८।१२मे लौहपाद, गोचरीमे शनि अशुभ रहितहुँ सुवर्णपादमे शुभ, रजतपादमे मध्यम, ताम्रपादमे न्यून अशुभ, लौहपादमे पूर्ण अशुभ । **साढ़े साती शनिक ९० मासक स्थान विवरण**—मस्तकमे ७ मास, नेत्रमे ९ मास हानि, मुखमे ८ मास, कण्ठमे ६, हृदयमे १०, उदरमे ११ मास सर्वत्र लाभे, नाभिमे ४ मास, गुह्य स्थानमे ५ मास हानि, जानुमे १४, जाँघमे ११, पैरमे ५ मास कष्ट ।



पौषशुक्लपक्षः ।

संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९३ साल, अं० जनवरी १९८७ ई० ।
"व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमार्चने जपे । आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम् ॥"

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः ध.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	ल. घं. मि.	ने. गते	प्र. ता.	पौषशुक्लपक्षः
१	बृ.	००।२६	प्रा. ६।५८	उ. ४९।५२	रा. २।४५	व्या. ३५।१९	व. ०।२६	मकर	१६।५४।२५	२५।५८	६।४८	५।१२	७।५१	१७	१	द्वितीयाक्षयः दं. ५३।५१ । चन्द्रदर्शनम् । द. ति. ०।२६ उ. ५४।१७ या. । वि. ४ च. वृश्चिके शुक्रः ५१।२४ ।—
२	शु.	४९।३२	रा. २।३७	श्र. ४६।१७	,, १।१९	ह. २३।४७	तै. २१।५५	मकर	१७।५५।४१	२६। ०	६।४८	५।१२	७।४६	१८	२	पञ्चकारम्भः (भद्रा) ४६।१७ उ. । दक्षिण-पश्चिमयोर्यात्रा । —(जनवरी १९८७ ई०)
४	श.	४४।४९	,, १२।४४	ध. ४३।१५	,, १२। ६	व. २०।४०	व. १७।११	म. १५। ६	१८।५६।५७	२६। १	६।४८	५।१२	७।४२	१९	३	भ. १७।११ उ. ४४।४९ या. ।
५	र.	४१। १	,, ११।११	श. ४१। ६	,, ११।१३	सि. १४।१०	व. १२।५५	कुम्भ	१९।५८।१३	२६। २	६।४७	५।१३	७।३७	२०	४	गुल्मलतौषधीनां रोपणदिनम् ।
६	च.	३८। ७	,, १०। २	पू. ३९।४३	,, १०।४०	व्य. ८।१९	कौ. ६।३४	कु. २५। ४	२०।५९।२९	२६। ३	६।४७	५।१३	७।३२	२१	५	विषशस्त्रादीनां निर्माणदिनम् ।
७	मं.	३६।२१	,, ९।१६	उ. ३९।२९	,, १०।३५	व. ३।१८	ग. ७।१४	मीन	२२।००।४५	२६। ४	६।४७	५।१३	७।२८	२२	६	परिघयोगक्षयः दं. ५५।५२ । भ. ३६।२१।३० ।
८	बु.	३५।४४	,, ९। ५	रे. ४०।२६	,, १०।५७	शि. ५६। २	वि. ६। ३	मी. ४०।२६	२३। २।१९	२६। ६	६।४७	५।१३	७।२३	२३	७	भ. ६।३ या. । गं. २८।२६ उ. ४३।२६ या. । पञ्चकान्तः (भद्रा) ४०।२६ उ.
९	बृ.	३६।२५	,, ९।२१	अ. ४२।३८	,, ११।५०	सि. ५३।५२	बा. ६। ५	मेष	२४। ३।५३	२६। ७	६।४७	५।१३	७।१९	२४	८	विषशस्त्रादिनिर्माणदिनम् ।
१०	शु.	३८।३३	,, १०।११	भ. ४६। ८	,, १।१३	सा. ५२।४५	तै. ७।२९	मेष	२५। ५।२७	२६। ८	६।४६	५।१४	७।१५	२५	९	विश्वकर्मापूजा ।
११	श.	४१।४२	,, ११।२७	कृ. ५०।४३	,, ३। ३	शु. ५२।२९	व. १०। ८	मे. २१।१७	२६। ७। ०	२६। ९	६।४६	५।१४	७।१०	२६	१०	भ. १०।१८ उ. ४१।४२ या. । **पुत्रदा एकादशीव्रतं सर्वेषाम्** । मन्वादिः : **उ. षा. २ च. मकरे बुधः** ५८।३५ ।
१२	र.	४५।५९	,, १।१०	रो. ५६।१६	,, ५।१६	शु. ५२।५६	व. १३।५१	वृष	२७। ८।३३	२६।१०	६।४६	५।१४	७। ५	२७	११	श्रीनारायण १२ । गोमयेन पारणा । **उत्तराषाढे रविः** १५।६ ।
१३	चं.	५०।५९	,, ३।१०	मृ. ६०।००	अहोरात्र	ब्र. ५४। १	कौ. १८।२९	वृ. २९।२३	२८।१०।३८	२६।११	६।४६	५।१४	७। १	२८	१२	**प्रदोषत्रयोदशीव्रतम्** । दक्षिणदिशि यात्रा । *सौम्यायनसंक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा घं. १२ उ. । मकराक्रांतः†
१४	मं.	५६।२५	,, ५।२०	मृ. २।३०	दि. ७।४६	ऐ. ५५।२४	ग. २३।४२	मिथुन	२९।११।३९	२६।१२	६।४६	५।१४	६।५६	२९	१३	भ. ५६।२५ उ. **चतुर्दशी १४ व्रतम्** । **मासान्तः** । †दिवानादिनं दैत्यानां रजनी प्रारम्भः ३०।२२ उ. ।
१५	बु.	६०।००	अहोरात्र	आ. ९। ४	,, १०।२३	वै. ५६।४०	वि. २९। ३	मि. ५८।५५	०।१२।४९	२६।१४	६।४५	५।१५	८।४६	१	१४	भ. २९।७ या. उ. **षा. २ च. मकरे रवि** ३०।२२, **गुह्यारम्भश्च** ३०।२२ उ. । मु. ४५ फलं समर्घम् ।*
१५	बृ.	१।४८	प्रा. ७।२८	पु. १५।३२	,, १२।५८	वि. ५७।३६	ब. १।४८	कर्क	१।१४।१९	२६।१६	६।४५	५।१५	८।४१	२	१५	पौषी-पूर्णिमा १५ । कौशिकी स्नानम् । **मासादिः** ।

पौष शु. ७ मं. मि. मा. ४३।२

र.	८।२२।००।४५	६१।२१
मं.	११। ४। ८।५७	४१।१०
बु.	८।२२।३४।३६	१०६।८१
बृ.	१०।२५।३१।५३	६।५८
शु.	७। ४।४७।५१	६०।३१
श.	७।२०।५३। ३	६।३३
के.	५।२४।४०। ५	३।११
रा.	११।२४।४०। ५	३।११
प.	२२।१८।५६	

पौष शु. १४ मं. मि. मा. ४३।६

र.	८।२९।११।३९	६१।२२
मं.	११। ९।००।३६	४१। ८
बु.	९। ४।४३।१५	१०३।३१
बृ.	१०।२६।४४।४८	११।४१
शु.	७।११।५७।००	६२।१६
श.	७।२१।३७। १	६।३१
के.	५।२४।१७।५०	३।११
रा.	११।२४।१७।५०	३।११
प.	२२।१८।५७	

आकाशक बात— (काल—पूर्वमे)

याम्यायन—सौम्यायन, याम्यगोल । अशुद्ध—शुद्ध समय । सब ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षक पूर्वार्धमे समान समय, मध्य मे वायुक सञ्चार अधिक । पक्षान्तमे समय सुखद ।

विशेष कथन—कौशिकीस्नान मन्त्र—"गाधिराजसुते देवि, विश्वामित्रमुनेः स्वसः । कुशीकभार्ये, सत्यार्ये पापं मे हर, कौशिकि ! **सामान्य स्वप्न विचार**—श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित, भावित, दोषज, एहिसभमे भावित (अदृश्य वो अश्रुत एहि दूनूसँ विलक्षण), स्वप्नक फल ठीक घटित होइछ । सामान्यतः उज्जर वस्तु देखब नीक (भात, कपास, अस्थि छोड़िकए), कारी पदार्थ देखब अशुभ (ब्राह्मण, हाथी, गायके छोड़िकए) । **अंगस्फुरण फलादि** (आँखि ओर बाँहिमे स्त्रीगणक हेतु विपरीत) हृदय—इच्छापूर्ति, कटि—प्रमोद, नाभि—भार्या-पीड़ा, छाती—विजय, भग—पतिलाभ, पेट—प्रेम, उर—धन, लिंग—पत्नीसौख्य, गुदा—वाहन प्राप्ति, वृषण—सन्तानलाभ, ओष्ठ—लाभ, हनु—भय, मस्तक—भूमिलाभ, ललाट—स्थानलाभ, स्कन्ध—भोग, भ्रूमध्य—सुख, कपोल—शुभ, दक्षिणनेत्र ऊपर—चिन्ता, वामनेत्र ऊपर—प्रिय लाभ, दक्षिणनेत्र अपक्ष—धनागम, वामनेत्र अपक्ष—प्रिय हानि, नेत्रसमीप—मिलन, नेत्रकोण—भार्यालाभ, हस्त—द्रव्यलाभ, भ्रूद्वय—सौख्य, कण्ठ—ऐश्वर्य, ग्रीवा—शत्रु-भय, पृष्ठ—पराजय, मुख—सुभोजन, दक्षिणबाहु—विजय, वामबाहु—हानि, जंघा—स्वामीप्राप्ति, पादोपरि—स्थानलाभ, पादतल—नृपत्व, पादद्वय—शुभ, बाहुमध्य—धनागम, नासिका—प्रीति ।



माघकृष्णपक्षः । सवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० जनवरी १९८७ ई० ।

'श्रावणे वर्जयेत्शाकं दधि भाद्रपदे त्यजेत् । अजा गावो महिष्यश्च ब्राह्मणी च प्रसूतिका । दशरात्रेण शुध्यन्ति भूमिष्ठं च*

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः म. राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	म. अ. घं. मि.	मे. गते	प्र. ता.	
१	शु.	६।४३	दि. ६।२५	पु. २१।२७	दि. ३।१६	प्री. ५८। ५	कौ. ६।४३	कर्क	२।१५।३६	२६।१८	६।४४	५।१६	८।३६	३	१६	**लक्ष्मणसम्वत् प्रारम्भः ८७८ ।**
२	श.	१०।५१	,, ११। ४	श्ले. २४।४१	,,	४।३६	आ. ५७।४०	ग. १०।५१	क. २४।४१	३।१६।५६	२६।१६	६।४४	५।१६	८।३१	४	१७	भ. ४२।३ उ. । ग. १३।४१ उ. २८।४१ या. ।
३	र.	१३।५०	,, १२।१६	म. ३०।३३	रा.	६।५७	सौ. ५६।२६	वि. १३।२५	सिंह	४।१८।१६	२६।२०	६।४४	५।१६	८।२६	५	१८	भ. १३।१५ या. । पश्चिमोदितो बुधः ५।११ । श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
४	चं.	१५।४३	,, १। १	पू. ३३।२३	,,	८। ५	शो. ५४।१२	बा. १५।४३	सि. ४५।४७	५।१६।३८	२६।२१	६।४४	५।१६	८।२१	६	१९	नि. विवाहः ।
५	मं.	१६।१२	,, १।१३	उ. ३४।५८	,,	८।४३	अ. ५०।५५	तै. १६।१२	कन्या	६।२०।५७	२६।२२	६।४४	५।१६	८।१६	७	२०	चुल्लिकास्थापनम् ।
६	बु.	१५।२३	,, १२।५२	ह. ३५।१६	,,	८।४६	सु. ४६।४१	व. ११।२३	कन्या	७।२२।१२	२६।२५	६।४३	५।१७	८।१२	८	२१	भ. १५।२३ उ. ४४।२२ या. । पारस्करमतेन नि. विवाहः ।
७	बृ.	१३।२२	,, १२। ३	चि. ३४।२७	,,	८।२६	धृ. ४१।३४	व. १३।२२	क. ४।५२	८।२३।२७	२६।२८	६।४२	५।१८	८। ७	९	२२	पूर्वदिशि यात्रा कन्यायाम् । ततः पश्चिमदिशि यात्रा तुलायाम् । नि. विवाहः ।
८	शु.	१०।१८	,, १०।४६	स्वा. ३२।३८	,,	७।४५	शू. ३५।४०	कौ. १०।१८	तुला	९।२४।४२	२६।३१	६।४२	५।१८	८। २	१०	२३	शाकाष्टका ८ ।
९	श.	६। ९	,, ९।१०	वि. २९।५७	,,	६।४०	गं. २९। ३	ग. ६। ९	तु. १५।३७	१०।२५।५६	२६।३४	६।४१	५।१९	७।५८	११	२४	भ. ३३।५१ उ. । **श्रवणायां रविः** १७।२१ । अन्वष्टका ६ ।
१०	र.	१।३१	प्रा. ७।१७	अ. २६।३८	सं.	५।२०	वृ. २१।५५	वि. १।३१	वृश्चिक	११।२७।१०	२६।३७	६।४१	५।१९	७।५४	१२	२५	**एकादशीक्षयः** द. ५४।४१ । भ. १।३१ या. । **षट्तिला एकादशीव्रतं स्मार्तानाम्** । द. ति. ५६।१२ उ. ।
१२	चं.	५०।२६	,, २।५२	ज्ये. २२।४९	दि.	३।४८	ध्रु. १४।२३	कौ. २३।२१	वृ. २२।४९	१२।२८।२४	२६।४०	६।४०	५।२०	७।५०	१३	२६	**वैष्णवानां ११ व्रतम्** । ग. १६।४६ उ. ३१।४२ या. । द. ति. ५०।२६ या. ।
१३	मं.	४४।३६	,, १२।३०	मू. १५।३५	,,	१२।५८	व्या. ६।३६	ग. १७।३३	धनु	१३।२९।३८	२६।४२	६।४०	५।२०	७।४५	१४	२७	**हर्षणयोगक्षयः** दं. ५२।१४ । भ. ४४।३६ उ. । **प्रदोषत्रयोदशीव्रतम्** । पूर्वदिशि यात्रा ।
१४	बु.	३८।४४	,, १०। ९	पू. १४।३७	,,	१२।३०	व. ५०।५१	वि. ११।४८	ध. २८।३३	१४।३०।४४	२६।४६	६।३९	५।२१	७।४०	१५	२८	भ. ११।४० या. । **नरकनिवारण चतुर्दशीव्रतम्** ।
३०	बृ.	३३। ८	,, ७।५३	उ. १०।३०	,,	१०।५०	सि. ४३।१६	च. ५।५६	मकर	१५।३१।५०	२६।५०	६।३८	५।२२	७।३५	१६	२९	माघी-अमा. ३० पार्वणम् । घ. ३ च. कुम्भे बुधः ४१।५५ ।

घर-परिवार में आनंद लानेवाली पत्रिका "आनन्द डाइजेस्ट"

माघ. कृ. ५ मं. मि. वा. ४३।११

र.	९। ६।२०।५७	६१।१७
मं.	११।१३।५२। ६	४१। ६
बु.	९।१६।२४।२०	९०।५९
बृ.	१०।२८। ५।३७	११।४५
शु.	७।१९।२०।३८	६४। १
श.	७।२२।१८।१०	५।३४
के.	५।२३।५५।३५	३।११
रा.	११।२३।५५।३५	३।११
प.	२२।१८।५८	—

माघ. कृ. १३ मं. मि. वा. ४३।२१

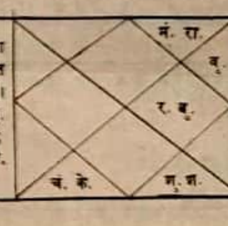
र.	९।१३।२९।३८	६१।१०
मं.	११।१८।४३।३५	४१। ६
बु.	९।२७।९ ।३३	८६।१५
बृ.	१०।२९।२८।४८	१२।३२
शु.	७।२७।००।५७	६६।२१
श.	७।२३।००।३७	६।३३
के.	५।२३।३३।२०	३।११
रा.	११।२३।३३।२०	३।११
प.	२२।१८।५९	—

आकाशक बात-- (काल—पूर्वमे)

सौम्यायन-याम्यगोल, शिशिर ऋतु, शुद्ध समय । सब ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. १८ के बु. पश्चिमोदित ।

मौसम—पक्षधरि समय सुखद आ सुहावन रहत ।

विशेष कथन—शिवलिङ्गपूजातः प्राक् कीर्तिमुखपूजा कर्त्तव्या—पद्मपुराणे ।। शिवप्रदक्षिणा विधिः—'आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा । उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात् प्रदक्षिणाम् । तथा—शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणा ।। 'गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयन्तथा' (पूजा पङ्कजभास्करे) **शिवपूजार्थ शिव-वास-विचार**—शुक्लादि तिथिसंख्याके द्विगुणित करी, ५ ओहिमे जोड़ि दी और सातसँ भाग दी—शेष १-२-३ मात्र शुभ । **नष्ट वस्तु लाभालाभ ज्ञान**—रो, पुष्य तथा उ. फ., वि. पूषा. ध. रे. अन्धाक्ष, पूर्वमे शीघ्र लाभ । मृ. श्ले. ह. अनु. उषा. श. अश्वि. मन्दाक्ष, दक्षिणमे यत्नसँ लाभ । आ. म. चि. ज्ये. अभि. पूभा. भ. मध्याक्ष, पश्चिम दूरमे श्रवण, अलाभ । पुन. पू. फ. स्वा. मू. श्र. उभा. कृ. स्वक्ष, उत्तर, न श्रवण न लाभ । **नक्षत्र भेदसँ ज्वरारम्भक फल**—स्वा. ज्ये. पू. ३, आ. श्ले. अत्यन्त कष्टकारक; रे. अनु. स्थिरता; भ. ध. श. चि. ११ दिन; वि. ह. ध. १५ दिन; मू. कृ. अश्वि. ६ दिन; म. २० दिन; उ. भा., उ. फ. पु. पु. रो. ७ दिन; मृ. उषा. ३० दिन । **सप्त-नाडी चक्र**—कृ. वि. अनु. भ.—चण्डा, रो. स्वा. ज्ये. अश्वि—वायु, मृ. चि. रे.—अग्नि; आ. ह. पूषा. उभा.—सौम्या; पुन., उफ. उषा. पूभा.—नीरा; पुष्य, पूफ. अभि. श.—जला; श्ले, म. श्र. ध.—अमृता ।



ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. म.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः मकर राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	म. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.
१	शु.	२७।५६	सं. ५।४७	ध. ६।४८	दि. ६।२०	व्या. ३६।००	च. ३२।००	म. ३५।१२	१६।३२।५६	२६।५४	६।३७	५।२३	७।३१	१७	३०
२	श.	२३।१९	दि. ३।५७	ध. ३।३६	,, ८। ३	व. २६। ८	कौ. ५३।१९	कुम्भ	१७।३४। २	२६।५७	६।३७	५।२३	७।२७	१८	३१
३	र.	१७।३५	,, २।२६	श. १।१५	,, ७। ९	प. २३।१६	ग. १९।३५	कु. ४५। ४	१८।३५। ८	२७।००	६।३६	५।२४	७।२३	१९	१
४	चं.	१६।४५	,, १।१७	उ. ५९।१०	रा. ६।१५	शि. १८। २	वि. १६।४५	मीन	१९।३६।१७	२७। ३	६।३५	५।२५	७।१८	२०	२
५	मं.	१५। २	,, १२।३६	रे. ५९।५१	,, ६।३१	सि. १३।३६	बा. १५। २	मी. ५९।५१	२०।३७।१९	२७। ६	६।३५	५।२५	७।१४	२१	३
६	बु.	१४।३२	,, १२।३३	अ. ६०।००	अहोरात्र	सा. १०।२२	तै. १४।३२	मेष	२१।३८।१७	२७।१०	६।३४	५।२६	७।१०	२२	४
७	बृ.	१५।१७	,, १२।४०	अ. १।४८	दि. ७।१६	शु. ७।४७	व. १५।१७	मेष	२२।३९।१५	२७।१३	६।३३	५।२७	७। ५	२३	५
८	शु.	१७।२९	,, १।३३	भ. ५। १	,, ६।३३	शु. ६।२८	ब. १७।२९	मे. २१। ६	२३।४०।१३	२७।१६	६।३३	५।२७	७। ०	२४	६
९	श.	२०।४२	,, २।४९	कृ. ९।२०	,, १०।१६	ब्र. ५।५१	कौ. २०।४२	वृष	२४।४१।११	२७।१९	६।३२	५।२८	६।५५	२५	७
१०	र.	२५। ३	,, ४।३३	रो. १४।४३	,, १२।२५	ऐ. ६।११	ग. २५। ३	वृ. ४७।४६	२५।४२। ९	२७।२२	६।३२	५।२८	६।५०	२६	८
११	चं.	३०। २	रा. ६।३२	मृ. २०।५०	,, २।५१	वै. ७। ८	वि. ३०। २	मिथुन	२६।४३। ७	२७।२५	६।३१	५।२९	६।४५	२७	९
१२	मं.	३५।२८	,, ८।४१	आ. २७।२५	,, ५।२८	वि. ८।२४	व. २।४५	मिथुन	२७।४४। ४	२७।२८	६।३०	५।३०	६।४०	२८	१०
१३	बु.	४०।४८	,, १०।४९	पु. ३३।५६	रा. ८। ४	प्री. ९।४८	कौ. ८। ८	मि. २०।१८	२८।४४।५०	२७।३२	६।३०	५।३०	६।३५	२९	११
१४	बृ.	४५।३९	,, १२।४५	पु. ४०।००	,, १०।२९	आ. १०।५७	ग. १३।१४	कर्क	२९।४५।३६	२७।३५	६।२९	५।३१	६।३०	३०	१२
१५	शु.	४९।४१	,, २।२०	श्ले. ४५।२२	,, १२।३७	सौ. ११।३८	वि. १७।३४	क. ४५।२८	००।४६।२२	२७।३८	६।२८	५।३२	कु. ८। ८	१	१३

माघशुक्लपक्षः । संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० जनवरी-फरवरी १९८७ ई० ।
"स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्तते । यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे ।।"—पद्मपुराणे

- ३० मार्गान्मीने गुरुः२३।५७ । **पञ्चकारम्भः** (भदवा) ६।४८ उ. । मूले धनुषि भृगुः २५।१६ । नि. विवाहः ।
- ३१ चन्द्रदर्शनम् ।
- १ पूर्वभाद्रक्षयः दं. ५८।२५ भ. ४८।१० उ. । वदर–३ (फरवरी–२) ।
- २ भ. १६।४५ या. । वदर–४ । कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनम् । नि. विवाहः ।
- ३ **श्रीपञ्चमी । श्रीसरस्वतीपूजनम् ।** गं. ४७।५५ उ. । **पञ्चकान्तः** (भदवा) ५९।५१ उ. ।
- ४ गं. २।५५ या. । नि. विवाहः ।
- ५ भ. १५।१७ उ. ४५।३९ या. **माघीसप्तमी** (अचलासप्तमी) । मन्वादिः ।
- ६ **धनिष्ठायां रविः** २३।४४ । *दिवा घं. १२ या. । **मासादिः** । कलियुगादिः । अश्विन्यां मेषे कुजः ००।४८ ।
- ७ चुल्लिकास्थापनम् ।
- ८ भ० ५७।३२ उ. । नि. विवाहः । उनयनम् । मुण्डनम् ।
- ९ भ. ३०।२ या. । **भैमी एकादशीव्रतम् सर्वेषाम्** । द. ति. ३०।२ उ. । उपनयनम्, मुण्डनम् । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा ।
- १० **श्रीमाधव १२** । गोदुग्धेन पारणा । द. ति. ३५।२८ या. । दक्षिणपश्चिमयोर्यात्रा त्रयोदश्याम् ।
- ११ **प्रदोषत्रयोदशीव्रतम्** । **मासान्तः ।**
- १२ भ. ४५।३९ उ. । । **चतुर्दशी**-१४ **व्रतम्** । **घ. ३ च. कुम्भे रविः** ५५।३६ । मु. १५ फलं महर्घम् ।
- १३ भ. १७।३४ या. । गं. ३४।२२ उ. ४९।२२ या. । **माघी-पूर्णिमा**-१५ । क्षेपस्नानम् । विष्णुपदी संक्रान्तेः पुण्यकालः*

माघ. शु. ५ मं. मि. मा. ४३।३३

र.	९।२०।३७।१९	६१।
मं.	११।२३।३४।१६	४१।३
बु.	१०। ६।१८।५१	४५।४०
बृ.	११।००।४२। ५	१२।३६
शु.	८। ४।५१। २	६७।३१
श.	७।२३।३६। ४	४।३८
के.	५।२३।११। ५	३।११
रा.	११।२३।११। ५	३।११
म.	२२।१९।००	—

माघ. शु. १२ मं. त्रि. मा. ४३।४४

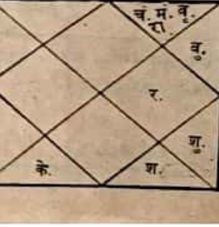
र.	९।२७।४४। ४	६०।५१
मं.	११।२८।२५। ७	४१।३२
बु.	१०।१२।५२।५०	३७।२३
बृ.	११। २।२८।२०	१४।३२
शु.	८।१२।४८। ७	६७।५५
श.	७।२४। ८।४७	४।३६
के.	५।२२।४८।५०	३।११
रा.	११।२२।४८।५०	३।११
म.	२२।१९। १	—

आकाशक वात— **(काल—पूर्व-दक्षिणमे)**

सौम्यायन, याम्यगोल, शिशिर ऋतु, शुद्ध समय, सब ग्रह मार्गी, बु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षभरि समय सुखद आ सुहावन रहत ।

विशेष कथन—अचलासप्तमीमे स्नानमन्त्र (सातटा अकौन तथा सातटा बैरक पात माथपर राखि)—"यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु । तन्मे रोगं च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी ।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः ।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके ! सर्वव्याधिसमायुक्तं हर माकरि, सप्तमि !" एहि सप्तमीमे अरुणोदय कालमे स्नान कएलासँ सूर्यग्रहण स्नान तुल्य फल होइछ । यदि गंगामे स्नान कयल जाय तऽ कोटि सूर्यग्रहण स्नान तुल्य फल होइछ । पञ्च पञ्च उषः कालः सप्तपञ्चारुणोदयः । अष्ट पञ्च भवेत् प्रातः शेषः सूर्योदयो मतः (देवीभागवते) । **बसन्त**—मधु (चैत) आ माधव (बैशाख)सँ बसन्त होइछ । मधु एवं माधव, दूहू शब्द मधुसँ बनल अछि । मधुक अर्थ एक-प्रकारक रस मानल जाइछ जे वृक्ष, लता तथा प्राणी सभकेँ उन्मत्त कऽ दैत अछि, एहि रसक प्राप्ति जाहि ऋतुमे होइछ, ओकरा वसन्त ऋतु कहल जाइछ । **बसन्तपंचमी**—पूर्ण बसन्तमे तऽ नहि पड़ैछ, मुदा वसन्तक प्रभावमे अवश्य पड़ैछ, कारण जे एहि पंचमीक आसन्न वसन्तक कुसुमाकरत्व प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होबय लगैछ—आम्रमे मञ्जरी आबि जाइछ; गुलाब, मालती आदि पुष्पित होबय लगैछ, इत्यादिसँ बसन्तपंचमी नाम कल्पना समुचिते थीक ।



"स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्तते । यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे ।।"—पद्मपुराणे

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. म.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः मकर राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	म. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.	माघशुक्लपक्षः
१	शु.	२७।५६	सं. ५।४७	श्र. ६।४८	दि. ६।२०	व्य. ३६।००	व. ३२।००	म. ३५।१२	१६।३२।५६	२६।५४	६।३७	५।२३	७।३१	१७	३०	मार्गान्मीने गुरु:२३।५७ । **पञ्चकारम्भः** (भदवा) ६।४८ उ. । मूले धनुषि भृगुः २५।१६ । नि. विवाहः ।
२	श.	२३।१९	दि. ३।५७	ध. ३।३६	,, ८। ३	व. २६। ८	कौ. ५३।१९	कुम्भ	१७।३४। २	२६।५७	६।३७	५।२३	७।२७	१८	३१	चन्द्रदर्शनम् ।
३	र.	१७।३५	,, २।२६	श. १।१५	,, ७। ९	प. २३।१६	ग. १६।३५	कु. ४५। ४	१८।३५। ८	२७।००	६।३६	५।२४	७।२३	१९	१	पूर्वभाद्रक्षयः दं. ५८।२५ भ. ४८।१० उ. । बदर–३ (फरवरी–२) ।
४	चं.	१६।४५	,, १।१७	उ. ५९।१०	रा. ६।१५	शि. १८। २	वि. १६।४५	मीन	१९।३६।१७	२७। ३	६।३५	५।२५	७।१८	२०	२	भ. १६।४५ या. । बदर–४। कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनम् । नि. विवाहः ।
५	मं.	१५। २	,, १२।३६	रे. ५९।५१	,, ६।३१	सि. १३।३६	वा. १५। २	मी. ५९।५१	२०।३७।१९	२७। ६	६।३५	५।२५	७।१४	२१	३	**सीर ५पञ्चमी । श्रीसरस्वतीपूजनम् ।** ग. ४७।५५ उ. । **पञ्चकान्तः** (भदवा) ५९।५१ उ. ।
६	बु.	१४।३२	,, १२।३३	अ. ६०।००	अहोरात्र	सा. १०।२२	तै. १४।३२	मेष	२१।३८।१७	२७।१०	६।३४	५।२६	७।१०	२२	४	ग. २।५५ या. । नि. विवाहः ।
७	बृ.	१५।१७	,, १२।४०	अ. १।४८	दि. ७।१६	शु. ७।४७	व. १५।१७	मेष	२२।३९।१५	२७।१३	६।३३	५।२७	७। ५	२३	५	भ॰ १५।१७ उ. ४५।३९ या. **माघीसप्तमी** (अचलासप्तमी) । मन्वादिः ।
८	शु.	१७।२९	,, १।३३	भ. ५। १	,, ९।३३	शु. ६।२४	व. १७।२९	मे. २१। ६	२३।४०।१३	२७।१६	६।३३	५।२७	७। ०	२४	६	**धनिष्ठायां रविः** २३।४४ । *दिवा घं. १२ या. । **मासादिः ।** कलियुगादिः । अश्विन्यां मेषे कुजः ००।४८ ।
९	श.	२०।४२	,, २।४९	कृ. ९।२०	,, १०।१६	ब्र. ५।५१	कौ. २०।४२	वृष	२४।४१।११	२७।१९	६।३२	५।२८	६।५५	२५	७	चुल्लिकास्थापनम् ।
१०	र.	२५। ३	,, ४।३३	रो. १४।४३	,, १२।२५	ऐ. ६।११	ग. २५। ३	वृ. ४७।४६	२५।४२। ९	२७।२२	६।३२	५।२८	६।५०	२६	८	भ० ५७।३२ उ. । नि. विवाहः । उनयनम् । मुण्डनम् ।
११	चं.	३०। २	रा. ६।३२	मृ. २०।५०	,, २।५१	वै. ७। ८	वि. ३०। २	मिथुन	२६।४३। ७	२७।२५	६।३१	५।२९	६।४५	२७	९	भ. ३०।२ या. । **भैमी एकादशीव्रतम् सर्वेषाम् ।** द. ति. ३०।२ उ. । उपनयनम्, मुण्डनम् । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा ।
१२	मं.	३५।२८	,, ८।४१	आ. २७।२५	,, ५।२८	वि. ८।२४	व. २।४५	मिथुन	२७।४४। ४	२७।२८	६।३०	५।३०	६।४०	२८	१०	**श्रीमाधव १२।** गोदुग्धेन पारणा । द. ति. ३५।२८ या. । दक्षिणपश्चिमयोर्यात्रा त्रयोदश्याम् ।
१३	बु.	४०।४८	,, १०।४९	पु. ३३।५६	रा. ८। ४	प्री. ९।४८	कौ. ८। ८	मि. २०।१८	२८।४४।५०	२७।३२	६।३०	५।३०	६।३५	२९	११	**प्रदोषत्रयोदशीव्रतम् । मासान्तः ।**
१४	बृ.	४५।३९	,, १२।४५	पु. ४०।००	,, १०।२९	आ. १०।५७	ग. १३।१४	कर्क	२९।४५।३६	२७।३५	६।२९	५।३१	६।३०	३०	१२	भ. ४५।३९ उ. । । **चतुर्दशी-१४ व्रतम् । घ. ३ च. कुम्भे रविः** ५५।३६ । मु. १५ फलं महर्घम् ।
१५	शु.	४९।४१	,, २।२०	श्ले. ४५।२२	,, १२।३७	सौ. ११।३८	वि. १७।३४	क. ४५।२८	००।४६।२२	२७।३८	६।२८	५।३२	कु. ८। ८	१	१३	भ. १७।३४ या. । गं. ३४।२२ उ. ४९।२२ या. । **माघी-पूर्णिमा-१५।** क्षेपस्नानम् । विष्णुपदी संक्रान्तेः पुण्यकालः*

माघ. शु. ५ मं. मि. मा. ४३।३३

र.	९।२०।३७।१९	६१। २
मं.	११।२३।३४।१६	४१।३१
बु.	१०। ६।१८।५१	४५।४०
बृ.	११।००।४२। ५	१२।३९
शु.	८। ४।५१। २	६७।३१
श.	७।२३।३६। ४	४।३८
के.	५।२३।११। ५	३।११
रा.	११।२३।११। ५	३।११
अ.	२२।१९।००	—

माघ. शु. १२ मं. नि. मा. ४३।४४

र.	९।२७।४४। ४	६०।५१
मं.	११।२८।२५। ७	४१।३२
बु.	१०।१२।५२।५०	३७।२३
बृ.	११। २।२८।२०	१४।३२
शु.	८।१२।४८। ७	६७।५५
श.	७।२४। ८।४७	४।३६
के.	५।२२।४८।५०	३।११
रा.	११।२२।४८।५०	३।११
अ.	२२।१९। १	—

आकाशक वात— (काल—पूर्व-दक्षिणमे)

सोम्यायन, याम्यगोल, शिशिर ऋतु, शुद्ध समय, सब ग्रह मार्गी, बु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षधरि समय सुखद आ सुहावन रहत ।

विशेष कथन—अचलासप्तमीमे स्नानमन्त्र (सातटा अकौन तथा सातटा बैरक पात माथपर राखि)—"यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु । तन्मे रोगं च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी ।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः ।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके ! सर्वव्याधिसमायुक्तं हर माकरि, सप्तमि !" एहि सप्तमीमे अरुणोदय कालमे स्नान कएलासँ सूर्यग्रहण स्नान तुल्य फल होइछ । यदि गंगामे स्नान कयल जाय तऽ कोटि सूर्यग्रहण स्नान तुल्य फल होइछ । पञ्च पञ्च उषः कालः सप्तपञ्चारुणोदयः । अष्ट पञ्च भवेत् प्रातः शेषः सूर्योदयो मतः (देवीभागवते) । **बसन्त**—मधु (चैत) आ माधव (वैशाख)सँ वसन्त होइछ । मधु एवं माधव, दूहू शब्द मधुसँ बनल अछि । मधुक अर्थ एक-प्रकारक रस मानल जाइछ जे वृक्ष, लता तथा प्राणी सभकेँ उन्मत्त कऽ दैत अछि, एहि रसक प्राप्ति जाहि ऋतुमे होइछ, ओकरा वसन्त ऋतु कहल जाइछ । **बसन्तपंचमी**—पूर्ण वसन्तमे तऽ नहि पड़ैछ, मुदा वसन्तक प्रभावमे अवश्य पड़ैछ, कारण जे एहि पंचमीक आसन्न वसन्तक कुसुमाकरत्व प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होबय लगैछ—आम्रमे मञ्जरी आबि जाइछ; गुलाब, मालती आदि पुष्पित होबय लगैछ, इत्यादिसँ वसन्तपंचमी नाम कल्पना समुचिते थीक ।



फाल्गुनकृष्णपक्षः ।

संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० फरवरी १९८७ ई० ।

"व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमार्चने जपे । प्रारब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम् ॥"

ति.	वा.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न.	द. प.	घं. मि.	योगाः यो.	द. प.	करणानि क.	द. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः कुम्भ-राशौ	दि. मा. द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	कु. ल. घ. मि.	ने. गते	अं. ता.	
१	श.	५२।३४	रा. ३।३०	म.	४६।३८	रा. २।१६	शो.	११।२७	व.	२१। ८	सिंह	१।४७। ८	२७।४१	६।२८	५।३२	८। ४	२	१४	विषशस्त्रादिनिर्माणदिनम् ।
२	र.	५४।१७	,, ४।१०	पू.	५२।४६	,, ४।२१	अ.	१०।४१	तै.	२३।२६	सिंह	२।४७।१४	२७।४४	६।२७	५।३३	८। ०	३	१५	मद्यनिर्माणदिनम् ।
३	चं.	५४।४०	,, ४।१६	उ.	५४।३८	,, ४।१८	सु.	८।५०	व.	२४।२६	सि. ८।१४	३।४८।४०	२७।४७	६।२७	५।३३	७।५६	४	१६	भ. २४।२६ उ. ५४।४० या. । द. ति. ५४।४० उ. । द्विरागमनम् । नि.विवाहः । उपनयनम् ।
४	मं.	५३।४५	,, ३।५७	ह.	५५।१४	,, ४।३२	धृ.	५।५७	ब.	२४।१३	कन्या	४।४६।२६	२७।५०	६।२६	५।३४	७।५२	५	१७	**वक्रीबुधः** ३६।५५ । श्रीगणेश ४ व्रतम् । द. ति. ५३।४५ या. ।
५	बु.	५१।३४	,, ३। ३	चि.	५४।३६	,, ४।१७	शू.	२। ३	कौ.	२२।४०	क. २४।५७	५।५०।५२	२७।५४	६।२५	५।३५	७।४८	६	१८	गण्डयोगक्षयः दं. ५५।१३ । पूर्वदिशि यात्रा । उपनयनम्, मुण्डनम्, पारस्करमतेन नि. विवाहः ।
६	बृ.	४८।२२	,, १।४७	स्वा.	५३। २	,, ३।३७	वृ.	५१।३७	ग.	२०।५८	तुला	६।५०।५८	२७।५८	६।२४	५।३६	७।४४	७	१९	भ. ४८।२२ उ. । **शतभिषायां रविः** ३२।५५ । पश्चिमदिशि यात्रा । नि. विवाहः ।
७	शु.	४४।१७	,, १२। ७	वि.	५०।३६	,, २।३८	ध्रु.	४५।१६	वि.	१६।२०	तु. ३६। ३	७।५१।४७	२८। २	६।२४	५।३६	७।४०	८	२०	भ. १६।२० या. । पश्चिमास्तो बुधः ४१।५५ ।
८	श.	३६।२६	,, १०। ६	अ.	४७।२३	,, १।२०	व्या.	३८।२३	बा.	११।२२	वृश्चिक	८।५२।३०	२८। ६	६।२३	५।३७	७।३६	९	२१	शाकाष्टका ८ । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा ।
९	र.	३४। ३	,, ८। ६	ज्ये.	४३।४१	,, १२।००	ह.	३१।००	तै.	६।४५	वृ. ४३।४१	९।५३।१६	२८।१०	६।२२	५।३८	७।३२	१०	२२	अन्वष्टका ९ । गं. ३६।१९ उ. ५१।१९ या. । नि. विवाहः मूले ।
१०	चं.	२८।१७	सं. ५।४०	मू.	३६।३८	,, १०।२२	व.	२३।२०	व.	१।१४	धनु	१०।५४। २	२८।१३	६।२१	५।३९	७।२८	११	२३	भ. १।७ उ. २८।१७ या. । नि. विवाहः ।
११	मं.	२२।२१	दि. ३।१७	पू.	३५।२७	,, ८।३२	सि.	१५।३०	बा.	२२।२१	ध. ४६।२५	११।५४।४७	२८।१६	६।२१	५।३९	७।२४	१२	२४	**विजया एकादशीव्रतम् सर्वेषाम्** । †गोसहस्रिका । मन्वादिः । **कल्याणेश्वरतः परिक्रमारम्भः** ।
१२	बु.	१६।२८	,, १२।५५	उ.	३१।२१	,, ६।५२	व्य.	७।४३	तै.	१६।२८	मकर	१२।५४।५८	२८।२१	६।२०	५।४०	७।२०	१३	२५	**प्रदोषत्रयोदशीव्रतम्** । उ. षा. २ च **मकरे भृगुः** ३३।४५ । नि. विवाहः ।
१३	बृ.	१०।५०	,, १०।३६	श्र.	२७।३५	दि. ५।२१	व.	०। ५	व.	१०।५०	म. ५५।५६	१३।५५। ६	२८।२६	६।१९	५।४१	७।१६	१४	२६	परिघयोगक्षयः दं. ५२।४२ । **शिवरात्रिव्रतम्** । **श्रीगौरीविवाहोत्सवः** । भ. १०।५० उ. ३८।१३ या. । *
१४	शु.	५।३७	,, ८।३३	ध.	२४।१८	,, ४। ६	शि.	४५।५६	श.	५।३७	कुम्भ	१४।५५।२०	२८।३०	६।१८	५।४२	७।१२	१५	२७	शिवदर्शनम् । *पञ्चकारम्भः । (भदवा) २७।३५ उ. ।
३०	श.	१। २	,, ६।४२	श.	२१।४४	,, २।५६	सि.	३६।४६	ना.	१। २	कुम्भ	१५।५५।३१	२८।३४	६।१७	५।४३	७। ८	१६	२८	प्रतिपत्क्षयः दं. ५६।१७ । **फाल्गुनी-अमा-३०** । पार्वणम् । क्षीणोगुरुः १२।२५ उ. । **अग्न्याधारम्भः** १२।२५ उ. ।†

फा. कृ. ४ मं. मि. मा. ४३।५५

र.	१०। ४।४६।२६	६०।४१
मं.	०। ३।१४।४७	४१। ९
बु.	१०।१५।२०। १	१।२७
बृ.	११। ४। ३। ५	१४।२२
शु.	८।२०।५३।५४	६९।५१
श.	७।२४।३८।२९	४।३६
के.	५।२२।२६।३५	३।११
रा.	११।२२।२६।३५	३।११
ग्र.	२२।१९। २	—

फा. कृ. १० मं. मि. मा. ४४।२

र.	१०।११।५४।४७	६०।२४
मं.	०। ७।५३।३१	४१। ९
बु.	१०।१२।१७।१२	४३।२३
बृ.	११। ५।३९। ९	१४।२२
शु.	८।२९। १।३७	७०।२७
श.	७।२५। ३।४०	३।३९
के.	५।२२। ४।१९	३।११
रा.	११।२२। ४।१९	३।११
ग्र.	२२।१९। ३	—

आकाशक बात— **(काल—दक्षिणमे)**

सौम्यायन—याम्यगोल, शिशिरऋतु, शुद्ध-अशुद्ध समय, सबग्रह मार्गी, बु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. १७ के बु. वक्री, ता. २० के बुध पश्चिमास्त ।

मौसम—पक्षभरि बातप्रकोप अधिक । समय समान रहत ।

विशेष कथन—शिवरात्रि—ई सर्वविदिते अछि जे संसारक उत्पत्ति, स्थिति आओर संहार तीनू विभूतिमे क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश छथि । तदनुसार परब्रह्मक जे प्रलयंकारी वा संहारकारी स्वरूप छैन्हि, उएह थिकाह रुद्र अथवा शिव, ओ रुदन करबाक कारण रुद्र आ संसारक हित करबाक कारणें शिव, परस्पर विरोधी नामसें प्रविष्ट भेला पर उपर्युक्त सन्देह भ्रमपूर्णो सिद्ध होइछ । कारण जे बिना विनाश वा प्रलय भेने शिव वा शुभक सृष्टि नहि भय सकैछ, कोनो अन्नक, यावत् ओकर कण पृथ्वीमे भऽ विनष्ट नहि भऽ जाइछ, तावत् अनेक कारणक सृष्टि नहि भऽसकैछ । बीजकें माटिमे मिलि जायब ईश्वरक रुद्र रूप आ पुनः अनेक रूपमे प्रकट भेनाइ शिव रूप थिक । तैं एकहि शक्तिकें रुद्र आ शिव रूप जानल जाइछ, से यथार्थ थिक । एही रुद्र किम्बा शिवक महोत्सवक दिन थिक—शिवरात्रि । लिङ्गपुराणमे कहल गेल अछि जे—हवनक आगि मुहेसें फूकी—हाथ, पंखा, आदिसें नहि । होम एकहि हाथसें करी, आ तर्पण दूहू हाथसें । द्वार अथवा आचार्यक भेदसें दू सहोदरक उपनयन एकहु मण्डपपर भए सकैछ । आचार्य एवं ब्रह्माकें क्षौरादि करएबाक चाही । (ब्रह्मवैवर्त्तपुराण) ।



फाल्गुनशुक्लपक्षः । संवत् २०४३-४४, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० मार्च १९८७ ई० ।

"रतौ सुप्तोत्थिते स्नाते भुक्ते वान्ते च सङ्क्रमे । सभायां विदुषां राज्ञां कुर्यात्ताम्बूलचर्वणम् । *सेवेत कामिनीम् । आयुःक्षयभयाद्विद्वान्नाह्नि*

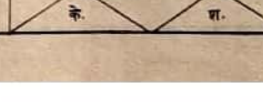
ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घ. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः कुम्भ-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	कु. ल. घं. मि.	ने. गते	चं. ति.	फाल्गुनशुक्लपक्षः
२	र.	५४।३४	रा. ४। ६	पू. २०।५४	दि. २।३६	सौ. ३४।१८	वा. ५।५७	कु. ६।१०	१६।५५।४१	२८।३८	६।१६	५।४४	७। ४	१७	१	चन्द्रदर्शनम् । मार्च–३ ।
३	चं.	५२।५४	,, ३।२६	उ. १६।१५	,, १।५८	शु. २६।४०	तै. २३।४४	मीन	१७।५५।५१	२८।४२	६।१६	५।४४	७। ०	१८	२	द. ति. ५२।५४ उ. । द्विरागमनम् ।
४	मं.	५२।२४	,, ३।१३	रे. १६।४८	,, २। ८	शु. २६।००	व. २३। ६	मी. १६।४२	१८।५६। १	२८।४६	६।१५	५।४५	६।५६	१९	३	भ. २३।६ उ. ५२।२४ या. । ग. ७।४२ उ. २२।४८ या. । द. ति. ५२।२४ या. ।
५	बु.	५३।१३	,, ३।३१	अ. २१।२४	,, २।४८	ब्र. २३।२०	व. २२।४६	मेष	१९।५६। ६	२८।५०	६।१४	५।४६	६।५२	२०	४	**पूर्वभाग्रे रविः** ४८।२३ । पूर्वदिशि यात्रा ।
६	बृ.	५५।२५	,, ४।२३	भ. २४।२०	,, ३।५७	ऐ. २१।४१	कौ. २४।१६	मे. ४०।२१	२०।५६।१७	२८।५४	६।१३	५।४७	६।४८	२१	५	मद्यनिर्माणदिनम् ।
७	शु.	५८।४१	,, ५।४०	कृ. २८।२५	,, ५।३४	वै. २०।५४	ग. २७। ३	वृष	२१।५६।२५	२८।५८	६।१२	५।४८	६।४४	२२	६	भ. ५८।४१ उ. । *पुण्यकालः दिवा घ. १२ या । होलिका दाहः रात्रौ घं. ६ मि. ४३ या. । मन्वादिः ।†
८	श.	६०।००	अहोरात्र	रो. ३३।३७	रा. ७।३६	वि. २१। ३	बि. २६।११	वृष	२२।५६।३३	२९। २	६।१२	५।४८	६।४०	२३	७	भ. २६।११ या. । †**संवत् २०४४ प्रारम्भः** रात्री घं. ६ मि ४३ उ. । **जनकपुरे अन्तर्गृही परिक्रमा** । ††
८	र.	२।५७	दि. ७।२२	मृ. ३६।३६	,, १०। १	प्री. २१।४८	व. २।५७	वृ. ६।३७	२३।५६।४१	२९। ६	६।११	५।४९	६।३६	२४	८	**पूर्वोदितो बुधः** ४४।३७ । पूर्वदक्षिणयोर्यात्राष्टम्याम् । †† **श्रीचैतन्यजयन्ती महोत्सवः** ।
९	चं.	७।५५	,, ९।२१	आ. ४६। ८	,, १२।२७	आ. २३।१०	कौ. ७।५८	मिथुन	२४।५६।४९	२९।१०	६।१०	५।५०	६।३२	२५	९	दीक्षाग्रहणम् ।
१०	मं.	१३।१८	,, ११।२८	पु. ५२।४२	,, ३।१४	सौ. २४।३७	ग. १३।१८	मि. ३६।१४	२५।५६।५६	२९।१४	६। ९	५।५१	६।२८	२६	१०	भ. ४५।५६ उ. दक्षिण-पश्चिमयोर्यात्रा ।
११	बु.	१८।३४	,, १।३४	पु. ५८।५४	,, ५।४२	शो. २५।५९	वि. १८।३४	कर्क	२६।५६।४९	२९।१८	६। ८	५।५२	६।२४	२७	११	भ. १८।३४ या. **आमलकी एकादशीव्रतं सर्वेषाम्** । पश्चिमदिशि यात्रा । द्विरागमनम् ।
१२	बृ.	२३।१५	,, ३।२६	श्ले. ६०।००	अहोरात्र	अ. २६।५५	बा. २३।१५	कर्क	२७।५६।४२	२९।२२	६। ८	५।५२	६।२०	२८	१२	गोविन्द १२ । गवां दध्ना पारणा । **प्रदोषत्रयोदशीव्रतम्** । **मार्गी बुधः** २०।३७ । गं. ५३।२७ उ. ।
१३	शु.	२७। ६	,, ४।५६	श्ले. ४।२७	दि. ७।५४	सु. २७।१३	तै. २७। ६	क. ४।२७	२८।५६।३५	२९।२६	६। ७	५।५३	६।१६	२९	१३	गं. ८।२७ या. । **चतुर्दशी १४ व्रतम्** । **मासान्तः** ।
१४	श.	२९।५०	सं. ६। २	म. ८।५६	,, ६।५४	धृ. २६।३६	व. २९।५०	सिंह	२९।५६।२८	२९।३०	६। ६	५।५४	६।१२	३०	१४	भ. २९।५० उ. । **पू. भा. ४ च. मीने रविः** ४८।२६ । म. ३० फलं साम्यम् ।
१५	र.	३१।३४	रा. ६।४३	पू. १२।२३	,, ११। २	शू. २५। ६	वि. ००।४२	सि. २७।५५	००।५६।२१	२९।३४	६। ५	५।५५	मी. ७।३३	१	१५	भ. ००।४२ या. । **फाल्गुनी-पूर्णिमा १५** । क्षेत्रस्नानम् । पश्चिमास्तो गुरुः १२।२४ । **मासादिः** । षडशीतिसंक्रान्तेः*

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन, याम्यगोल, वसन्त ऋतु, अशुद्ध समय, बु. वक्री, शेष ग्रह मार्गी. । ता. १२ के बु. मार्गी, बु. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. ८ के बु. पूर्वोदित । ता. १५ के बृ. पश्चिमास्त ।

मौसम—पक्षभरि वातप्रकोप अधिक, समय दुःसह । कतहु-कतहु मेघक छाया रहत ।

विशेष कथन—होलिकादहनोत्सवक हेतु पंचमीसँ दस दिन पहिनहिसँ इन्धन (लकड़ी) एकत्र करबाक विधान अछि । पूर्णिमाक रात्रिमे चाण्डाल वा प्रसूतिकाक घरसँ बच्चाक द्वारा आगि मँगबाय गामक बाहर खूब बाजा बजबैत गीत आदि गबैत होलिका जराबक चाही । एहिसँ राक्षसी (होलिका) तृप्त होइछ, आ बालग्रह शान्त होइछ । रात्रिमे ई कार्य कैलाक बाद निर्धारित दिन होलिकोत्सवमे सभ वर्गक लोक सम्मिलित भऽ परस्पर आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा-विनोद आदिसँ उत्सवक शोभा बढ़बैत छथि । प्राचीने कालसँ अबीर उड़ायब, पिचकारी द्वारा जलक्षेपण आदि एहि उत्सवक प्रधान कर्म आबि रहल अछि, जे वसन्तोत्सवक अंग मानल जाइछ । आब तऽ 'होरी खेलब' शब्दे एहि अर्थमे प्रयुक्त भऽ जाइत अछि, वस्तुतः ई उत्सव हँसी-खुशीक संग आमोद-प्रमोदक हेतु अछि । भद्रामे होलिकाक दहन निषेध—"भद्रायां दीपिता होली राष्ट्रभङ्गं करोति वै" तथा च—प्रतिपत्पलमेकं चेद्धोलिदाहो विधीयते । हाहाभूतं जगत्सर्वं दण्डमुण्डं च जायते ॥ होलिकादाहे वायुफलम्—पूर्वे वायुः होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम् । पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्यसम्भवः । यदीशानेऽप्यनावृष्टिरूर्ध्वं राजा समाश्रयेत् ॥



फा. शु. ४ मं. मि. मा. ४४।२३

ग्रह		
र.	१०।१८।५६। १	६०।१
मं.	००।१२।४६। १	३६।१
बु.	१०। ७।३१।११	४३।२
बृ.	११। ७।२०।२१	१४।२
शु.	९। ७।१९। ५	७०।१
श.	७।२५।२३।४७	२।४
के.	५।२१।४२। ३	३।१
रा.	११।२१।४२। ३	३।१
प्र.	२२।१९।४	--

फा. शु. १० मं. मि. मा. ४४।३७

ग्रह		
र.	१०।२५।५६।५६	६०। १
मं.	०।१७।३९।५४	४०।२
बु.	१०। ४।२१।३१	९। ३
बृ.	११। ८।५९। ९	१४।२२
शु.	९।१५।३७। ८	७०।१
श.	७।२५।३९।४६	१।४
के.	५।२१।१९।४८	३।११
रा.	११।२१।१९।४८	३।११
प्र.	२२।१९।४	-

चैत्रकृष्णपक्षः । संवत् २०४४, शकः १९०८, सन् १३९४ साल, अं० मार्च-१९८७ ई० ।

पूर्वं पश्येदनुस्नाता यादृशं नरमङ्गना । तादृशं जनयेत् पुत्रं ततः पश्येत् पतिं प्रियम् ॥—भावमिश्रः ॥

ति.	वा.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	घं. मि.	योगाः यो. द. प.	करणानि क. द. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः मीन-राशौ	दि. मा. द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं. मि.	मी. ल. घं. मि.	मे. गते	अं. ता.	चैत्रकृष्णपक्षः ।
१	चं.	३१।३७	रा. ६।४३	उ. १४।३१	दि. ११।५२	गं. २२।३७	बा. १।३६	कन्या	१।५६।१४	२६।३८	६। ४	५।५६	७।२८	२	१६	**होलिकोत्सवः** (होली), साच-प्रतिपदौदयिकी ग्राह्या । सप्ताङ्कोरकबन्धनम् । वन्दनाभ्रकुसुमपानम् । द. ति. ३१।३६ उ. ।
२	मं.	३०।३५	,, ६।१८	ह. १५।२१	,, १२।१२	वृ. १६। ६	तै. १। ६	क. ४५।११	२।५६।५६	२६।४२	६। ४	५।५६	७।२५	३	१७	भ. ५९।२८ उ. । द. ति. ३०।३५ या. ।
३	बु.	२८।२१	दि. ५।२३	चि. १५। २	,, १२। ४	ध्रु. १४।३७	वि. २८।२१	तुला	३।५५।४४	२६।४६	६। ३	५।५७	७।२१	४	१८	भ. २८।२१ या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् । उत्तरभाद्रे रविः ९।५१ ।
४	वृ.	२५।२१	,, ४। २	स्वा. १३।३६	,, ११।२८	व्या. ९।१७	बा. २५। १	तु. ५६।५७	४।५५।२२	२६।५०	६। २	५।५८	७।१७	५	१९	विपणस्त्रादिनिर्माणदिनम् ।
५	शु.	२०।४८	,, २।२०	वि. ११।१२	,, १०।३४	ह. ३।१५	तै. २०।४८	वृश्चिक	५।५५।००	२६।५४	६। १	५।५९	७।१३	६	२०	वज्रयोगक्षयः दं. ५३।१८ । उत्तरदिशि यात्रान्तराधायाम् ।
६	श.	१५।५०	,, १२।२०	अ. ८।१९	,, ९।२०	सि. ४९।१८	व. १५।५०	वृश्चिक	६।५४।३८	२६।५८	६। ०	६। ०	७। ९	७	२१	भ. १५।५० उ. ४३।४ या. । गं. ५८।४४ उ. ।
७	र.	१०।१९	,, १०। ८	ज्ये. ४।४४	,, ७।५४	व्य. ४१।४५	व. १०।१९	वृ. ४।४४	७।५४।१६	३०। २	६। ०	६। ०	७। ५	८	२२	गं. १३।४४ या. । ध. ३ च. कुम्भे भृगः ४७।४९ । पूर्वोत्तरयोर्यात्रा ।
८	चं.	४।३०	,, ७।४७	मू. ०।४५	प्रा. ६।१७	व. ३४। २	कौ. ४।३०	धनु	८।५३।५३	३०। ५	५।५९	६। १	७। १	९	२३	नवमीक्षयः दं. ५३।५७ । पूर्वाषाढक्षयः दं. ५५।४८ । उत्तरदिशि यात्रा ।
१०	मं.	५२।३१	रा. २।५८	उ. ५२।२९	रा. २।५८	प. २६।१५	व. २३।४७	ध. १०।१२	९।५३।३०	३०। ८	५।५८	६। २	६।५७	१०	२४	भ. २३।४७ उ. ५२।३१ या. ।
११	बु.	४६।५१	,, १२।४२	श्र. ४८।३९	,, १।३०	शि. १८।३७	व. १९।४५	मकर	१०।५३।५३	३०।१२	५।५८	६। २	६।५३	११	२५	**पापमोचिनी एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । पञ्चकारम्भः** (भदवा) ४८।३९ उ. । उत्तराग्निना यात्रा ।
१२	वृ.	४१।३५	,, १०।३५	ध. ४४।१४	,, ११।३९	सि. ११।१५	कौ. १४।१३	म. १६।२७	११।५२।१५	३०।१६	५।५७	६। ३	६।४९	१२	२६	नृपदर्शनदिनम् ।
१३	शु.	३६।५७	,, ८।४३	श. ४१।२९	, १०।५६	सा. ४।११	ग. ९।१६	कुम्भ	१२।५१।३७	३०।२०	५।५६	६। ४	६।४५	१३	२७	शुभयोगक्षयः दं. ५३।४१ । भ. ३६।५७ उ. **प्रदोषत्रयोदशीव्रतम्** । **वारुणी योगः** ।
१४	श.	३३।११	,, ७।११	पू. ४०।३८	,, १०।१०	शु. ५२।२५	वि. ५। ४	कु. २४। ६	१३।५०।५९	३०।२४	५।५५	६। ५	६।४१	१४	२८	भ. ५।४ या. **चतुर्दशी १४. व्रतम्** । गृहोपरिध्वजकलशन्यस्तरक्तपताकान्वितस्नुहीधारणम् । कृ. २ च. वृषे कुजः ५९।४७ ।
३०	र.	३०।२३	,, ६।१३	उ. ३९।३८	,, १०।४५	ब्र. ४७।३६	च. १।४७	मीन	१४।५०।२१	३०।२८	५।५४	६। ६	६।३७	१५	२९	चैत्री-अमा-३० । पार्वणम् ।

चै. कृ. २ मं. मि. मा. ४४।५१		
र.	११। २।५६। ६	५९।४५
मं.	०।२२।२४।५८	४०।३३
बु.	१०। ५।५२। २	३८।३०
वृ.	११।१०।४०।३६	१४।२२
शु.	९।२३।५९।२९	७२। ७
श.	७।२५।५०।४४	०।४४
के.	५।२०।५७।३३	३।११
रा.	११।२०।५७।३३	३।११
म.	२२।१९। ६	—

चै. कृ. १० मं. मि. मा. ४५। ४		
र.	११। ९।५३।३०	५९।३०
मं.	०।२७। ९।४२	४०।४०
बु.	१०।१२। ११। ४	५३।५६
वृ.	११।१२।२२।२१	१४।२६
शु.	१०। २।२०।४९	७२। ७
श.	७।२५।५७।३६	०।४७
के.	५।२०।३५।१८	३।११
रा.	११।२०।३५।१८	३।११
म.	२२।१९। ७	.

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन-याम्यगोल, वसन्तऋतु, अशुद्ध समय । सब ग्रह मार्गी बृ. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षभरि तापमान अधिक होयत । पक्षान्तमे तापमान अल्प रहत । समय सुखद रहत ।

विशेष कथन—**तडागारम्भे सर्वभाव** गणना—स्थान-नक्षत्रफलानि क्रमशः—पूर्वं २ जलशोष, अग्नि. ३ बहुजल, दक्षिण २ जलनाश, नै. २ अमृतजल, पश्चिम ३ जल, वा. २ जलशोष, उत्तर ३ स्थिर जल, ई० ३ जलशोष, मध्य ५ पूर्ण जल, बाह्य ३ अमृतजल । **कूपारम्भ रोहिणीभात्**—प्रत्येक ३-३ मे क्रमशः—स्वादु जल, निर्जल, क्षारु जल, निर्जल, अमृतजल, निर्मल जल, **जलहानि**, मधुरजल, क्षारजल । **कूपखनन दिक् फलम्**—कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः । सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च सम्पत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ॥ दिशाक वश **शुभाशुभ वृक्ष**—पूर्वमे अश्वत्थ (पीपर), दक्षिणम प्लक्ष (पाकड़ि), पश्चिममे वट (बड़) तथा उत्तरमे उदुम्बर (गूलर) अशुभ । ई वृक्ष सभ क्रमशः—**पश्चिम, उत्तर**, पूर्व तथा दक्षिणमे शुभ कहल गेल अछि । **गृहसमीप अशुभ वृक्ष**—काँट बड़ला, दूध बड़ला तथा फल बड़ला **वृक्ष बहुत** संहिताक अनुसार अशुभ । पुन्नाग, अशोक, अरिष्ट, बकुल, कटहर, शमी, आ सान शुभ मानल गेल अछि । लिंगपुराणानुसार—केराक वन गृह समीप निषेध अछि । **संहितानुसार**—जलाशय वास्तुमे केवल उत्तर आ ईशान दिशामे शुभप्रद होइछ ।



चैत्रशुक्लपक्षः।

संवत् २०४४, शकः १९०८–९, सन् १३९४ साल, अं० अप्रैल १९८७ ई० ।

"सर्वे वं सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥"

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न.	दं. प.	घं. मि.	योगाः यो.	द. प.	करणानि क.	दं. प.	राशयः रा.	द. प.	सूर्यांशाः मी. मे. राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घंमि.	सू. अ. घं. मि.	मी. ल. घं. मि.	नै. गते	अं. ता.	चैत्रशुक्लपक्षः
१	चं.	२८।४२	दि. ५।१९	रे.	३९।४८	रा. ९।४५	ऐ.	४३।४३	व.	२८।४२	मी.	३९।४८	१५।४९।४३	३०।३२	५।५०	६।१०	६।३३	१६	३०	वासन्तीयनवरात्रारम्भः । दुर्गोत्सवः कलशस्थापनम् । गं. २७।४८ या. ।*
२	मं.	२८।१४	,, ५।११	ध.	४१।१२	,, १०।२२	वै.	४०।५१	कौ.	२८।१४	मेष.		१६।४९। ५	३०।३६	५।५३	६। ७	६।२९	१७	३१	चन्द्रदर्शनम् । रेवत्यां रविः ३६।१८ । द. ति. २८।१४ या. ।
३	बु.	२९। ३	,, ५।२९	श.	४३।५३	,, ११।२५	वि.	३८।५६	ग.	२९। ३	मे.	५९।५१	१७।४८।१०	३०।४०	५।५२	६। ८	६।२५	१८	१	वक्री शनिः ३।१८ । (अप्रैल-४) मन्वादिः ।
४	बृ.	३१।१४	रा. ६।२१	कृ.	४७।४४	,, १२।५७	प्री.	३८। ४	व.	०। ८	वृष		१८।४७।१५	३०।४४	५।५१	६। ९	६।२१	१९	२	भ. ०।८ उ. ३१।१३ या. । *४२।४८ या. । द. ति. २८।४२ उ. ।††
५	शु.	३४।२७	,, ७।३७	रो.	५२।४४	,, २।५६	आ.	३८। २	व.	२।५०	वृष		१९।४६।२०	३०।४८	५।५०	६।१०	६।१७	२०	३	पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा । †† पञ्चकान्तः (भद्रा) ३९।४८ उ. ।
६	श.	३८।४१	,, ९।१८	मृ.	५८।३६	,, ५।१६	सौ.	३८।४७	कौ.	६।२४	वृ.	२५।४०	२०।४५।२५	३०।५२	५।५०	६।१०	६।१३	२१	४	सूर्यषष्ठी ६ व्रतम् । (वासन्तीयरविषष्ठी ६) सायंकालीनार्घदानम् ।
७	र.	४३।३७	,, ११।१६	आ.	६०।००	अहोरात्र	शो.	४०। ३	ग.	११। ९	मिथुन		२१।४४।३०	३०।५६	५।४९	६।११	६। ९	२२	५	भ. ४३।३७ उ. । प्रातःकालीनार्घदानम् । सूर्यषष्ठी व्रतस्य पारणा ।
८	चं.	४८।५३	,, १।२१	आ.	५।००	दि. ७।४८	अ.	४१।३८	वि.	१६।१५	मि.	५४।५७	२२।४३।३५	३१।००	५।४८	६।१२	६। ५	२३	६	भ. १६।१५ या. अशोकाष्टमी ८ । अशोककलिकापानम् । ब्रह्मपुत्रस्नानम्
९	मं.	५३।५९	,, ३।२३	पु.	११।३६	,, १०।२५	सु.	४३। ५	वा.	२१।२६	कर्क		२३।४२।३९	३१। ४	५।४७	६।१३	६। १	२४	७	श्रीरामनवमीव्रतम् । श्रीहनुमद्ध्वजारोपणम् ।
१०	बु.	५८।३६	,, ५।१२	पु.	१७।५८	,, १२।५७	धृ.	४४।१२	तै.	२६।१८	कर्क		२४।४१।३२	३१। ८	५।४६	६।१४	५।५७	२५	८	पश्चिमदिशि यात्रा ।
११	बृ.	६०।००	अहोरात्र	श्ले.	२३।३८	,, ३।१३	शू.	४४।४६	व.	३०।२९	क.	२३।२८	२५।४०।२४	३१।१२	५।४६	६।१४	५।५३	२६	९	भ. ३०।२९ उ. । गं, १२।३८ उ. २७।३८ या. ।
११	शु.	२।२१	दि. ६।४१	म.	२८।२४	,, ५। ७	गं.	४४।२८	वि.	२।२१	सिंह		२६।३९।१६	३१।१६	५।४५	६।१५	५।४९	२७	१०	भ. २।२१ या. कामदा एकादशीव्रतं सर्वेषाम् ।
१२	श.	४।५७	,, ७।४३	पू.	३२। ३	रा. ६।३३	वृ.	४३।१८	वा.	४।५७	सि.	४७। ६	२७।३८। ८	३१।२०	५।४४	६।१६	५।४५	२८	११	श्रीविष्णु १२ गोघृतेन पारणा । प्रदोषत्रयोदशी १३ व्रतम् । पूर्वास्तो बुधः ५३।४६ ।
१३	र.	६।२२	,. ८।१६	उ.	३४।३०	,, ७।३१	ध्रु.	४१। ६	तै.	६।२२	कन्या		२८।३७।००	३१।२४	५।४३	६।१७	५।४१	२९	१२	चतुर्दशी १४ व्रतम् । मदनभञ्जिका १३ । कन्दर्पपूजा । महावीर जयन्ती
१४	चं.	२।५०	,, ६।५०	ह.	३४।३४	,, ७।३२	व्या.	३७।५४	व.	२।५०	कन्या		२९।३५।५२	३१।२८	५।४२	६।१८	५।३७	३०	१३	भ. २।५० उ. ३४।७ या. । गोष्ठानय सतसगाः । गोष्ठालये सत्संगः । मासान्तः ।
१५	मं.	५।२४	,, ७।५२	चि.	३५।२९	,, ७।५४	ह.	३३।४२	व.	५।२४	क.	५। २	०।३४।४४	३१।३२	५।४२	६।१८	मे. ६।५९	१	१४	चैत्री-पूर्णिमा–१५ क्षेत्रस्नानम् । अश्विन्यां मेषे रविः १०।१४ मु. ३०फलं साम्यम् पर्वविषुवसंक्रान्तेः पुण्यकालः †

चैं. शु. २ मं. मि. भा. ४५।१८

र.	११।१६।४९। ५	५९।१४
मं.	१। १।५९। ९	४१। १
बु.	१०।२०। ९।३९	८७।५७
बृ.	११।१४। ३।१३	१४।२६
शु.	१०।१०।४७।५७	४२।४३
श.	७।२५।५७।१९	०।११
के.	५।२०।१३। ३	३।११
रा.	११।२०।१३। ३	३।११
अ.	२२।१९। ८	—

चैं. शु. १५ मं. मि. भा. ४५।४६

र.	०। ०।३४।४४	५८।४२
मं.	१।११।१६। ९	४०।२७
बु.	११।१४।१४।४५	१०४।५३
बृ.	११।१७।२६।४१	१४।२२
शु.	१०।२७।४७। ४	७२।४२
श.	७।२५।४२।४१	२। ६
के.	५।१९।२८।३३	३।११
रा.	११।१९।२८।३३	३।११
अ.	२२।१९।१०	—

चैं. शु. ९ मं. मि. भा. ४५।३२

र.	११।२३।४२।३९	५८।५८
मं.	१। ६।३५।१५	३९।५८
बु.	११। २। ६।२५	९७।५९
बृ.	११।१५।४५।१०	१४।२२
शु.	१०।१९।१६।१६	७२।४२
श.	७।२५।५२।५७	१। ८
के.	५।१९।५०।४८	३।१९
रा.	११।१९।५०।४८	३।११
अ.	२२।१९। ९	—

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन, याम्य-सौम्यगोल, वसन्त ऋतु, अशुद्ध समय। सब ग्रह मार्गी, ता. १ के श. वक्री, बृ. पश्चिमास्त । शेष ग्रह पूर्वोदित । ता. ११ के बु. पूर्वास्त ।

मौसम—पक्षभरि तापमान आ वात प्रकोप अधिक रहत । समय सुखद नहि ।

विशेष कथन—प्रत्येक प्राणीक हृदयकें प्रफुल्लित कैनिहार ओ प्रकृतिक नूतन साज-शृंगारक रचयिता वसन्तक शुक्लपक्ष तथा प्रकाशमय मध्याह्नक समय प्रकट होयब वास्तवमे मार्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामक अनुरूप अछि । हुनक प्राकट्य हेतु एहिसँ अधिक उपयुक्त अन्य कोन समय भऽ सकैत छल ? रामनवमीक दिन—उपवास, जागरण आदि कार्य तप मानल गेल अछि आ पंचामृत स्नान, प्रतिमार्चन तथा हवन आदि यज्ञ आओर प्रतिमा दान, ब्राह्मण-भोजनादि तऽ दान मानल गेल (यज्ञोदानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्——गीता)—असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलभक्षणात् । उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात् ॥ "अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ । चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः॥—लिंगपुराण । अशोककलिकापान-मन्त्रः—त्वमशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव । पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु । नन्दिपुराण—यो वापीमथवा कूपं देशे तोयविवर्जिते । खानयेत् स दिवं याति बिन्दौ बिन्दौ शतं समाः ॥ उच्छिष्टं घृतं न भक्षणीयं तदुक्तं स्मृतिसारे—ताम्रपात्रे पयःपानमुच्छिष्टे घृतभोजनम् । दुग्धे च लवणं दद्यात्सद्यो गोमांसभक्षणम् ॥

† १०।२४ उ. २६।१४ या. । मन्वादिः (सतुआइन) । शकः १९०९ प्रारम्भः ५।२४ उ. ।



वैशाखकृष्णपक्षः । संवत् २०४४, शकः १९०९, सन् १३९४ साल, अं० अप्रेल १९८७ ई० ।

"तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुत्तमम् । द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेकं कलौ युगे ॥"—मनुः ।

ति.	वा.	तिथयः दं. प.		घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.		घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः मेष-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मे. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.
१	बु.	३।४०	दि.	६।५३	स्वा. ३४।१७	रा.	७।२४	व. २८।४१	कौ. ३।००	तुला	१।३३।२०	३१।३६	५।४१	६।१९	६।५६	२	१५
३	बृ.	५५।१४	रा.	३।४६	वि. ३२।१६	,,	६।३४	सि. २२।५२	व. २७।५३	तु. १७।४६	२।३१।५५	३१।४०	५।४०	६।२०	६।५३	३	१६
४	शु.	५०।१२	,,	१।४५	अ. २६।२१	दि.	५।२३	व्य. १६।२४	व. २२।४३	वृश्चिक	३।३०।३०	३१।४४	५।३९	६।२१	६।५०	४	१७
५	श.	४२। ७	,,	१०।२९	ज्ये. २५।४९	,,	३।५८	व. ९।२०	कौ. १६।१०	वृ. २५।४९	४।२९। ५	३१।४८	५।३८	६।२२	६।४६	५	१८
६	र.	३६।३०	,,	८।१४	मू. २१।५४	,,	२।२४	प. १।५७	ग. ९।१९	धनु.	५।२७।४०	३१।५२	५।३८	६।२८	६।४३	६	१९
७	चं.	३२।३४	सं.	६।३९	पू. १७।४८	,,	१२।४४	सि. ४६।३६	वि. ४।३२	ध. ३१।४३	६।२६।१५	३१।५५	५।३७	६।२३	६।४०	७	२०
८	मं.	२६।३१	दि.	४।१२	उ. १३।३८	,,	१०।२९	सा. ३९। १	कौ. २६।३१	मकर	७।२४।५०	३१।५८	५।३६	६।२४	६।३७	८	२१
९	बु.	२०।४९	,,	१।५६	श्र. ९।४३	,,	९।२८	शु. ३१।३७	ग. २०।४९	म. ३७।५८	८।२३।१०	३२। २	५।३६	६।२४	६।३३	९	२२
१०	बृ.	१५।३०	,,	११।४७	ध. ६।१४	,,	८। ५	शु. २४।३९	वि. १५।३०	कुम्भ	९।२१।३०	३२। ५	५।३५	६।२५	६।३०	१०	२३
११	शु.	१०।५०	,,	९।५४	श. ३।१९	,,	६।५४	ब्र. १८।१३	बा. १०।५०	कु. ४६।४०	१०।१९।५०	३२। ८	५।३४	६।२६	६।२७	११	२४
१२	श.	७।४०	,,	८।२२	पू. १।१७	,,	६। ५	ऐ. १२।३०	तै. ६।००	मीन.	११।१८।१०	३२।११	५।३४	६।२६	६।२४	१२	२५
१३	र.	४।४८	,,	७।२८	उ. ००। ५	,,	५।३५	वै. ७।३३	व. ४।४८	मीन	१२।१६।२९	३२।१४	५।३३	६।२७	६।२०	१३	२६
१४	चं.	२।२४	,,	६।३१	रे. ००। १	,,	५।३३	वि. ३।३१	श. २।२४	मी. ०। १	१३।१४।४८	३२।१७	५।३३	६।२७	६।१७	१४	२७
३०	मं.	१।४८	,,	६।१५	अ. १। ८	,,	५।५९	प्री. ००।२७	ना. ७।४८	मेष	१४।१३। ७	३२।२०	५।३२	६।२८	६।१४	१५	२८

- द्वितीयाक्षय: दं. ५६।३२ । पूर्वोदितो शुक्र: ४३।४२ । मासादिः, (जुड़शीतल) ।
- भ. २७।५३ उ. ५५।१४ या. । मेषादित्ये निम्बपत्रद्वययुतमसूरबीजपानम् । पू. भा. ४ च. मीने भृगु: ३५।२६ ।
- श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
- गं. १९।४९ उ. ३४।४९ या. । द. ति. ४२।७ उ. ।
- क्षियोगक्षय: दं. ५२।२४ । भ. ३६।३० उ. । कोकिला ६ । द. ति. ३६।३० या. ।
- भ. ४।३२ या. ।
- पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा-श्रवणायाम् ।
- भ. ४८।९ उ. । **पञ्चकारम्भ:** ९।४३ उ. ।
- भ. १५।३० या. । अश्विन्यां मेषे बुध: २१।१३ ।
- **वरुथिनी एकादशीव्रतं सर्वेषाम्** ।
- **प्रदोषत्रयोदशीव्रतम्** ।
- ग. ४।१८ उ. ३३।२१ या. । गं. ४८।१ उ. । **चतुर्दशी १४ व्रतम्** ।
- गं. ३।१ या. । **सोमवारीव्रतम्** । **भरण्यां रवि:** ५३।१० । **पञ्चकान्त:** (भदवा) ०।१ उ. ।
- आयुष्मान् योगक्षय: दं. ५७।५६ । **वैशाखी अमावस्या** ३० । पार्वणम् ।

वै. कृ. ८ घं. मि. मा. ४५।५९		
र.	०। ७।२४।५०	५८।२५
मं.	१।१५।५६।१०	४०। ७
बु.	११।२७। ३।४९	१११।००
बृ.	११।१९। ६। ५	१४।२२
शु.	११। ६।१४।५३	७३।१९
श.	७।२५।२८। ६	२। ६
के.	५।१९। ६।१८	३।११
रा.	११।१९। ३।१८	३।११
ग.	२२।१९।१२	—

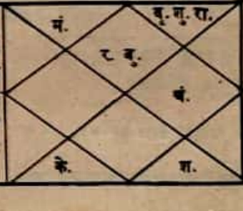
वै. कृ. ३० घं. मि. मा. ४६।१०		
र.	०।१४।१३। ७	५८।१२
मं.	१।२०।३५।५५	४०।१६
बु.	०।१०।१५।१९	१११।४४
बृ.	११।२०।४६।५५	१३।३३
शु.	११।१४।४४।१४	७३।१९
श.	७।२५। ९।१०	४।००
के.	५।१८।४४। ३	३।११
रा.	११।१८।४४। ३	३।११
ग.	२२।१९।१३	—

आकाशक हाल— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन—सौम्यगोल, वसन्तऋतु, अशुद्ध समय, श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षभरि तापमान आ वातप्रकोप अधिक, समय सुहावन नहि ।

विशेष कथन—देवालय, जलाशय, गृहारम्भमे राहुमुख-ज्ञान—देवालयमे मीनक सूर्यसँ ३-३ मास मी. मे. वृ. मे ईशान, मि. क. सिं. मे वायव्य, क. तु. वृ. मे नैऋत्य, ध. म. कु. मे आग्नेय । जलाशयारम्भमे मकरक सूर्यसँ ३-३ मास तथा गृहारम्भमे सिंहक सूर्यसँ ३-३ मास उपर्युक्त दिशामे राहुक मुह रहैत छैक । यत्र राहुमुखं तत्पृष्ठकोणे खातं शुभं भवति । पृष्ठदिशा—ई. वा. नै. अ. कोण मुहक क्रमशः—अ. ई. वा. नै. मानल जाइछ । **इष्टिकाऽरम्भः**—उत्तराश्विशिवे पुष्ये ज्येष्ठान्ते रोहिणीकरे । स्थिरेऽर्केऽर्के गुरौ मन्दे इष्टिकारम्भणं चरेत् ॥ तथा गेहे सुधालेप: इष्टिकारम्भणादिषु ॥ **वारिपूर्णघटदानविधिः**—वारिपूर्णघटाय नमः ३। कुशोपरि ब्राह्मणाय नमः ३। घटं सिक्त्वा अोमद्येत्यादि मेषार्कसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे पुण्यकाले वा अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो मम स्वर्गकामो मेषार्कं व्याप्य प्रत्यहं घटपरिमितजलं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे; ततो दक्षिणां दत्वा पठेत्—" एष धर्मघटो नित्यं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः । अस्य प्रसादात् सफला मम सन्तु मनोरथाः । ददाति यो हि मेषार्के सक्तूनम्बुघटान्वितान् । पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैर्विमुच्यते ॥ "प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका ।"



ति.	वा.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. द. प.	घं. मि.	योगाः यो. द. प.	करणानि क. द. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः मे. राशौ	दि. मा. द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मे. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.	वैशाखशुक्लपक्षः । संवत् २०४४, शकः १९०९, सन् १३९४ साल, ई. अप्रैल-मई १९८७ ई० । स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वै वसुन्धराम् । षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रमिः ॥"—मात्स्ये ।
१	बु.	२।३०	दि. ६।३१	भ. ३।३३	दि. ६।५६	सौ. ५७।२३	व. २।३०	मे. १९।२८	१५।११।१२	३२।२४	५।३१	६।२९	६।११	१६	२९	चन्द्रदर्शनम् ।
२	बृ.	४।३४	,, ७।२१	कृ. ७।१२	,, ८।२४	शो. ५७।११	कौ. ४।३४	वृष	१६। ९।१७	३२।२७	५।३१	६।२९	६। ७	१७	३०	पुष्टो गुरुः ४३।४२ उ. । शुद्धारम्भः ४३।४२ उ. ।
३	शु.	७।४३	,, ८।३५	रो. ११।५९	,, १०।१८	अ. ५७।११	ग. ७।४३	वृ. ४४।४०	१७। ७।२२	३२।३०	५।३०	६।३०	६। ४	१८	१	भ. ३९।५८ उ. अक्षयतृतीया। सत्ययुगादिः । मई—५ । दक्षिणदिशि यात्रा ।
४	श.	११।५३	,, १०।१४	मृ. १७।४१	,, १२।३३	सु. ५९। ६	वि. ११।५३	मिथुन	१८। ५।२७	३२।३३	५।२९	६।३१	६। १	१९	२	भ. ११।५३ या. । दक्षिण-पश्चिमयोर्यात्रा दिवा घं. १० मि. १४ या. ।
५	र.	१६।४५	,, १२।११	आ. २४। २	,, ३। ६	धृ. ५९।३८	बा. १६।४५	मिथुन	१९। ३।३१	३२।३६	५।२९	६।३१	५।५७	२०	३	द. ति. १६।४५ उ. । उपनयनं पञ्चम्यामेव ।
६	चं.	२१।५४	,, २।१४	पु. ३१। ८	,, ५।५५	शू. ६०।००	तै. २१।५४	मि. १२।२२	२०। १।३५	३२।३९	५।२८	६।३२	५।५४	२१	४	द. ति. २१।५४ या. ।
७	मं.	२६।१९	,, ४।००	पु. ३७।००	रा. ८।१६	शू. २।१४	व. २६।१९	कर्क	२०।५९।३९	३२।४२	५।२८	६।३२	५।५१	२२	५	भ. २६।१९ उ. ५८।४४ या. ।
८	बु.	३१।३०	,, ४। ३	श्ले. ४२।५४	,, १०।३७	गं. ३।२६	व. ३१।३०	क. ४२।५४	२१।५७।४१	३२।४६	५।२७	६।३३	५।४८	२३	६	गं. ३१।४४ उ. ४६।५४ या. ।
९	बृ.	३३। ७	रा. ६।४१	म. ४७।५३	,, १२।३५	वृ. ४।१४	बा. २।१६	सिंह	२२।५५।४३	३२।४९	५।२६	६।३४	५।४४	२४	७	नि. विवाहः ।
१०	शु.	३७।४३	,, ८।३१	पू. ५१।४४	,, २। ८	ध्रु. ४।१३	तै. ५।२५	सिंह	२३।५३।४५	३२।५२	५।२६	६।३४	५।४१	२५	८	उपनयनम्, मुण्डनम्, दीक्षाग्रहणम् । नि. विवाहस्चोत्तरफल्गुन्याम् ।
११	श.	३५।२२	,, ७।३४	उ. ५४।२५	,, ३।११	व्या. ३।१९	व. ६।४८	सि. ७।२४	२४।५१।४७	३२।५५	५।२५	६।३५	५।३८	२६	९	भ. ६।४८ उ. ३५।२२ या. । मोहिनी एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । कृ. २ च. वृषे बुधः १०।४० ।
१२	र.	३५।२२	,, ७।३३	ह. ५५।४८	,, ३।४३	ह. १।२३	व. ५।२२	कन्या	२५।४९।४८	३२।५८	५।२४	६।३६	५।३४	२७	१०	वज्रयोगक्षयः द. ५७।५ । मधुसूदन १२ । कुशोदकेन पारणा । षाड्मासिकरविव्रतसमाप्तिः । नि. विवाहः ।†
१३	चं.	३७।५४	,, ८।३४	चि. ५५।५८	,, ३।४७	सि. ५४।३४	कौ. ६।३८	क. २५।५३	२६।४७।४९	३३। १	५।२४	६।३६	५।३१	२८	११	प्रदोष १३ व्रतम् । कृत्तिकायां रविः ००।३२ । अश्विन्यां मेषे भृगुः १८।५० ।
१४	मं.	३५।३०	,, ७।३५	स्वा. ५४।५९	,, ३।२३	व्य. ४६।१७	ग. ६।४२	तुला	२७।४५।५०	३३। ४	५।२३	६।३७	५।२८	२९	१२	भ. ३५।३० उ. । चतुर्दशी १४ व्रतम् । †दक्षिणदिशि यात्रा ।
१५	बु.	३१।५८	दि. ६। ९	वि. ५३। ८	,, २।३७	व. ४४।११	वि. ३।४७	तु. ३८।३६	२८।४३।५०	३३। ८	५।२२	६।३८	५।२५	३०	१३	भ. ३।४४ या. । वैशाखी-पूर्णिमा—१५ । क्षेत्रस्नानम् । मृ. ३ च. मिथुने कुजः १।१७ ।

वै. शु. ७ मं. मि. मा. ४६।२१		
र.	०।२०।५९।३९	५७।५६
मं.	१।२५।१३।१९	३९।२६
बु.	०।२३।२९।१४	११२।२७
बृ.	११।२२।२६।५७	१२।४३
शु.	११।२३।१४।१५	७३।१९
श.	७।२४।४५।५६	४।००
के.	५।१८।२१।४७	३।११
रा.	११।१८।२१।४७	३।११
ग्र.	२२।१९।१४	—

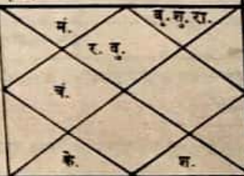
वै. शु. १४ मं. मि.मा. ४६।३२		
र.	०।२७।२४।५०	५७।४५
मं.	१।२९।५०।११	३९।५६
बु.	१। ६।२८।३८	१०३।२३
बृ.	११।२४। ४। ८	१३।३३
शु.	०। १।४६।१७	७२।४३
श.	७।२४।१९।१२	४।५६
के.	५।१७।५९।३१	३।११
रा.	११।१७।५९।३१	३।११
ग्र.	२२।१९।१५	—

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन—सौम्यगोल, वसन्तऋतु, अशुद्ध-शुद्ध समय, श. वक्री. शेष ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षभरि तापमान अधिक, छिट-फुट वर्षाक योग, समय समान ।

विशेष कथन—अक्षय तृतीया वसन्तमे होइछ । भारतीय धार्मिक प्रथाक अनुसार पहिने दान आओर पश्चात् भोजनक नियम अछि तदनुसार कृषिप्रधान देशक हेतु ई ऋतु दानकरबाक लेल प्रशस्ततर अछि । एहि तृतीयामे गंगादि तीर्थस्नान, तर्पण, श्राद्ध तथा अनेक प्रकारक दान अनन्तफलद होइछ । **नृसिंहावतार—**भगवानक १० अथवा २४ अवतारमे चारिटा मुख्यतया अनुग्रहावतार छैन्हि—राम, कृष्ण, नृसिंह तथा वामन । एही हेतु वैष्णवक ओतय चारिटा जयन्ती महोत्सव विशेष मान्य अछि । भगवान् नृसिंह भक्त प्रह्लादक रक्षा ओर दुष्ट दैत्य हिरण्यकशिपुक वधक हेतु अवतीर्ण भेल छलाह । प्रह्लादक कथासँ सब परिचित छथि । श्रीनृसिंह भगवानक कथनानुसार, प्रह्लाद पूर्व कल्पमे ब्राह्मण छलाह, पढ़ल-लिखल नहि छलाह, नाम छलन्हि–वासुदेव; आ' दुश्चरित्र छलाह । मुदा पूर्व जन्ममे भगवानक व्रती छलाह । व्रतहिक प्रभावसँ हुनकामे भक्ति भेलैन्हि आ हुनक अत्यन्त प्रिय भेलाह । एहि पक्षमे श्रीजनज्जननी जानकीजीक जन्म मिथिलामे भेल छैन्हि । वर्षाक शकुन–लोष्ट परीक्षा—पूर्णकुम्भाद्घटस्थाप्यं मृत्पिण्डानां चतुष्टयम् । आषाढ़ादिचतुर्मासनामचिह्नं पृथक् कृतम् ॥ कुम्भे सवञ्जलेनार्द्रा यावन्तः पिण्डिका मृदः । वृष्टिस्तावत्सु मासेषु शुष्के पिण्डे न वर्षणम् ॥"



ज्येष्ठकृष्णपक्षः । संवत् २०४४, शकः १९०९, सन् १३९४ साल, बं० मई–१९८७ ई० ।
"न क्षीरे लवणं दद्यान्न ताम्रे गुडमेव च । क्षीरं तथाऽमिषं भुक्त्वा न भुञ्जीत कदाचन ॥"—व्यास ।

तिथयः				नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	राशयः	सूर्यांशाः	दि. मा.	सू. उ.	सू. अ.	मे. ल.	मे.	घं.	
ति.	वा.	दं. प.	घं. मि.	न. दं. प.	घं. मि.	यो. दं. प.	क. दं. प.	रा. द. प.	मे. वृ. राशौ	दं. प.	घं.मि.	घं. मि.	घं. मि.	गते	ता.	
१	बृ.	२७।३५	दि. ४।२४	म. ५०।२२	रा. १।३१	प. ३७।५४	कौ. २७।३५	वृश्चिक	२६।२५।५०	३३।११	५।२२	६।३८	५।२२	३१	१४	मासान्तः ।
२	शु.	२२।२६	,, २।२१	ज्ये. ४६।५८	,, १२। ८	शि. ३१। २	ग. २२।२६	वृ. ४६।५८	०।२६।२०	३३।१४	५।२१	६।३६	वृ. ७।११	१	१५	भ. ४६।३६ उ. । पश्चिमोदितो बुधः ४।३२ । कृ. २ च. वृषे रविः २७।३४ मु. १५ फलं महर्घम् । विष्णुपदी*
३	श.	१६।४६	,, १२। ५	मू. ४३। ७	,, १०।३६	सि. २३।४७	वि. १६।४६	धनु	१।२०।५०	३३।१७	५।२१	६।३६	७। ७	२	१६	भ. १६।४६ या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् । मासादिः । द. ति. १६।४६ उ. ।
४	र.	१०।४१	,, ९।३६	पू. ३९। १	,, ८।५६	सा. १६।१९	बा. १०।४१	ध. ५२।५८	२।२७।२०	३३।२०	५।२०	६।४०	७। ३	३	१७	द. ति. १०।४० या. । नि. विवाहः ।
५	चं.	४।३६	,, ७।११	उ. ३४।५१	,, ७।१५	शु. ८।३४	तं. ४।३६	मकर	३।२७।५०	३३।२३	५।१९	६।४१	६।५९	४	१८	षष्ठीक्षयः दं. ५३।५४ । भ. ५८।३३ उ. पारस्करमतेन नि. विवाहः ।
७	मं.	५२।४४	रा. २।२५	श्र. ३०।५३	दि. ७।३६	शु. १। १	वि. २५।३६	म. ५६।३५	४।२८।२०	३३।२६	५।१८	६।४२	६।५५	५	१९	ब्रह्मयोगक्षयः दं. ५२।३८ । भ. २५।३६ या. । नैऋत्यामगस्त्यास्तः । पञ्चकारम्भः (भदवा) ३०।५३ उ. ।
८	बु.	४७।२१	,, १२।२४	ध. २८।१७	,, ४।३७	ऐं. ४६।३५	बा. २०। ३	कुम्भ	५।२५।४८	३३।२८	५।१८	६।४२	६।५१	६	२०	नृपदर्शनदिनम् । *संक्रान्तेः पुण्यकालः दं. १६।३४उ. ३५।३४ या. । गं. ४०।५८ उ. ५५।५८ या. । द्वापरयुगान्तः ।
९	बृ.	४२।३४	,, १०।२०	श. २४।११	,, २।५८	वै. ४०। ८	तै. १४।५८	कुम्भ	६।२३।१९	३३।३०	५।१८	६।४२	६।४७	७	२१	लतापादपादिरोपणम् ।
१०	शु.	३८।३८	,, ८।४५	पू. २६।००	,, ४।५४	वि. ३७।२०	व. १०।३६	कु. ७।३३	७।२०।४७	३३।३२	५।१८	६।४२	६।४३	८	२२	भ. १०।३६ उ. ३८।३८ या. । नि. विवाहः ।
११	श.	३५।३६	,, ७।३३	उ. २०।३४	,, १।३१	प्री. २६।१६	ब. ७। ६	मीन	८।१८।११	३३।३४	५।१७	६।४३	६।३६	९	२३	अपरा एकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम् ।
१२	र.	३३।४८	सं. ६।४८	रे. २०।१४	,, १।२३	आ. २५। ५	कौ. ४।४४	मी. २०।१४	९।१५।३८	३३।३६	५।१७	६।४३	६।३५	१०	२४	गं. ८।१४ उ. २३।१४ या. । पञ्चकान्तः (भदवा) समाप्तिः २०।१४ उ. । नि. विवाहः । उत्तरदिशि यात्रा †
१३	चं.	३३।१०	,, ६।३२	अ. २१। ८	, १।४३	सौ. २१।५५	ग. ३।२६	मेष	१०।१३। ५	३३।३८	५।१६	६।४४	६।३१	११	२५	भ. ३३।१० उ. । रोहिण्यां रविः ३२।५० । प्रदोष १३ व्रतम् । उत्तरदिशि यात्रा । †त्रयोदश्याम् ।
१४	मं	३३।४८	,, ६।४७	भ. २३।१५	,, २।३४	शो. १९।४२	वि. ३।२६	मे. ३९। ६	११।१०।३२	३३।४०	५।१६	६।४४	६।२७	१२	२६	भ. ३।२६ या. । चतुर्दशी १४ व्रतम् । मृ. ३ च. मिथुने बुधः ४०।५० । वुद्धिकास्थापनम् ।
३०	बु.	३५।४६	रा. ७।३४	कृ. २६।४१	,, ३।५६	अ. १८।३५	च. ४।४७	वृष	२। ७।४६	३०।४२	५।१६	६।४४	६।२३	१३	२७	ज्येष्ठी अमा ३० । पार्वणम् । वटसावित्रीव्रतम् ।

ज्ये. कृ. ७ मं. मि. मा. ४६।४३		
र.	१। ४।२८।२०	५७।३४
मं.	२। ४।२६।२६	३९।३८
बु.	१।१८।४९।३५	१००।२२
बृ.	११।२५।३७।५६	१२।३६
शु.	०।१०।१७।२३	७३।२१
श.	७।२३।४९।५६	४।५८
के.	५।१७।३७।१६	३।११
रा.	११।१७।३७।१६	३।११
ध.	२२।१९।१६	—

ज्ये. कृ. १४ मं. मि. मा. ४६।५०		
र.	१।११।१०।३२	५७।२१
मं.	२। ९। ६।२२	३९।४७
बु.	२।००। ६।१६	६८।१६
बृ.	११।२७। ९।५१	११।५०
शु.	०।१८।४९।३९	७३।२१
श.	७।२३।१०।४८	४।५८
के.	५।१७।१५। १	३।११
रा.	११।१७।१५। १	३।११
ध.	२२।१९।१७	

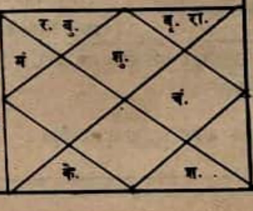
आकाशक बात— (काल—दक्षिण-पश्चिममे)

सौम्यायन-सौम्यगोल, वसन्त-ग्रीष्मऋतु, शुद्ध समय । श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी । बु. पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित । ता. १५ के बु. पश्चिमोदित ।

मौसम—पक्षधरि तापमान आ बसातक आधिक्य, समय समान ।

बहुविवाह दोषमाह(कालिका पुराणे)—बहुदारः पुमान् यस्तु रागादेकां भजेत् स्त्रियम् । स पापभाक् स्त्रीजितश्च तस्याशौचं सनातनम् ॥ यद्दुःखं जायते स्त्रीणां स्वाम्यसंयोगजं विभो । न तस्य सदृशं दुःखं किञ्चिदन्यत्र विद्यते ॥ **असमयसंयोग निषेधः**—सर्वदा यो दिवारात्रौ सन्ध्यायां वनितारतः । सेवते सुरतं तस्मिन् राजयक्ष्मा वसिष्यति ॥ अतएव असमय, दिनमे, प्रातः वा सन्ध्या समय स्त्री-संयोग सर्वथा निषेध कएल गेल अछि । उक्त समयमे स्त्री-संयोगसँ राजयक्ष्मा रोगक संग-संग आयु ओ स्वास्थ्यक हानि होइछ ।

ऋतुमती स्त्रीक संग पहिल, दोसर ओ तेसर दिन संस्पर्श त्याग करी । चारिम दिन स्वामीक संस्पर्शमे ऋतुमती स्त्री आबथि । पाँचम दिनमे देवता-पितरक कार्य योग्य ऋतुमती स्त्री होइत छथि । कारण, भावमिश्रक कथन अछि—"प्रथमेऽहनि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी । तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि शुद्ध्यति ।" व्यासदेवक वाक्य—"भर्तृस्पृश्या चतुर्थेऽह्नि स्नानेन स्त्री रजस्वला । पञ्चमेऽहनि योग्या स्याद्दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥"



संवत् २०४४, शक:१९०९, सन् १३९४ साल, ई० मई-जून १९८७ ई० ।
अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् । परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः वृष-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	वृ. ल. घं. मि.	मे. गते	अं. ता.	ज्येष्ठशुक्लपक्षः ।
१	बु.	३८।४६	रा. ८।४५	रो. ३१।१२	दि. ५।२४	सु. १८।१५	कि. ७।१६	वृष	१३। ५। ५	३३।४४	५।१५	६।४५	६।१६	१४	२८	निर्वेधदिनं विवाहः । पूर्वदिशि यात्रा ।
२	गु.	४२।५१	,, १०।२३	मृ. ३६।४४	रा. ७।५७	धृ. १८।५२	बा. १०।४६	वृ. ३।५८	१४। २।२१	३३।४६	५।१५	६।४५	६।१५	१५	२९	चन्द्रदर्शनम् । नि० विवाहः ।
३	शु.	४०।२४	,, १२।१७	आ. ४२।५६	,, १०।२५	शू. २०। ३	तै. १५।१३	मिथुन	१४।५६।३७	३३।४७	५।१५	६।४५	६।११	१६	३०	पञ्चाग्नि ३ व्रतम् । द० ति० ४७।३५ उ. ।
४	र.	५०।३६	,, १।३०	पु. ५२।३०	,, ११।५०	गं. २१।३७	व. १६। ७	मि. ३४।२२	१५।५६।५३	३३।४८	५।१४	६।४६	६। ७	१७	३१	भ. १६।७ उ. ५०।३६ या. । द० ति० ५०।३६ या. । उमा ४ (उमापूजा) ।
५	चं.	५७।३७	,, ४।१७	पु. ५६।००	,, ३।३८	वृ. २३।१६	व. २४। ८	कर्क	१६।५४। ९	३३।४९	५।१४	६।४६	६। ३	१८	१	जून-६ । उपनयनम्, मुण्डनम्, दीक्षाग्रहणादिनञ्च । देवादिप्रतिष्ठा ।
६	मं.	६०।००	अहोरात्र	श्ले. ६०।००	अहोरात्र	ध्रु. २४।४२	बा. २६।५५	कर्क	१७।५१।२५	३३।५०	५।१४	६।४६	५।५९	१९	२	गं. ५०।८ उ. ।
६	बु.	२। ४	दि. ६। ४	श्ले. १। ८	प्रा. ५।४१	व्या. २५।३८	तै. २। ४	क. १। ८	१८।४८।३४	३३।५२	५।१४	६।४६	५।५५	२०	३	गं. ५।८ या. ।
७	बृ.	५।४४	,, ७।३१	म. ७।१०	दि. ८। ५	ह. २५।४६	व. ५।४४	सिंह	१९।४५।४३	३३।५३	५।१३	६।४७	५।५१	२१	४	भ. ५।४४ उ. ३७।१८ या. । कु० २ च० वृषे भृगुः ५६।१३ ।
८	शु.	८।१३	,, ८।३०	पू. ११।१५	,, ६।४३	व. २५। ६	व. ८।१३	सि. २७।००	२०।४२।५१	३३।५४	५।१३	६।४७	५।४७	२२	५	पूर्वोत्तरयोर्यात्रा—मध्यमा । *व्रतोद्यापनम्, सुरप्रतिष्ठा च।
९	श.	९। ५	,, ८।५१	उ. १४।१४	,, १०।५५	सि. २३।२८	कौ. ९। ५	कन्या	२१।३९।५९	३३।५५	५।१३	६।४७	५।४३	२३	६	गुल्मलतौषधीनां रोपणम् ।
१०	र.	५।१०	,, ७।१७	ह. १५।५४	,, ११।३५	व्य. २०।४९	ग. ५।१०	क. ४६।४६	२२।३७। ७	३३।५६	५।१३	६।४७	५।३९	२४	७	भ. ३४।५४ उ. । उपनयनम्, मुण्डनम्, नि. विवाहः । दीक्षाग्रहणम् देवादिप्रतिष्ठा च । पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा ।
११	चं.	४।३८	,, ७। ४	चि. १६।१९	,, ११।४५	व. १७। ७	वि. ४।३८	तुला	२३।३४।१५	३३।५७	५।१३	६।४७	५।३५	२५	८	भ. ४।३८ या. । मृगशिरसि रविः ३१।५६ । निर्जला एकादशीव्रतम् सर्वेषाम् । मुण्डनम्, उपनयनम्, नि. विवाहः ।*
१२	मं.	५।५४	,, ७।३४	स्वा. १५।३५	,, ११।२६	प. १२।३१	बा. ५।५४	तु. ५८।३८	२४।३१।२३	३३।५८	५।१२	६।४८	५।३१	२६	९	त्रिविक्रम १२ । तिलेन पारणा । अश्विन्यां मेषे गुरुः ४६।४२ । प्रदोष १३ व्रतम् । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा ।
१३	बु.	२।२४	,, ७।१०	वि. १३।१०	,, १०।२८	शि. ८।१३	तै. २।२४	वृश्चिक	२५।२८।२४	३४।००	५।१२	६।४८	५।२७	२७	१०	चतुर्दशीक्षयः दं. ५५।४१। भ. ५८।५ उ. । चतुर्दशी १४ व्रतम् । दीक्षाग्रहणम्, नि. विवाहः ।
१५	बृ.	५२।५७	रा. २।२४	अ. ११।१५	,, ६।४२	सि. ०।५७	वि. २५।३१	वृश्चिक	२६।२५।२५	३४। २	५।१२	६।४८	५।२३	२८	११	भ. २५।३१ या. । ज्येष्ठी—पूर्णिमा–१५ । साध्ययोगक्षयः दं. ५३।१७। तिल दानम् । मन्वादिः । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा।†

आकाशक बात— (काल—पश्चिममे) ।

सौम्यायन—सौम्यगोल, ग्रीष्मऋतु । शुद्ध समय । श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम— पक्षभरि वातप्रकोप अधिक । समय सुखद नहि ।

विशेष कथन—दशहरामे गंगा स्नान—ग्रीष्म ऋतु जकर प्रचण्ड गर्मीसँ युक्त ज्येष्ठ मास—शीतल जलमे साधारण स्नानक हेतु स्वभावतः उपयुक्त अछि, आ गंगाजलमे स्नान त आओरो उत्तम होइछ । गंगाजल वस्तुतः स्वाभाविक रूपमे ग्रीष्ममे प्राप्त होइछ, किएक तऽ श्रेष्ठ गंगोत्तरीसँ पिघलल हिमक जल एहीं ऋतुमे अबैछ । अन्य ऋतुमे हिम पिघलिकऽ गंगाजीक यावन्मात्र जलमे मीलि सकए एकर सम्भावना कम रहैछ । एहि हेतु ज्येष्ठ मासक अभिवर्धमान चन्द्रमासँ युक्त पक्ष एकर उत्पत्तिक समय अछि । भागवतमे लिखल अछि जे गंगा स्नान चलनिहार व्यक्तिकेँ डेग-डेग पर अश्वमेध, राजसूय आदि यज्ञक फल सुलभे रहैत छैन्हि । अन्य महापुराण, महाभारत, रामायण आदिमे गंगाक माहात्म्य भरल पड़ल अछि । आधुनिको विद्वान् गंगाजलक महिमाकेँ पूर्णतः स्वीकार करैत छथि । गंगाक माहात्म्यमे एतेक कहल गेल अछि जे—"तव तटनिकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ।" अर्थात् गंगाक तीरक निकट जनिक निवास हो, हुनक निवास वैकुण्ठ अर्थात् स्वर्ग मानल जाइछ ।



ज्ये. शु. ६ मं. मि. भा. ४६।५५

र.	१।१७।५१।२५	५७।१२
मं.	२।१३।३५।१२	३६।१६
बु.	२। ६।३४।३२	७०। ७
बृ.	११।२८।३८।२५	११।४५
शु.	०।२७।२१।५६	७३।२१
श.	७।२२।४५।४१	४।५८
के.	५।१६।५२।४६	३।११
रा.	११।१६।५२।४६	३।११
भ.	२२।१६।१८	—

ज्ये. शु. १२ मं. मि. भा. ४६।५९

र.	१।२४।३१।२३	५७। ३
मं.	२।१८। ८।००	३६।२८
बु.	२।१६। ६। ७	४१।४८
बृ.	०। ०। ०। ३	१०।४७
शु.	१। ५।५४।००	७३।२१
श.	७।२२।१२।३६	४।५८
के.	५।१६।३०।३१	३।११
रा.	११।१६।३०।३१	३।११
भ.	२२।१९।१९	—

आषाढ़कृष्णपक्षः ।

संवत् २०४४, शके १९०९, सन् १३९४ साल, अं० जून १९८७ ई० ।
गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः । पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ।

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः वृ. मि. राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	वृ. ल. घं. मि.	गते	प्र. ता.	
१	शु.	४७।१५	रा. ११।५३	ज्ये. ८।००	दि. ८।२३	शु. ४७।००	वा. २०।६	वृ. ८।४०	२७।२२।२६	३४। ४	५।११	६।४९	५।१९	२९	१२	गं. २।०० उ. १७।०० या. । विवाहः ।
२	श.	४१। ४	„ ९।३७	मू. ४।१३	„ ६।५२	शु. ३९।३३	तै. १४।१०	धनु	२८।२९।२७	३४। ५	५।११	६।४९	५।१५	३०	१३	उत्तरदिशि यात्रा ।
३	र.	३५। २	„ ७।१२	पू. ००। ७	प्रा. ५।१४	ब्र. ३१।५५	व. ८। ३	ध. १४। ४	२९।१६।२८	३४। ६	५।११	६।४९	५।११	३१	१४	उत्तराषाढ़क्षयः दं. ५५।४९ । भ. ८।३ उ. ३५।२ या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् । (मासान्तः)
४	चं.	२८।५२	दि. ४।४४	उ. ५१।५४	रा. १।५७	ऐ. २४।१९	व. १।५७	मकर	००।१३। ८	३४। ७	५।११	६।४९	मि.७।१२	१	१५	वक्री बुधः १२।४ । मिथुने रविः २७।३४ मु. ३० फलं साम्यम् (षडशीतिसंक्रान्तेः पुण्यकालः २७।३४ उ. । अशोक ४ ।*
५	मं.	२२।५७	„ २।२१	ध. ४८।१२	„ १२।२७	वै. १६।५५	तै. २२।५७	म. २०। ७	१।१०।२८	३४। ८	५।१०	६।५०	७। ८	२	१६	मासादिः । *पञ्चकारम्भः (मदवा) ५१।५४ उ. ।
६	बु.	१६।२७	„ ११।४५	श. ४४।५७	„ ११।१९	वि. ९।५०	व. १६।२७	कुम्भ	२।७ ।२४	३४।१०	५।१०	६।५०	७। ४	३	१७	भ. १६।२७ उ. ४४।३१ या. ।
७	बृ.	१२।३५	„ १०।२२	पू. ४२।३०	„ १०।१०	प्री. ३।१४	ब. १२।३५	कु. २८। ७	३।४ ।२०	३४।११	५।१०	६।५०	७। ०	४	१८	आयुष्मान्योगक्षयः दं. ५४।७ । पश्चिमोदितो बुधः ४९।४ । द. ति. १२।३५ उ. ।
८	शु.	८।३३	„ ८।३५	उ. ४०।५१	„ ९।३०	सौ. ५२।१९	कौ. ८।३३	मीन	४।१ ।१६	३४।१२	५।१०	६।५०	६।५६	५	१९	द. ति. ८।३३ या. ।
९	श.	५।२६	„ ७।१९	रे. ४०।१४	„ ९।१६	शो. ४७।४८	ग. ५।२६	मी. ४०।१४	४।५८।११	३४।१३	५। ९	६।५१	६।५२	६	२०	भ. ३४।२५ उ. । गं. २८।१४ उ. ४३।१४ या. । पञ्चकान्तः (मदवा) ४०।१४ उ. । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा ।
१०	र.	३।२७	„ ६।३२	अ. ४०।५०	„ ९।२९	अ. ४४।१७	वि. ३।२७	मेष	५।५५। ६	३४।१४	५। ९	६।५१	६।४८	७	२१	भ. ३।२७ या. । नि. विवाहः ।
११	चं.	२।३९	„ ६।१९	भ. ४२।४०	„ १०।२३	सु. ४२। ४	वा. २।३९	मे. ५८।२६	३।५२। १	३४।१५	५। ९	६।५१	६।४४	८	२२	**योगिनी एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । आर्द्रायां रविः ३८।८ स्त्रीपुंसयोर्योगः ।**
१२	मं.	३। ८	„ ६।२४	कृ. ४५।४६	„ ११।२७	धृ. ४०।४६	तै. ३। ८	वृष	७।४८।५६	३४।१६	५। ९	६।५१	६।४०	९	२३	**प्रदोषव्रयोदशीव्रतम्** । चुल्लिकास्थापनम् ।
१३	बु.	५। १	„ ७। ९	रो. ४९।५९	„ १। ९	शू. ४०।१८	व. ५। १	वृष	८।४५।४६	३४।१४	५। ९	६।५१	६।३६	१०	२४	भ. ५।१ उ. ३६।२९ या. । **चतुर्दशीव्रतम्** ।
१४	बृ.	७।५७	„ ८।२१	मृ. ५५।१६	„ ६।१६	गं. ४०।४५	श. ७।५७	वृ. २२।५८	९।४२।४०	३४।१२	५।१०	६।५०	६।३२	११	२५	लतापादपादिरोपणम् ।
३०	शु.	११।५४	„ ९।५६	आ. ६०।००	अहोरात्र	वृ. ४१।५४	ना. ११।५४	मिथुन	१०।३९।३२	३४।१०	५।१०	६।५०	६।२८	१२	२६	आषाढ़ी-अमा-३० । पार्वणम् ।

आ. कृ. ५ सं. मि. आ. ४७।१४

ग्र.		
र.	२। ११।१०।२८	५९।५८
मं.	२।२२।४०।१४	३९।२८
बु.	२।१८।१९।२८	००।४९
बृ.	०। ११।१८।५०	९।५४
शु.	१।१४।२५।५५	७२।४५
श.	७।२९।४०।२७	४।५८
के.	५।१६। ८।१६	३।११
रा.	११।१६। ८।१६	३।११
म.	२२।१९।२०	—

आ. कृ. १२ सं. मि. आ. ४७।८

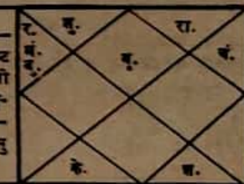
ग्र.		
र.	२। ७।४८।५६	५९।५२
मं.	२।२७।१२।२६	३९। ९
बु.	२।१५।१४।५६	३७।१६
बृ.	०। २।३१।२४	९।००
शु.	१।२२।५९। ७	७३।२४
श.	७।२१। ७।४९	५।५५
के.	५।१५।४५। १	३।११
रा.	११।१५।४५। १	३।११
म.	२२।१९।२१	—

आकाशक बात— (काल—पश्चिममे)

सौम्यायन-सौम्यगोल, ग्रीष्म ऋतु, शुद्ध समय । श. वक्री शेष ग्रह मार्गी, ता. १५ के बु. वक्री, बु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. १८ के बु. पश्चिमास्त ।

मौसम—एहि पक्षमे मेघाडम्बर होयत, समय साधारण रहत ।

विशेष कथन—आर्द्रासँ १० नक्षत्रक स्त्री संज्ञा छैन्हि । यथा आ. पु. पु. श्ले. म. पू. उ. ह. चि. स्वा. । विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा नपुंसक संज्ञक, शेष १४ नक्षत्र— मू. पू. उ. श्र. ध. श. पू. उ. रे. अ. भ. कृ. रो. मृ. पुरुष संज्ञक छथि । स्त्री-पुरुष योगमे वर्षा, स्त्री-नपुंसक योगमे अनावृष्टि तथा स्त्री-स्त्रीक योगमे कदाचित् अल्पवृष्टि होइछ । **शकुन**—आषाढ़कृष्ण अष्टमीक चन्द्रोदय समयमे मेघक दृश्य भेलासँ सुभीक्ष, साफ चन्द्रोदय भेला पर अकाल होइछ । आषाढ़कृष्ण नवमीमे बिजुली भेलासँ नीक वृष्टि होइछ । **पञ्चोपचार**—गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च । पञ्चोपचाराः कथिताः देवानां प्रीतिहेतवे ॥ **सप्तमृत्तिका**—गजाश्वरथ्यावल्मीकसङ्गमाद्ह्रदगोकुलात् । राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥ **सर्वौषधि**—मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् । शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः । **सप्तधान्य**—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च । श्यामाकं चणकं चेति सप्तधान्यमुदाहृतम् ॥ **पञ्चपल्लव**—अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः । पञ्चभङ्ग इति प्रोक्तः सर्वकर्मसु शोभनः । पञ्चरत्न—व. मो. वै. पु. इन्द्रनील ।

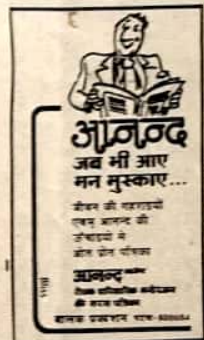


आषाढशुक्लपक्षः ।

संवत् २०४४, शकः १९०९, सन् १३९४ साल, ई० जून-जुलाई १९८७ ई०।

"इक्षुरापः पयोमूलं ताम्बूलं फलमौषधम् । भक्षयित्वापि कर्तव्या स्नानदानादिकाः क्रियाः ॥" —स्नानदीपिकायाम् ।

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न.	दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः मिथुन-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मि. ल. घं. मि.	ने. गते	अं. ता.	
१	श.	१६।३०	दि. ११।४६	आ.	१।२०	प्रा. ५।४२	ध्रु. ४३।२५	व. १६।३०	मि. ५१।११	११।३६।२४	३४। ६	५।१०	६।५०	६।२४	१३	२७	चन्द्रदर्शनम् । क्षीणः शुक्रः २०।३१ उ. । अशुद्धारम्भः ।
२	र.	१६।३७	,, १। २	पु.	७।५०	दि. ८।१६	व्या. ४५। ७	कौ. १६।३७	कर्क.	१२।३३।१६	३४। ८	५।११	६।४६	६।२०	१४	२८	करमूले पुलिकमूलबन्धनम् । **श्रीजगन्नाथरथयात्रा ।** पुनः ४ च. कर्के कुजः ६।१४ ।
३	चं.	२४। २	,, २।४८	पु.	१४।२०	,, १०।५५	ह. ४६।३८	ग. २४। २	कर्क	१३।३०। ८	३४। ७	५।११	६।४६	६।१६	१५	२९	भ. ५७।४ उ. । मृ. ३ च. मिथुने भृगुः ३२।१८ ।
४	मं.	३०।५७	सं. ५।३४	श्ले.	२०।२६	,, १।२१	व. ४७।३६	वि. ३०।५७	क. २०।२६	१४।२६।५९	३४। ६	५।११	६।४६	६।१३	१६	३०	भ. ३०।५७ या. । गं. ६।२६ उ. २४।२६ या. । पश्चिमास्तः कुजः ५४।१६ ।
५	बु.	३४।३७	रा. ७। २	म.	२५।४९	,, ३।३१	सि. ४८।००	व. २।४७	सिंह	१५।२३।५०	३४। ४	५।११	६।४६	६। ८	१७	१	जुलाई मासारम्भः ७ ।
६	बृ.	३७। ८	,, ८। २	पू.	३०।११	,, ५।१५	व्य. ४७।२८	कौ. ५।५३	सिं. ४५।५९	१६।२०।४१	३४। ३	५।११	६।४६	६। ५	१८	२	विपशस्त्रादिनिर्माणदिनम् ।
७	शु.	३८।३४	,, ८।३८	उ.	३३।२४	,, ६।३४	व. ४६।००	ग. ७।५१	कन्या	१७।१७।३१	३४। २	५।१२	६।४८	६। ०	१९	३	भ. ३८।३४ उ. । द. ति. ३८।३४ उ. ।
८	श.	३८।३९	,, ८।४९	ह.	३५।२१	रा. ७।२०	प. ४३।३१	वि. ८।३७	कन्या	१८।१४।२१	३४। १	५।१२	६।४८	५।५६	२०	४	भ. ८।३७ या. । द. ति. ३८।३९ या. ।
९	र.	३३।४३	दि. ६।४१	चि.	३६।००	,, ७।३६	शि. ३९।५९	बा. ६।११	क. ५।४१	१९।११।११	३४।००	५।१२	६।४८	५।५२	२१	५	करमूले पुलिकमूलबन्धनम् ।
१०	चं.	३१।२६	,, ५।४६	स्वा.	३५।२९	,, ७।२४	सि. ३५।३६	तै. २।३५	तुला	२०। ८। १	३३।५९	५।१२	६।४८	५।४८	२२	६	पूर्वोदितो बुधः ४६।५९ । **पुनर्वसौ रविः** ३७।५९ स्त्रीनपुंसकयोर्योगः ।
११	मं.	३१।३६	,, ५।५०	वि.	३३।५५	सं. ६।४६	सा. ३०।१५	व. १।३१	तु. १९।१९	२१। ४।५१	३३।५८	५।१२	६।४८	५।४४	२३	७	भ. १।३१ उ. ३१।३६ या. । **हरिशयनी एकादशीव्रतं सर्वेषाम् ।**
१२	बु.	२७।१६	,, ४। ७	अ.	३१।३३	दि. ५।५०	शु. २४।१५	बा. २७।१६	वृश्चिक	२२। १।४३	३३।५६	५।१३	६।४७	५।४०	२४	८	मार्गी बुधः ३०।५९ वामन १२ । यवचूर्णेन पारणा । **प्रदोष १३ व्रतम् । हरिवासरयोगः** ।
१३	बृ.	२२। ७	,, २। ४	ज्ये.	२८।२४	,, ४।३५	शु. १७।३५	तै. २२। ७	वृ. २८।२४	२२।५८।३५	३३।५५	५।१३	६।४७	५।३६	२५	९	गं. २२।३४ उ. ३७।२४ या. । **चतुर्दशी १४ व्रतम् ।**
१४	शु.	१६।३०	,, ११।४६	मू.	२४।४३	,, ३। ६	ब्र. १०।२७	व. १६।३०	धनु	२३।५५।२७	३३।५४	५।१३	६।४७	५।३२	२६	१०	भ. १६।३० उ. ४३।२८ या. ।
१५	श.	१०।२७	,, ६।२४	पू.	२०।३७	,, १।२८	ऐ. २।५६	ब. १०।२७	ध. ३४।३४	२४।५२।१८	३३।५३	५।१३	६।४७	५।२८	२७	११	वैधृति योगक्षयः दं. ५२।२३ । **आषाढी पूर्णिमा (गुरुपूर्णिमा)** । मन्वादिः ।



आ. शु. ४ मं. मि. आ. ४७।३

र.	२।१४।२६।४६	५६।५१
मं.	३। १।४२।४६	३६। ६
बु.	२।१०।१३।२२	३७।१६
बृ.	०। ३।३७। ३	६। ५
शु.	२। १।३१।२७	७३।२४
श.	७।२०।३७।४७	४।००
के.	५।१५।२३।४६	३।११
रा.	११।१५।२३।४६	३।११
ल.	२२।१६।२२	—

आ. शु. ११ मं. मि. आ. ४६।५६

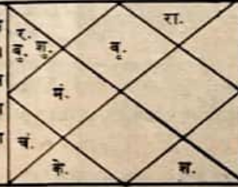
र.	२।२१। ४।५१	५६। १
मं.	३। ६।१३।५६	३६। ६
बु.	२। ७।२१।३८	२।१६
बृ.	०। ४।३६।३५	८।११
शु.	२।१०। ३।४८	७३।२४
श.	७।२०। ६।२१	४।००
के.	५।१५। १।३१	३।११
रा.	११।१५। १।३१	३।११
ल.	२२।१६।२३	—

आकाशक बात— (काल—पश्चिमने)

सौम्यायन, सौम्यगोल, ग्रीष्मऋतु, अशुद्ध समय, बृ. श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. ६ के बु. पूर्वोदित ता. ८ के बु. मार्गी, ता. ३० के मं. पश्चिमास्त ।

मौसम—आकाश मेघाच्छन्न रहत । समय साधारण रहत ।

विशेष कथन—हरिशयनी एकादशीसँ देवोत्थान धरि यज्ञादि (हवन सम्बन्धी) कार्य स्थगित रहैत अछि, कारण जे उक्त समयमे श्रीविष्णु (अग्नि) शयनावस्थामे रहैत छथि तथा 'समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात्' अर्थात् अधकँत आगिमे हवन करी-एहन श्रुति प्रमाण छैक। **पुलिकमूलबन्धन-मन्त्र**—"शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य । नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य ॥" अकृत्वा पुलिकँबन्धं प्रायश्चित्तीयते नरः । चातुर्मास्ये व्यतीते तु मुक्तिस्तस्य करात् भवेत् ॥ सर्पक भयसँ बचबाक हेतु पुलिकमूल (इसरगदक जडी) अवश्य बान्हक चाही। आषाढ़ी पूर्णिमामे पुराणक रचयिता भगवान् श्री वेदव्यासजीक जन्म भेलँन्हि, तँ एहि दिनमे श्री वेदव्यासजीक पूजा कर्तव्य तथा श्रीगुरुदेवक पूजा करब सेहो आवश्यक। श्रीगुरुदेवक पूजा होएबाक कारणे एहि पूर्णिमाक नाम गुरुपूर्णिमा प्रसिद्ध भेल ॥ **शकुन**—आषाढ़शुक्ल नवमीमे यदि बिजुली तथा मेघ नहि होइक त दुर्भिक्ष । पूर्णिमामे वर्षा हो त अन्नक भाव तेज हो। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥



प्रचलित विविध मुहूर्त्त

[**विशेष**—लिखित प्रत्येक मुहूर्तविचारमे त्याज्य अंशवाला केवल त्याज्य बुझी, शेष लिखित सभ विहिते बुझी ।]

शिशुस्तनपान-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उफा. ह. चि अनु. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. । शुभतिथि । शुभदिन । स्थिरलग्न २।५।८।११।

सूतिका-स्नान-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. उत्तर. ३, ह. स्वा. अनु. रे. । तिथि—१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५। दिन सू. मं. बृ. ।

शिशु-विलोकन-मुहूर्त्त

तृतीयमास । तिथि—२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५। दिन—सू. सो. बृ. शु. । दिनमे फल, द्रव्य, वस्त्रसँ युक्त ।

प्रसूती-नखच्छेदन-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उफ. ह. चि. स्वा. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. । तिथि—३।५।७।१०।११। १३। दिन शुभ। लग्न—३।५।११।६।७।८। समय—पूर्वाह्न ।

शिशु-निष्क्रमण-मुहूर्त्त

जन्मसँ चारिम मास तथा यात्रोक्त समय। अथवा बारहम दिन ।

दन्तजनन-फल तथा शान्ति

५ मास धरि अशुभ। छठम माससँ १२म मास धरि शुभ। जन्म कालमे तथा पहिने ऊपरक पंक्तिमे दांत भेलासँ अशुभ होइछ। शान्तिक हेतु शुभ मुहूर्त्त-मे बालकके हाथी वा नदीमे नावपर बैसाकए सर्वौषधि युक्त फल-फूल, पञ्चगव्य, पञ्चरत्न, सप्तमृत्तिका सहित कलश जलसँ स्नान करावी (ब्राह्मण द्वारा), ब्रह्माक पूजाकए ६ दिन धरि ब्राह्मण-भोजन करावी। आठम दिनमे दक्षिणा आदि दी।

अन्नप्राशन-मुहूर्त्त

बालकके छठम माससँ सम मासमे, कन्याकें पञ्चम माससँ विषम मासमे। नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उत्त. ३., चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.। तिथि—२। ३।५।७।१०।१३।१५। शुक्लपक्ष, पूर्वाह्न। शुभ दिन ८ शुद्ध, शुभ लग्न। त्याज्य—जन्मराशि-जन्म लग्नसँ आठम राशिक नवांशवाला लग्न तथा मेष, वृश्चिक, मीन।

विशेष—जन्म नक्षत्रमे अन्नप्राशन शुभ। ताम्बूल भक्षण सेहो अन्नप्राशनक दिन करावी।

कर्णवेध-मुहूर्त्त

जन्म दिनसँ १२।१६म दिनक बाद ६।७।८म मासमे चैत्र, पौष तथा जन्म मास, हरिशयन ओ तिथिक्षयकेँ छोड़िक, तकरा बाद, विषम वर्षमे। नक्षत्र—पुन. अश्वि. ह. पु. अभि. मृ. चि. अनु. रे. श्र. ध.। तिथि—१।२।५।६।७।८।१०।११। १२।१३।१५। दिन—सो. बृ. बृ श.। पक्ष—शुक्ल।
शुभलग्न—२।३।४।[illegible]।६।१२। **विशेष**—कर्णवेध संस्कार याम्यायनमे नहि होइछ, एहिमे केवल अग्रहण ग्राह्य थीक।

प्राथमिक-केशकर्त्तन-मुहूर्त्त

पुत्रक हेतु जन्मसँ सम मास, पुत्रीक हेतु विषम मास। उत्तरायण। शुभदिन सो., बु. बृ. शु.। नक्षत्र—अश्वि. मृ. पु. पु. ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. रे.। त्याज्य तिथि—रिक्ता, ८।३०। समय—पूर्वाह्न। युग्म वर्षत्यागः समाचारात्।

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त

चैत्र छोड़ि उत्तरायणमे पाँचम वर्षमे गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा कुलदेवताक पूजा कए। नक्षत्र—अश्वि. आ. पु. पु. ह. स्वा. वि. अनु. अभि. रे.। तिथि—२।३।५।६।१०।११।१२। शुभलग्न। शुभ दिन। चर रहित शुभलग्न। **विशेष**—उचित मुहूर्त्तमे पाँच वर्षक अभ्यन्तरहु अक्षरारम्भ भए सकैछ।

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त

उत्तरायणमे। गणेश, सरस्वती, लक्ष्मीक पूजा कय। नक्षत्र—मृ. आ. पुन. ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. अश्वि. मूल. पूर्वा. ३, पु. श्ले.। तिथि—२।३।५।६।१०।११।१२। दिन—र. बु. बृ. शु.। शुभ लग्न। शुक्लपक्ष। धनुर्विद्याक हेतु उत्त. ३, रो. रे. अनु. शुभ थिक।

व्रतबन्धन (उपनयन)-मुहूर्त्त

शुद्ध समय (उत्तरायण) नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. पूफा. ह. चि. स्वा. ज्ये. पूषा. श्र. ध. श. पूभा. उभा. रे.। तिथि—२।३।५।१०।११।१२। (प्रदोषरहित)
दिन—सू. चं. बु. बृ. शु.। शुक्लपक्ष तथा कृष्णपक्षमे पंचमी तक। अपराह्न त्याज्य। पूर्वाह्न-मध्याह्न विहित। मन्वादियुगादितिथि रहित।

मतान्तरसँ अस्तगत बुध दिन त्याज्य। सामवेदीक हेतु मंगल दिन शुभ।

जन्म राशिसँ २।५।७।६।११म राशिमे गुरुकेँ रहला पर उत्तम, १।३।६।१० मे मध्यम तथा ४।८।१२ मे निन्दित। मतान्तरसँ केवल २।५।७ तथा नवमराशिस्थ गुरु उत्तम शेष राशिस्थ त्याज्य।

विशेष—स्वोच्चेस्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः। रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥ (मि.चि.) गोचराष्टकवर्गाभ्याम् यदि शुद्धिर्न लभ्यते। तस्योपनयनं कार्यं चैत्रे मीनगते रवौ। (रत्नकोश)
"मधु विनोपवीतस्तु पुनः संस्कारमर्हति।"

मण्डप (मॉड़ब)-निर्माण मुहूर्त्त

विवाहविहित मुहूर्त्तमे विवाहक-मंडप तथा उपनयनक विहित मुहूर्त्तमे उपनयनक मण्डप एवं उद्योगक दिन (बँसकट्टी) आधार यज्ञक मुहूर्त्तमे यज्ञ मण्डप बनाबी। विवाह उपनयनसँ पूर्व ३, ६ तथा ९म दिन मण्डपादिक निर्माण निषेध। दैवज्ञमनोहरः—"चित्रा विशाखा शततारकाश्विनी ज्येष्ठाभरण्यौ शिवभाच्चतुष्टयम्। हित्वा प्रशस्तं फल-तैल-वेदिकाप्रदानकं- कण्डन-मण्डपादिकम् ॥" विवाहपटले—मङ्गलेषु च सर्वेषु मण्डपो गृहमानतः। कार्यः षोडशहस्तो वा द्विषट्हस्तो दशावधि (१६-१२-१०)

वर-वरण (तिलक) मुहूर्त्त

नक्षत्र—कृ. रो. पूर्वा. ३, उत्तरा ३ (आवश्यकमे विवाहक शुभ नक्षत्र सेहो)। शुभ दिन। त्याज्य—रिक्ता, भद्रा, अमा, पात, वैधृति, मासान्त, संक्रान्ति आदि दुष्ट योग। शुभलग्न, शुभसप्ताष्टम शुद्ध। कन्याक आदि दुष्ट योग। शुभलग्न, सप्ताष्टम शुद्ध। कन्याक भ्राता वा ब्राह्मण द्वारा वरके तिलक देबाक चाही।

कन्या-वरण-मुहूर्त्त

वरक तिलक जकाँ कन्याक सेहो वरण कयल जाइछ। वैवाहिक नक्षत्र तथा कृ. पूर्वा ३, स्वा. अनु. उषा. श्र. ध.। शुभ तिथि—दिन। कन्याक वरण वरक पक्षक दिससँ कयल जाइछ।

विवाह-मुहूर्त्त

सौर क्रमसँ वै. ज्ये. आषा. अग्र. माघ. फा. मास। रिक्ता, अमा. रहित तिथि। दिन—र. सो. बु. बृ. शु.। नक्षत्र—रो. मृ. उत्त. ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. (वेध रहित) सप्ताष्टम शुद्ध लग्न। पारस्कर मतसँ अश्वि. चि. श्र. ध.।

द्विरागमन-मुहूर्त्त

सौर वैशा. अग्र. फा. मास। न.—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उत्त. ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे.। विषम वर्ष। दिन—र. सो. बु. बृ. शु.। लग्न—तु. कन्या. मि. मी. म. यात्रोक्त तिथि। कृष्ण ५ तक तृतीयादि विषम वर्षमे शुक्र उदित समय।

द्विरागमनमे १ वर्षक भीतर शुक्रास्तादि दोष नाह् होइछ। दक्षिण-सम्मुख शुक्रमे द्विरागमन निषेध। रेवतीसँ मृगशिरा पर्यन्त शुक्रान्धमे द्विरागमन शुभ।

विवाहक दिनसँ १६ दिनक भीतर २।४।६।८।१०। १२।१४।१६ तथा ५।७।९म दिन वधू प्रवेश। बाद प्रथम मासक भीतर विषमदिनमे। एक मासक बाद १ वर्षक भीतर विषम मासमे एक वर्षक बाद विषम वर्षमे तथा ५ वर्षक बाद मास ओ वर्षक विचार नहि होइछ।

नक्षत्र—उत्तर ३, रो. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. मृ. रे. चि. अनु. श्र. ध. मू. पुन. स्वा. ।

रिक्ता-अमा रहित तिथि, दि.—सो. बु. बृ. शु. ।

विशेष—नूतन वधू-प्रवेश, सामान्य-वधू-प्रवेश, विलम्बित वधू-प्रवेश एहि तीनूमे विलंबित वधू-प्रवेशकेँ कतेक आचार्य द्विरागमन कहैत छथि। एहि सन्दिग्ध विषयकेँ विद्वानक द्वारा निर्णय होयबाक चाही।

"वधू-प्रवेशो न दिवा प्रशस्तो नृप-प्रेवेशो न निशि प्रशस्तः। दिवा च रात्रौ च गृह-प्रवेशः सत्कीर्त्तिदः स्यात्त्रिविध-प्रवेशः।"

गृहारम्भ-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. उत्तरा. ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे., (वृष चक्र शुद्ध पृथिवी-शयन रहित)। त्याज्य तिथि—१।४।८।९।१४।३०। दिन—सो. बु. बृ. शु. श.। शुक्लपक्ष, लग्न—२।३।५।६।११। १२.। त्याज्य मास—भाद्र, आश्विन, चैत्र, पौष (तृण गृहक हेतु सेहो) तथा पशु गृहक हेतु आषाढ़। उत्तम मास—श्रा. का. माघ. फा. वै. अन्य मध्यम सम्मुखकान वर्जित। वृषचक्र—सूर्य नक्षत्रसँ चन्द्र नक्षत्र ७ तक त्याज्य, बाद ११ तक शुभ शेष ९ अशुभ, पृथ्वो शयन—सूर्यसँ ५।७।९।१२।१९।२६ चान्द्र नक्षत्रमे भूमि शयनावस्थामे रहैछ।

गृह-प्रवेश-मुहूर्त्त

त्याज्य नक्षत्र—भ. अश्ले. म. पूर्वा. ३, वि. त्याज्य, दिन—रवि, म. त्याज्य, तिथि—१।४।८।९।१४।३०। शुक्लपक्ष। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२। (१०म शुद्ध गृहारम्भक विहितमास) कुम्भचक्र शुद्ध कुम्भचक्र—सूर्यक नक्षत्रसँ प्रवेश नक्षत्र ५ तक अशुभ, बाद ८ तक शुभ, बाद ८ अशुभ, शेष ६ शुभ।

देवादिप्रतिष्ठा-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.। तिथि—२।३।५।६।८।१०।११।१२ १३।१५। शुभ दिन। शुक्लपक्ष उत्तरायण। शुद्ध समय।

दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

ग्रहण, शारदीय नवरात्र, अन्यथा उत्तरायण, शुद्ध समय, मास—चैत्र, वैशाख, माघ, फाल्गुन (दक्षिणायनक श्रा. आश्वि. का. मार्ग) नक्षत्र—अश्वि. रो.। मृ. पु. पु. पूफ. उफ. ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. पूषा. उषा. श. पूभा. उभा. रे.। दिन—र. सो. बु. बृ. शु.। तिथि—२।३।५। ७।१०।११।१२। लग्न—२।५।६।९।१२। कृष्णमे ५ तक। समय—पूर्वाह्न, मध्याह्न।

सेवाकर्म (नौकरी) [illegible]त

नक्षत्र—अश्वि. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. रे.। त्याज्य तिथि—१।९।१२।३०। शुभ दिन। शुभ लग्न।

दोकान आरम्भ-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. पुष्य. उत्तरा ३, ह. चित्रा. अनु. अभि. रे.। त्याज्य तिथि—४।९।१४।३०। त्याज्य दिन—मंगल। त्याज्य लग्न ११। चन्द्र-शुक्र लग्नमे रहलासँ उत्तम।

धन-लगानी (ब्याज)

नक्षत्र—अश्वि. मृ. पु. चि. [illegible]. वि. अनु. श्र. ध. रे.। लग्न १।४।७।१०। विशेष—बुध दिनमे लगानी नहि करी।

ऋण-कर्जा लेबऽ मे वर्जित समय

संक्रान्ति। वृद्धियोग, मंगल दिन, हस्तयुत रवि दिन सेहो।

नवान्नश्राद्ध तथा भोजन मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. चि. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. उ. ३। शुभलग्न। अधोलिखित सभमे नहि करी; यथा—मास—चैत, कार्त्तिक, पौष। विशाखाक सूर्य। १।३।५।७ तारा। तिथि—१।४।६। ९।११।१३।१४। दिन—मंगल, शुक्र, शनि। नक्षत्र—उग्र (पूर्वा ३, भ. मघा) श्ले. आ. विष घटी। ८म चन्द्र कृष्णपक्ष। चातुर्मास्य।

खल-खरिहान-स्थापन मुहूर्त्त

चर, मृदु तथा क्षिप्र नक्षत्र, शुभ तिथि, शुभ दिन, शुभ लग्न।

मेधि (मेह) रोपण-मुहूर्त्त

नक्षत्र—मृ. चि. अनु. रे. उत्त. ३, रो. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पु. श्र. ध. श.। शुभ दिन-तिथिमे खातमे द्रव्य आदि राखि मेधिक अग्रमे धान बान्हिकए।

वर्षाधिपक वश—मेधि स्थापन करक चाही।

सूर्यमे बाँस, सोमे राजा हो तँ सिम्मर, मंगलमे कदम्ब, बुधमे डुम्बरि, गुरुमे आम, शुक्रमे निम्ब, शनिमे पलाश।

धान्यच्छेदन-मुहूर्त्त

शनि-मंगल, रिक्ताकेँ छोड़ि स्थिर लग्नमे। नक्षत्र—मू. ज्ये. आ. श्ले. पूभा. ह. कृ. श्र. ध. मृ. स्वा. म. उत्त. ३, पूषा. भ. चि. पुष्य।

विशेष—प्रत्येक फसिलके उपर्युक्त मुहूर्त्तमे काटी।

मर्दन (दाउनि) मुहूर्त्त

नक्षत्र—पूफ. उफ. श्र. म. ज्ये. रो मू. अनु. रे.। शुभ तिथि-दिन।

धान्यरोपण-मुहूर्त्त

नक्षत्र—वि. पूभा. मू. रो. श. उफ.। शुभ तिथि दिन।

बीज-रक्षण मुहूर्त्त

नक्षत्र—पू. भा. रे. मू. स्वा. ह. म. उषा. रो.। शुभ तिथि—दिन, स्थिर लग्नमे बीज राखी।

बीज-वपन-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा. ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. ब.। शुभ-तिथि, शुभ दिन, शुभलग्न।

धान्यक स्थिति (बखारी आदिमे राखब) मुहूर्त्त

त्याज्यनक्षत्र—भ. कृ. मृ. श्ले. म. पूर्वा ३, वि. ज्ये.। शुभतिथि—दिन। त्याज्य लग्न—मेष, कर्क, तुला।

यात्राक मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. मृ. पु. पु. ह. अनु. ज्ये. मू. रे.। त्याज्य नक्षत्र—भ. कृ. आ. श्ले. म. उत्तरा ३, वि.। मध्य नक्षत्र—रो. पूर्वा ३., चि. स्वा. श्र. ध. श.। सर्व-दिग्गमन नक्षत्र—अश्वि. पुष्य. मृ. श्र.। विशेष—एहि नक्षत्रमे सब दिशामे यात्राविहित। एहिमे वाम चन्द्रादि दोष नहि। किछु आचार्यक मतसँ पश्चिममे पुष्य, दक्षिणमे अश्विनी, उत्तरमे हस्त अविहित, परन्तु गुरु-वराह आदिक मतसँ ग्राह्य थिक। तिथि—२।३।५। ७।१०।११।१३। समय—अर्द्धप्रहरा रहित (परिशिष्ट देखू)।

विशेष—उपर्युक्त तिथि कुयोगादिघटित अग्राह्य, आओर सिद्धियोगादि घटित अविहितो तिथि ग्राह्य थिक। प्रशस्त—सम्मुख दक्षिण चन्द्र। दिक्शूलमे यात्रा निषेध।

दिक्शूल—पूर्वमे शनि, सोम। अग्निकोणमे सोम। दक्षिणमे बु. बृ.। नैर्ऋत्यमे बुध। पश्चिममे रवि, शुक्र। वायव्यमे शुक्र। उत्तरमे मं. बु.। ईशानमे बुध।

चन्द्रवास—मे. सि. ध. मे पूर्व। कन्या, वृष, म. मे दक्षिण। मि. तु. कु. मे पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन मे उत्तर। स्त्रीक यात्रामे कालक विचार होइछ। दक्षिण सम्मुख काल त्याज्य। **विशेष**—विशिष्टयात्राक हेतु विशिष्ट मुहूर्त्त विचारी। सम्मुख चन्द्र—लग्नक यात्रामे अधिक महत्त्व। योगिनीक कतहु सेहो प्रचलन अछि। स्त्री-यात्रामे दक्षिण-सम्मुख काल वर्जित, गृहारम्भ ओ गृह प्रवेशमे मात्र सम्मुख काल वर्जित। पितृ-गृह-यात्रामे कालक विचार नहि हो।

औषध-भक्षण-मुहूर्त्त

नक्षत्र—लघु, मृदु, चर, मू.। शुभ-तिथि। लग्न—२।६।६।१२। दिन—र. सो. बु. बृ. शु.। जन्मक—नक्षत्रमे नहि।

हवनमे अग्निक वास

शुक्लपक्षमे तिथिक संख्यामे १ जोड़िकए ओहिमे दिन संख्या मिलाबी आओर ४ सं भाग दी. ३।० शेषमे हवन शुभ। १।२ शेषमे हवन अशुभ।

विशेष—अतिरिक्त आओर मुहूर्त्त सभक विचार शास्त्रमे देखी, स्थानाभावक कारणे पंचांगमे एतबए लिखल गेल।

यात्रामे शुभ शकुन

अग्रे धेनुः सवत्सा वृष-गज-तुरगा दक्षिणावर्त्तवह्निः,
दिव्यस्त्री पूर्णकुम्भो द्विज-वरगणिका श्वेतमाला पताका।
मत्स्यो मांस घृतं वा दधि मधु सहितं काञ्चनं शुक्लवस्त्रम्।
दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलमिह लभते मानवो गन्तुकामः।।
दर्शनं—गवादेः, स्पर्शनं—रत्नादेः पाठश्च।

भदवामे त्याज्य

धनिष्ठापञ्चके त्याज्यस्तृणकाष्ठादिसंग्रहः।
त्याज्या दक्षिणदिग् यात्रा गृहस्याच्छादनं तथा।।

विशेष—भदवामे खाट, चटाई आदि नहि बुनक चाही। किछुए कार्य भदवामे नहि होइछ आओर सभ कार्य होइछ।

किछु उपयोगी अन्य बात

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनः स्मृतः।
शेषे कर्मणि चान्द्रः स्यादेष मासविधिः स्मृतः।।

सूर्य संक्रान्तिसँ सूर्य संक्रान्ति पर्यन्त सौरमास, अमान्तसँ अमान्तावधि चान्द्र मास। सूर्योदयसँ सूर्योदय पर्यन्त सावन दिन नक्षत्रोदयसँ नक्षत्रोदयपर्यन्त नाक्षत्र दिन।

हवनमे शाकल्य निर्णय

तिलार्द्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्द्धं यवा स्मृताः।
यवार्द्धं शर्करा दद्यात् सर्वार्द्धं च घृतं स्मृतम्।।

ग्रहक होमार्थ समिध (लकड़ी)

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः।
औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात्।।

व्रतनाशक वस्तु

असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलभक्षणात्।
उपवासः प्रणश्येत्तु दिवास्वापाच्च मैथुनात्।

शिव-वास

पार्थिव शिव-पूजाक हेतु प्रशस्त तिथि
शुक्ल—२।५।६।६। १३
कृष्ण—१।४।५।८।११।१२।३०

पल्लीपतन फल

यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्गे नराणां
स्वजनजनवियोगी लाभदा वामभागे।
उरसि शिरसि कण्ठे पृष्ठदेशे च मृत्युः
करचरणगुदायां सर्वसौख्यं ददाति।।

विशेष—अनिष्टपल्लीपतन शान्त्यर्थ सचैल स्नान कय तिल, उरीद दान करी तथा शिवमन्दिरमे दीप दान कय षडक्षर मन्त्र—'ॐ नमः शिवाय' १०८ बेरि जप करी।

योगिनी

तिथि १,९ पूर्वमे। ३,११ अग्नि कोणमे। ५, १३ - दक्षिणमे। ४,१२ नैऋत्यमे। ६,१४ पश्चिममे। ७,१५ वायव्यमे। २,१० उत्तरमे ८, ३० ईशानकोणमे।

अथ सूर्यादिग्रहाणां विंशोत्तरीयमहादशायां ग्रहाणामन्तर्दशाचक्रम्।

र. ०। ३।१८	चं. ०।१०।०	मं. ०। ४।२७	रा. २। ८।१२	बृ. २। १।१८	श. ३। ०। ३	बु. २। ४।२७	के. ०। ४।२७	शु. ३। ४।०
चं. ०। ६। ०	मं. ०। ७।०	रा. १। ०।१८	बृ. २। ४।२४	श. २। ६।१२	बु. २। ८। ६	के. ०।११।२७	शु. १। २। ०	र. १। ०।०
मं. ०। ४। ६	रा. १। ६।०	बृ. ०।११। ६	श. २।१०। ६	बु. २। ३। ६	के. १। १। ६	शु. २।१०। ०	र. ०। ४। ६	चं. १। ८।०
रा. ०।१०।२४	बृ. १। ४।०	श. १। १। ६	बु. २। ६।१८	के. ०।११। ६	शु. ३। २। ०	र. ०।१०। ६	चं. ०। ७। ०	मं. १। २।०
बृ. ०। ८।१८	श. १। ७।०	बु. ०।११ [illegible]	के. १। ०।१८	शु. २। ८। ०	र. ०।११।१२	चं. १। ५। ०	मं. ०। ४।२७	रा. ३। ०।०
श. ०।११।१२	बु. १। ५।०	के. ०। [illegible]	शु. ३। ०। ०	र. ०। ६।१८	चं. १। ७। ०	मं. ०।११।२७	रा. १। ०।१८	बृ. २। ८।०
बु. ०।१०। ६	के. ०। ७।०	शु. १। २। ०	र. ०।१०।२४	चं. १। ४। ०	मं. १। १। ६	रा. २। ६।१८	बृ. ०।११। ६	श. ३। २।०
के. ०। ४। ६	शु. १। ८।०	र. ०। ४। ६	चं. १। ६। ०	मं. ०।११। ६	रा. २।१०। ६	बृ. २। ३। ६	श. १। १। ६	बु. २।१०।०
शु. १। ०। ०	र. ०। ६।०	चं. ०। ७। ०	मं. १। ०।१८	रा. २। ४।२४	बृ. २। ६।१२	श. २। ८। ६	बु. ०।११।२७	के. १। २।०
यो. ६। ०। ०	यो.१०। ०।०	यो. ७। ०। ०	यो.१८। ०। ०	यो.१६। ०। ०	यो.१९। ०। ०	यो.१७। ०। ०	यो. ७। ०। ०	यो. २०। ०।०

प्राचीन मतसँ विवाहार्थ वर्ग विचार

अ क च ट त प य श वर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम्।
सर्पाऽऽखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ।।

कन्यापक्ष ओ वरपक्षमे परस्पर संतोष भऽ जाय तऽ विहित नक्षत्र मात्रोमे विवाहक आदेश अछि।

मनश्चक्षुषोर्यस्मिन् वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नान्यत् किञ्चिद्विचिन्तयेत्।।

गुरुशुद्धि—कन्याक जन्मराशिसँ २।५।७।६।११ राशिस्थ गुरु श्रेष्ठ, १।३।६।१० मध्यम तथा ४।८।१२ अधम।

रविशुद्धि—वरक राशिसँ ३।६।१०।११म राशिस्थ रवि शुभ, २।५।६म मध्यम तथा १।४।७।८।१२ निन्दित। **चन्द्रशुद्धि**—वर-कन्याक राशिसँ ४।८।१२ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ।

युग्मेऽब्दे जन्मतः स्त्रीणां शुभदं पाणिपीडनम्। एतत्पुंसामयुग्मेऽब्दे व्यत्यये नाशनं तयोः।।

नाड़ी दोषक विशेष—रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राणां पुष्यश्रवणपौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते।।

अथ सूर्योदयात् सूर्योदयावधि—माहेन्द्रादियोगाः

वार	श्रावण, भाद्र, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख	वार	आश्विन, कार्त्तिक, मार्ग, पौष	वार	ज्येष्ठ, आ[illegible]
र.	मा. २, अ. ८, व. १०, शू. ८, मा. २, शू. २, अ. ६, शू. ८, व. ६, मा. २, व. ४, अ. २=६०	र.	मा. ६, व. ८, अ. ८, शू. २, मा. ४, शू. ६, व. ४, अ. ४, व. ४, अ. ६, शू. ४, अ. ४=६०	र.	शू. ४, अ. ६, व. ६, अ. ६, शू. २, व. ४, अ. २, शू. ४, मा. ६, शू. ४, व. ६, शू. २, मा. ४, व. ४=६०
सो.	मा. ४, शू. ६, अ. ६, व. ६, मा. २, अ. २, शू. ४, व. २, मा. ६ व. ८, अ. ८, व. ६=६०	सो.	अ. ४, व. ४, अ. ६, व. २२, अ. ८, व. ७, अ. ४, व. ५=६०	सो.	व. ८, अ. ४, शू. ६, अ. ६, मा. ६, व. ६, अ. ८, अ. ४, अ. ४, शू. ४, व. ४=६०
मं.	व. ४, शू. २, मा. ६, व. ४, शू. २, अ. ४, शू. ४. अ. ६, व. ४, शू. २, व. ८, अ. ६, शू. ४, अ. ४=६०	मं.	मा. २, शू. ६, अ. १०, व. ६, शू. २, व. १२, अ. २, शू. २, अ. ६, व. ४, मा. ४, व. ४=६०	मं.	अ. ४. शू. ४, बु. ४, शू. २, अ. ४, व. २, मा. ८, शू. २, व. ६, अ. ६, शू. २, व. ४, अ. २, शू. २, अ. ६, व. २=६०
बु.	व. ४, अ. ४, व. ६. अ. ४, शू. २, व. ४, मा. २, व. ४, शू. ४, अ. ६, शू. ६, व. ८, अ. ६=६०	बु.	शू. ४, अ. ४, मा. ६, शू. ४, व. ६, शू. २, व. ८, अ. ४, व. ८, अ. ६, शू. ८=६०	बु.	शू. २, व. ४, अ. ८, व. ६, अ. ८, शू. २, अ. १०, शू. २. व. ८, अ. ६, शू. २, अ. २=६०
बृ.	व. ६, शू. ४, व. ४, अ. ६, व. ६, अ. ४, व. ४, मा. ४, अ. २, व. ८, अ. ४, शू. ४, अ. ४=६०	बृ.	अ. ४, व. ६, अ. ८, शू. ४, व. ६, शू. ४, अ. ८, व. ६, अ. ६, व. ६, मा. २=६०	बृ.	अ. २, शू. २, अ. ४, व. ८, अ. ६, शू. २, व. ६, शू. ४, अ. ४, शू. २, व. ६, अ ६, शू. ४, व. ४=६०
शु.	शू. २, अ. १६, व. ८, अ. २, शू. २, व. ४, शू. ८, अ. ६, व. ८, अ. २, शू. २=६०	शु.	अ. २, व. ६, शू. ६, व. ६, अ. ८, व. ६, अ. ८, शू. ४, मा. २, व. ६, मा. ६=६०	शु.	शू. ४, अ. १४, व. ८, अ. २, शू. २, व. ४, शू. २, अ. ६, शू. ६, व. ८, मा. २, शू. २=६०
श.	शू. ४, व, ४, शू. ६, अ. ४, शू. २, २, अ. ४, शू. २, अ. ४, शू. ४, व. ४, अ. ४, व. ४, अ. ६, व. ४, अ. २, शू. २=६०	श.	मा. ४, शू. ४, अ. ८, श. ८, अ. ४, शू. २, व. ११, शू. ४, व. ७, मा. २, शू. ६=६०	श.	शू. ४, व. ६, अ. ६, शू. २, व. ४, अ. ४, शू. ६. व. ६, अ. ४, व. ४, अ. ४, शू. २, अ. [illegible], व. ६=६०
	मा=माहेन्द्र, व=वक्र अ=अमृत शू=शून्य		माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम् ॥		यात्रादि परमावश्यक कार्यमे शुद्ध मुहूर्तक अभावमे चक्रोक्त शुभ समयमे कार्य करी।

रत्नक उपचार प्रयोग—लाल (माणिक्य)—रक्त रोगमे, मोती—दांतक रोगमे, मूंगा—नखरोगमे, पन्ना—पित्तरोगमे, पोखराज—कुष्ठादि चर्मरोगमे, हीरा-अस्थिरोगमे, नीलम—नेत्ररोगमे, गोमेद—प्रमेहादि वीर्य विकारमे, लहसुनियाँ—स्वरभंगमे, लाजावर्त्त—पाण्डुरोगमे, स्फटिक—काश, क्षय, प्लीहा आदि रोगमे। **जनवरी-फरवरी आदि जन्म मासक अनुसार रत्न धारण**—गार्नेट (रक्तमणि), नीलम—फिरोजा, लाल पत्थर, हीरा, मोती—पन्ना, सुलेमानी पत्थर, लाल मणि, मूंगा, नीलम—फिरोजा, दुधिया पत्थर, पोखराज, फिरोजा (आसमानी रंग) क्रमशः।

नोट—परस्पर विरोधी रत्नक धारण नहि करबाक चाही।

नवग्रहक दान-सामग्री

सूर्यक दान—मणि, गहूम, गुड़, सवत्सा गौ, कमलक फूल, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, सोन, ताम, केसर, मूंगा। जप संख्या ६०००। तान्त्रिक जप मन्त्र—ॐ घृणिः सूर्याय नमः।

चन्द्रमाक दान—बाँसक डाला, अरबा चाउर, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, श्वेत फूल, चीनी, घी, श्वेत वृषभ, दधि, शंख, मोती, कर्पूर। जप १०,०००। मन्त्र—ॐ सों सोमाय नमः।

मंगलक दान—मूंगा, पृथ्वी, मसुरीक दालि, तेल, गहूम, लाल वृषभ, गुड़, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, लाल फूल, सोन, ताम्र, केशर, कस्तूरी। जप ७,०००। मन्त्र—ॐ अं अङ्गारकाय नमः।

बुधक दान—कांस्य पात्र, हरित वस्त्र, हाथीक दाँत, घी, मूंगा, पन्ना, शस्त्र, सोन, अनेक फूल, कर्पूर, षट्रस भोजन। जप १७,०००। मन्त्र—ॐ बुं बुधाय नमः।

गुरुक दान—पीत अन्न, पीत वस्त्र, पीत फूल-फल, सोन, पोखराज, हरदि, पुस्तक, मधु, लवण, शक्कर, छाता, घोड़ा। जप १६ ०००। मन्त्र—ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

शुक्रक दान—श्वेत चन्दन, चाउर, फूल, अनेक रंगवाला वस्त्र, चानी, हीरा, सोन, घी, दधि, श्वेत, घोड़ा, गौ, शक्कर, सुगन्ध। जप २०,०००। मन्त्र—ॐ शुं शुक्राय नमः।

शनिक दान—नीलमणि, तिल, उरीद, तेल, कारी वस्त्र, फूल-फलं, कुरथी, लोहा, महिषी, कारी गौ, जूता, कस्तूरी, सोन। जप १६,०००। मन्त्र—ॐ शं शनैश्चराय नमः।

राहुक दान—सात अन्न, उरीद, स्वर्ण-नाग, नील वस्त्र, गोमेद, कारी फूल, तिल, खड्ग, तेल, लौह, सूप, कम्बल, सतिल-ताम्रपात्र। जप १८,०००। मन्त्र—ॐ रां राहवे नमः।

केतुक दान—कस्तूरी, उरीद, कम्बल, वैदुर्य, वृषभ, कारी फूल, वस्त्र, तिलतैल, लौह, बकरा, शस्त्र, सप्तान्न, सोन। जप ७,०००। मन्त्र—ॐ के केतवे नमः।

ग्रहक रत्न—लाल, मोती, मूंगा, पन्ना, पोखराज, हीरा नीलम, गोमेद, लहसुनियाँ (क्रमशः)।

विशेष—ग्रह सबहिक वर्णक अनुरूप द्रव्यक दान नीक होइछ। जाहि ग्रहके प्रसन्न करबाक हो ओही दिन जप ओ शान्ति आदि कार्य करी।

विवाह-विवेक तथा ग्रह मेलापक

वर-कन्याक जन्मपत्रीक मेलनपद्धति वर-कन्याक स्वभाव, रूप ओ गुण अभिव्यक्त करैत अछि। भारतीय संस्कृतिमे प्रेमपूर्वक विवाह कल्याणकारी नहि मानल गेल अछि। विवाहक पूर्व वर-कन्याक जन्मपत्रीक मिलैबाक अभिप्राय केवल परम्परेक निर्वाह नहि, किन्तु भावी दम्पतिक स्वभाव, गुण, प्रेम तथा आचार-व्यवहारक सम्बन्धमे ज्ञात करब थिक। दू अपरिचित व्यक्तिक जीवन भरिक हेतु गठबन्धन कऽ देल जाइत अछि, यदि एहन स्थितिमे ओहि दूनूक स्वभावक सम्बन्धमे ज्योतिष द्वारा किछु जनतब कऽ लेल जाय तऽ ओहिसँ दूनूकेँ अत्यन्त उपकार भऽ सकैत अछि।

ज्योतिषमे लग्नकेँ राशि ओ चन्द्रमाकेँ मन मानल गेल अछि। प्रेम मनसँ होइछ, शरीरसँ नहि, एहि हेतु आचार्यलोकनि जन्म-राशिसँ मेलापक ज्ञान करबाक हेतु कहने छथि। गण-मिलान द्वारा वर-कन्याक प्रजनन शक्ति, स्वास्थ्य, विद्या एवं आर्थिक परिस्थितिक ज्ञान करक चाही। द्विजातिक विवाहमे ८१टा दोष कहल गेल अछि, किन्तु ओहिमे लत्ता आदि दशे टा दोष मुख्य अछि। एहिमे सँ अल्प दोष रहने विवाह करबाक आदेश अछि।

जन्मलग्नसँ तथा जन्मराशिमे १-३-७-८-१२ एहि स्थान सभमे यदि मंगल कन्याक कुण्डलीमे हो तऽ ओ पतिघातिनी ओ वरक कुण्डलीमे हो तऽ ओ पत्नी नाशक होइत अछि। यदि वर-कन्याक कुण्डलीमे मंगल उक्त स्थानमे नहि पड़ए अथवा दूनूक कुण्डलीमे पड़ए तऽ दूनूमे विवाह सम्बन्ध शुभ कहल गेल अछि।

एकर परिहारमे एक कुण्डलीमे उक्त स्थानक मंगल हो तथा दोसर कुण्डलीमे यदि शनि, रवि, राहु, केतुमेसँ कोनो पापग्रह हो तऽ उक्त मंगलक दोष नष्ट भऽ जाइत अछि। बहुमत ई अछि जे, वर ओ कन्याक कुण्डलीमे उपर्युक्त स्थानमे पापग्रहक संख्या देखी। कन्याक कुण्डलीसँ वरक कुण्डलीमे यदि पाप ग्रहक संख्या तुल्य वा अधिक हो तऽ विवाह शुभप्रद अन्यथा अशुभप्रद होइत अछि। तात्पर्य ई जे, वर ओ कन्यामे जकर ग्रह निर्बल उक्त प्रकारेँ होइथिन, तकर मृत्यु पूर्व होयत, एहि हेतु कन्याकेँ अपन वैधव्य नहि दृष्टिगोचर होइक, ताहि प्रकारेँ मेलापक विचार कर्तव्य। शास्त्रमे इहो कहल गेल अछि जे कन्याक कुण्डलीमे सप्तम मंगल बालवैधव्यकारक, तकर शान्ति (कुम्भविवाहादि) करौलाक बादे विवाह करबाक चाही।

वेध-विचार—रो.-अभि. भर.-अनु., उषा.-मू., श्र.-म., ह.-उभा., स्वा.-श., मू.-पुन.,उफा.-रो.। पारस्करक नक्षत्र—अश्वि. चि. श्र. आओर ध. क्रमशः पूफा., पूभा., मघा तथा श्लेषासँ वेधित होइछ। यदि अनुराधामे दिन देखबाक हो तऽ भरणीमे ग्रहके नहि रहने निर्वेध दिन होयत।

नक्षत्र मेलापक

एहिमे १ वर्ण, २ वश्य, ३ तारा, ४ योनि, ५ ग्रह मैत्री, ६ गणमैत्री, ७ भकूट तथा ८ नाड़ी ई आठ कूट होइत अछि जे उत्तरोत्तर बली मानल गेल अछि।

...न्याक वर्ण समान अथवा वरक वर्ण श्रेष्ठ हो तऽ शु॰ अन्यथा अशुभ। **परिहार**—कन्यासँ वरक राशि वर्ण हीन भेलहुँ पर यदि वरक राशिपति कन्याक राशिपतिसँ उत्तम वर्णक हो तऽ शुभ कहल गेल अछि। बृ० शु० ब्राह्मण, सू० मं० क्षत्रिय, चं० वैश्य, बुध शूद्र तथा शनि चाण्डाल वर्ण।

२. **वश्य**—वर-कन्याक वश्य समान अथवा वरक वश्य कन्याक हो तऽ शुभ।

३. **तारा**—कन्याक नक्षत्रसँ वरक नक्षत्र तक आओर वरक नक्षत्रसँ कन्याक नक्षत्रतक गणना कय ९ सँ भाग दी, यदि शेष ३-५-७ हो तऽ अशुभ आओर शेष १-२-४-६-८-० हो तऽ शुभ, कन्याक-वरक तारा शुभ भेने श्रेष्ठ, एकटाक शुभसँ मध्यम एवं दूनू अशुभसँ निन्द्य बुझक चाही।

४. **योनि**—दूनूक एकहि योनि अथवा योनि मैत्री या उदासीनता हो तऽ शुभ आ मध्यम, शत्रुता रहने अशुभ। **परिहार**—वर-कन्याक नक्षत्रयोनिक वैरिता रहनहुँ यदि वश्य गुण ठीक हो तऽ शुभ।

५. **ग्रह मैत्री**—वर-कन्याक राशिपतिमे मैत्री, सममैत्री रहए तऽ शुभ, शत्रुता अशुभ। **परिहार**—वर-कन्याक राशिक नवांश पतिमे मैत्री हो वा नवांश पति बलवान् हो तऽ शुभ।

६. **गण**—दूनूक गण एक वा एक मनुष्य, एक देवगण, तऽ शुभ, राक्षस-मनुष्य वा देव-राक्षस गण हो तऽ अशुभ। **परिहार**—गण दोष रहलो पर यदि दूनूक राशि पतिक मैत्री वा नवांश पतिक मैत्री रहए तऽ विवाह शुभ।

७. **भकूट**—वर-कन्याक राशि परस्पर ६-८-९-५-२-१२ अशुभ। ३-११, ४-१०, ७-७ तथा एकहि राशिमे विवाह शुभ। **विशेष**—वरक राशिसँ कन्याक राशि ५म अशुभ, किन्तु नवम शुभ एवं वरक राशिसँ कन्याक राशि दोसर अशुभ, किन्तु बारहम शुभ (ज्योति-प्रकाश)। समसप्तक ओ चतुर्थ-दशमकेँ शुभ कहल गेल अछि, किन्तु मकर-कर्क, सिंह-कुम्भ, एहि दूनू समसप्तकमे शत्रुता होइछ; एवं तुला मकरसँ, सिंह वृषसँ, कर्क मेषसँ, मीन मिथुनसँ, कन्या धनुसँ, वृश्चिक कुम्भसँ ई वर-कन्याक चतुर्थ दशक शुभ नहि। सारांश ई जे ३-६, ४-७, ५-८, ९-१२, १०-१, ११-२ एकर चतुर्थ दशक शुभ तथा समसप्तकमे ४-१०, ५-११ अशुभ। समसप्तक, तृतीयैकादश ओ चतुर्थ-दशकके राजकूट मानल गेल अछि, जाहिमे ग्रह-वैरिता, वर्णदोष, नाड़ी दोष, गणत्रयदोष नहि होइछ. किन्तु अशुभ सप्तक तथा चतुर्थ-दशककेँ त्याज्य करब उचित। षट्काष्टकमे यदि दूनूक राशीशक मैत्री वा दूनूक राशीश एकहि ग्रह हो तऽ ओ मित्र षट्काष्टक मानल गेल अछि। मित्र षट्काष्टक १-८, २-७, ४-९, ५-१२, ६-११, १०-३ ई छओटा अछि, जे शुभ मानल गेल अछि। दुष्ट भकूटक परिहार—एकाधिपत्य राशीशमैत्री, नवांश पतिक मैत्री, तारा शुद्धि ओ राशिक वश्यता ई पाँच प्रकारक परिहार मानल गेल अछि, जाहिमे प्रत्येकमे नाड़ीक शुद्धि आवश्यक। **भकूट-ग्रहकूटक परिहार**—"खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्।"

८. **नाड़ी**—वर-कन्याक भिन्न नाड़ी रहने शुभ, एकहि नाड़ी भेने विवाह अशुभ। **परिहार**—दूनूक राशि एक ओ नक्षत्र भिन्न तथा दूनूक नक्षत्र एक आ राशि भिन्न हो तऽ शुभ, एकहु नक्षत्रमे चरणभिन्नतासँ विवाह शुभ।

उपर्युक्त आठो कूटक गुण योग ३६ होय त, जाहिमे अर्धाधिक (१८ सँ अधिक) वर-कन्याक गुण-योगक प्राप्तिमे विवाह शुभ। एहनो प्रमाण अछि जे भकूट शुद्ध रहनहुँ १६ सँ स्वल्प गुणैक्य निन्दित। १६ सँ २० धरि मध्यम, २० सँ ३० धरि उत्तम आओर ३० सँ ३६ उत्तमोत्तम। दुष्ट भकूटमे २० तक निन्दित, २५ तक मध्यम, ३० तक तथा ३० सँ ३६ तक उत्तमोत्तम। यदि ग्रह-मेलापक उत्तम हो तऽ १६ सँ कम बारहो तक गुण योग ग्राह्य। जन्मनक्षत्र ज्ञात नहि हो तऽ पुकारोक नामसँ गणना करबाक चाही (शेष ३५ पेजमे)

तिथयः	समरे प्रतिपदादि-क्षयः	शान्ति-क्षयः	समरे जयमो: संधयः
तिथयः	८।१२।१४।	१।३।५।७।६।९।११।१३।१५	२।६।१०
दिनानि	मं.श.	र.सो.बृ.शु.	बुधः
नक्षत्राणि	पूर्वा ३, अश्वि. पुष्य. म.मृ.श्र.कृ.वि.ज्ये. चि.	स्वा.म.अ.ध.रे.ह. पुन. उत्त. ३, रो. अनु.	श. भा. अभि. मू.

नामाक्षरैर् [illegible] ज्ञानम्

नामाक्षर-राशि	चु चे चो ल	लि लु ले लो	अ इ उ ए	ओ व वि वु	वे वो क कि	कु घ ङ छ	के को ह हि	हु हे हो ड़	डि डु डे डो	म मि मु मे	मो ट टि टु	टे टो प पि	पु ष ण ठ	पे पो र रि
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रो०	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्ले.	मघा	पू.फ.	उ.फ०	हस्त	चित्रा
राशयः	मेष	मेष	१मे. वृ.	वृष	२वृ. मि. २	मिथुन	३मि. क. १	कर्क	कर्क	सिंह	सिं.	१सिं. क. ३	कन्या	२क. तु. २
वर्णाः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष. १वैं.	वैश्य	२वै. शू. २	शूद्र	३शू. ब्रा. १	ब्राह्म.	ब्राह्मण	क्षत्रिय	क्ष.	१क्ष. वै. ३	वैं.	२वैं. शू. २
वश्याः	चतुष्पद	चतु.	चतु.	चतु.	२च. द्वि. २	द्विपद	३द्वि. ज. १	जल.	जल.	चतु.	च.	१च. द्वि. ३	द्वि.	द्वि.
योनयः	अश्व	गज	छाग	सर्प	सर्प	श्वान	बिड़ाल	छाग	मार्जार	मूषिक	मू.	गो.	महि.	व्याघ्र
योनिवैरा	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषिक	वानर	मूषिक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ.
राशीशाः	मंगल	मंगल	१मं. शु.	शुक्र	२शु. बु. २	बुध	३बु. चं. १	चन्द्र	चं.	सूर्य	सू.	१सू. बु. ३	बु.	२बु. शु. २
गणाः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्ष.	राक्षस	म.	म.	दे.	राक्षस
नाड्यः	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अ.	अन्त्य	म.	आदि	आदि	मध्य

नामाक्षर-राशि	रु रो त	[illegible]	[illegible]	[illegible] यि यु	[illegible] भ भि	[illegible] फ ढ	[illegible] भो ज जि	जु जे जो ख	खि खु खे खो	ग गि गु गे	गो स सि सु	से सो द दि	दु थ झ ञ	दे दो च चि
नक्षत्राणि	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवणा	धनिष्ठा	शत.	पू. भा.	उ.भा.	रेवती
राशयः	तुला	३तु. वृ. १	वृश्चि.	वृ.	धनु	धनु	१ध. म. ३	मकर	मकर	२म. कु. २	कु.	३कु. मी. १	मीन	मीन
वर्णाः	शू.	३शू. ब्रा. १	ब्राह्मण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	१क्ष. वैं. ३	वैश्य	वैश्य	२वैं.शू. २	शू.	३शू. ब्रा. १	ब्राह्म.	ब्राह्मण
वश्याः	द्वि.	३द्वि. की. १	कीट	कीट	द्विप.	द्वि.	१द्वि. च. ३	चतु.	चतु.	२ज. द्वि. २	द्वि.	३द्वि. ज. १	जल	जलचर
योनयः	महि.	व्याघ्र	हरिण	हरि.	श्वान	वानर	नकुल	नकु.	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ.	गज
योनिवैरा	अश्व	गौ.	श्वान	श्वा.	मृग	छाग	सर्प	स.	छाग	गज	महि.	गज	व्या.	सिंह
राशीशाः	शु.	३शु. मं. १	मं.	मं.	बृ.	बृ.	१बृ. श. ३	शनि	शनि	शनि	श.	३श. बृ. १	बृ.	बृह.
गणाः	दे.	राक्षस	दे.	रा.	रा.	म.	म.	देव	देव	राक्षस	रा.	म.	म.	देव
नाड्यः	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	मध्य	आ.	आ.	म.	अन्त्य

ध्रुव-स्थिर-संज्ञक नक्षत्र—उत्त. ३, रो.। चर-चल—स्वा. पुन. श्र. ध. श.। उग्र-क्रूर—पूर्वा, भ. म.। मिश्र-साधारण—वि. कृ.। क्षिप्र-लघु—ह. अश्वि. पुष्य. अभि.। मृदु-मैत्र—मृ. रे. चि. अनु.। तीक्ष्ण-दारुण—मू. ज्ये. आ. अश्ले.। अधोमुख—मू. अश्ले. मिश्र. उग्र.। ऊर्ध्वमुख—आ. पुष्य, श्र. ध. श. ध्रुव.। तिर्यङ्-मुख—अनु. ह. स्वा. पुन. ज्ये. अश्वि मृ. रे. चि.। अधोमुखमें बावली, तरहरा, कूप आदि बनयबाक चाही। ऊर्ध्वमुखमे—मठ-मन्दिर वृक्ष आदि रोपण तथा तिर्यङ्-मुखमे मोटर-साइकिल, घोड़ा-हाथी आदि यान-वाहनक व्यवहार उत्तम। पर्व—१४।८।३०।१५ संक्रान्ति। अ क च ट त प य श वर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम्। सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ ॥ यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः। ग्राह्यस्तदादिमो वर्णः इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥ नन्दा—१।६।११। भद्रा—२।७।१२। जया—३।८।१३। रिक्ता—४।९।१४। पूर्णा—५।१०।१५।

युगादि तिथि			
१	२	३	४
सत्य	त्रेता	द्वापर	कलि
का. शु. ९	वै. श. ३	भा. कृ. १३	मा. कृ. ३

वर-कन्यागणना-गुणयोग-चक्र । (वर-नक्षत्र)

(कन्या-नक्षत्र)

नक्षत्र चरण	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ	पु. ३	पु. १	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ. १	उ. ३	ह.	चि. २	चि. २	स्वा	वि. ३	वि. १	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ. १	उ. ३	श्र.	ध. २	ध. २	श.	पू. ३	पू. १	उ.	रे.
अ.	२८	३३	२९	१९	२२	२३	२६	१७	१८	२२	३३	२७	२१	२६	१८	११	९	१३	२३	२७	२३	२०	२७	१५	१३	२६	२५	२६	२६	२१	२१	१५	१६	१५	२५	२६
भ.	३४	२८	२९	१९	२३	१४	१७	२६	२६	३१	३४	२५	२१	१९	१८	२२	१९	६	१५	३०	३०	२०	१८	२०	२०	१९	२०	२७	२८	१०	१०	२०	२४	२३	१७	२८
कृ. १	२८	२८	२८	१७	९	१६	१९	२०	२१	२६	२७	२४	१८	२१	२२	१६	१६	१९	२८	१६	२०	१७	२१	२७	२५	१८	१५	१६	११	२५	३५	२७	२०	१८	२०	१२
कृ. ३	१९	१९	१९	२८	१९	२६	१७	१८	१९	२२	२३	२०	२०	२३	२४	२१	२१	२४	२३	११	१५	२२	२६	३२	२०	१३	१७	१४	११	२३	२०	३१	२३	२०	२२	१४
रो.	२४	२४	१०	१९	१८	३६	२७	२४	२४	२७	२६	१३	१३	२७	२८	२५	२७	२०	१९	१६	१०	१७	३०	२५	१४	१९	१२	१७	१९	२०	२६	२५	३१	२७	२६	१९
मृ. २	२३	१४	१९	२७	१४	२८	२०	२५	२४	२६	१९	२२	२२	१८	२६	२४	२७	१३	१०	२५	१८	२४	२३	२६	१५	१२	१८	२१	२५	१३	१९	२७	३०	२७	१७	२७
मृ. २	२७	१८	२१	१९	२६	२०	२८	३३	३२	२०	११	१६	२४	२१	२९	३१	३४	२१	१४	२७	२०	१४	११	१३	२३	१९	२४	२१	२५	१२	१३	२१	२४	२८	१७	२७
आ.	१९	२७	२१	१९	२५	२६	३४	२८	२५	१३	२१	१४	२४	३०	२३	२५	२५	२७	२०	२७	२०	१४	१७	५	१६	२८	२७	२३	२३	१७	२०	२१	१६	१९	२७	२७
पु. ३	१९	२६	२२	२०	२४	२५	३३	२४	२८	१६	२३	१७	२३	२८	२२	२४	२५	२६	१९	१७	२१	१४	२१	५	१३	२७	२७	२८	२३	१८	१९	११	१७	२०	२८	२८
पु. १	२२	२८	२४	२०	२४	२५	१९	११	१५	२८	३५	२९	१६	२०	१५	१७	१८	२१	२०	२७	२०	१९	२६	११	८	२१	२२	२९	२६	२१	१३	[illegible]	२१	१७	२५	२६
पुष्य	३१	२२	२७	२३	२४	१७	१०	१८	२२	३५	२८	३०	१९	१५	२४	२६	२७	१२	१२	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	२३	२६	२४	१३	५	१५	१८	२४	१८	२७
श्ले.	२५	२४	२३	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२९	२९	२८	१५	१६	१८	२०	२३	२६	२६	१२	१७	१६	२०	२६	२३	१६	९	१२	१३	२७	९	१९	१३	१९	२०	१२
म.	२१	२१	१८	१९	१२	२०	२३	२३	२२	१७	१९	१६	२८	३०	२७	१७	१७	२३	२६	१२	१८	२५	२७	३४	२४	२०	१२	६	५	१९	२५	[illegible]	१९	१८	१९	१२
पू.	२७	१९	२१	२२	२७	१८	२१	२९	२८	२३	१७	१७	३०	२८	३४	२४	२३	९	१२	२६	२०	२७	२५	२५	१९	१८	२७	२१	१९	५	१३	२०	२५	२४	१७	२५
उ. १	२७	२७	२२	२३	२७	२६	२९	२२	२२	१७	२६	१९	२७	३४	२८	१८	१७	१५	१९	२७	१८	२५	३१	२०	११	२६	२८	२२	२१	१२	१९	१३	१४	१६	२७	२५
उ. ३	३१	२२	१७	२१	२५	२४	३१	२४	२४	२०	२९	२२	१८	२५	१९	२८	२६	२५	१७	२६	१७	१८	२७	१३	१६	२९	३०	२६	२५	१७	२७	११	१५	१८	२९	२७
ह.	१०	२०	१७	२१	२६	२६	३३	२४	२४	२०	२९	२४	१८	२३	१७	२६	२८	२७	१९	२७	१८	२०	२६	१२	१४	२७	२८	२३	२४	१९	१९	९	१५	१९	२७	२७
चि. २	१३	६	१९	२६	२०	१२	१९	२६	२५	२१	१३	२७	२४	१०	१६	२५	२७	२८	२०	१९	२७	२८	११	१५	२८	१४	२१	१८	१९	१८	१८	२४	१९	२२	११	२१

वर-कन्यागणना-गुणयोग-चक्र । (वर-नक्षत्र)

नक्षत्र चरण	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ	पु. ३	पु. १	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ. १	उ. ३	ह.	चि. २	चि. २	स्वा	वि. ३	वि. १	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ. १	उ. ३	श्र.	ध. २	ध. २	श.	पू. ३	पू. १	उ.	रे.
चि. २	२३	१६	२९	२४	२०	१२	१३	२०	१९	२०	१२	२६	२६	१०	१८	१८	२०	२१	२८	२७	३५	२५	८	२२	२८	१४	२१	२६	२७	२६	२०	२६	२१	१५	४	१३
स्वा.	२८	३०	१८	१३	१७	२७	२७	२६	२७	२८	२८	१६	१४	२६	२६	२६	२८	२१	२८	२८	२०	१०	२४	१९	२३	२७	१८	२३	२४	१७	२१	२०	२५	२१	२०	१३
वि. ३	२३	२३	२१	१६	११	१९	२०	२१	२१	२३	२२	१९	१८	२०	१९	१८	१९	२८	३५	१८	२८	१८	१७	२९	२८	२२	१३	१८	१८	३३	२७	२६	२२	१७	१४	५
वि. १	१७	१७	१५	२०	१५	२३	१३	१५	१५	१९	१८	१६	२२	२४	२२	१८	१९	२८	२४	८	१७	२८	२७	३२	२४	१७	१०	१२	१२	२७	२७	२७	२३	२१	१८	१०
अ.	२५	१५	२०	२५	२८	२१	११	१६	२२	२७	१८	२१	२५	२१	३०	२६	२७	१२	८	२३	१७	२८	२८	३१	१७	१५	२	२५	२६	१२	१२	२२	२५	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	१९	२५	३०	२३	२३	१३	३	६	११	२०	२६	३१	२४	१७	१३	१२	२५	२१	१८	२१	३२	३०	२८	१५	१८	१८	२०	२०	२१	२५	२८	११	११	२१	२१
मू.	१२	२०	२५	१९	१३	१४	२१	१५	१२	९	१८	२४	२५	१९	१०	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२५	१६	१६	२८	२८	२६	१६	१६	२२	२५	२२	११	१८	२६	२७
पू.	२६	१९	१८	१३	१९	११	१९	२७	२७	२४	१४	१८	२१	१९	२७	२९	२७	१२	१२	२७	२०	१७	१९	१९	२८	२८	३३	२३	२४	९	१७	२४	३२	३३	२४	३१
उ. १	२६	२७	१४	९	१२	१८	२४	२६	२६	२४	२५	१०	१२	२७	२८	२९	२८	२०	२०	१९	१२	१२	१२	२६	२०	३३	२८	१८	१६	१६	२३	२३	२९	२२	३१	२४
उ. ३	२८	३०	१७	१४	१७	२३	२१	२३	२३	२७	२९	१३	७	२२	२३	२६	२५	१८	२५	२४	१७	१४	२८	२२	१७	२६	१९	२८	२६	२६	१८	१८	२४	३१	३३	२४
श्र.	२८	२७	१५	१२	१८	३५	२४	२२	२२	२७	२५	१५	१८	२०	२०	२४	२५	१९	२६	२४	१७	१४	२८	२३	१७	२४	१७	२५	२८	३०	२२	१९	२४	३२	३१	२३
ध. २	२१	११	२६	२४	२०	१२	९	१८	१८	२२	१३	२८	१९	६	१३	१६	१८	२७	२५	२६	३०	२८	१४	२८	२१	९	१७	२६	२८	२८	१९	२४	२१	२७	१६	२३
ध. २	२०	११	२६	३१	२८	१९	१०	२०	१९	१४	५	२०	२६	१२	२०	१८	२१	१८	१९	२२	२६	१८	१२	२६	३०	१८	१४	१९	२१	२०	२८	३३	२९	१९	८	१५
श.	१५	२१	२८	३३	२६	२५	१८	१०	१०	८	१५	२०	२७	२१	१४	१२	९	२६	२६	१९	२६	२७	२१	१९	२३	२५	२४	१९	१९	२५	३३	२८	१९	९	१८	१७
पू. ३	१८	२५	२०	२५	३२	३२	२४	१७	१७	१४	२१	१४	२०	२६	१८	१६	१८	१९	२०	२८	२१	२२	८	१२	२६	३२	३०	२५	२६	२१	२८	१९	२८	१८	२३	२१
पू. १	१५	२२	१७	१९	२६	२६	२५	१८	१८	१८	२५	१९	१७	२३	१५	२७	१९	२०	१३	१९	१४	२१	२७	१२	१५	३१	३१	२९	३०	२६	१७	८	१७	२८	३३	३१
उ.	२५	१६	१९	२१	२५	१७	१७	२६	२७	२६	१९	२०	१८	२६	२६	२८	२६	१०	५	२०	१२	१९	२०	२२	२४	२२	३२	३०	२९	१५	६	१६	२२	३३	२८	३४
रे.	२५	२५	१२	१४	१७	२६	२६	२४	२६	२५	२७	१३	१२	२२	२२	२५	२६	२१	१४	१२	६	१३	२७	२२	२७	११	२१	१९	२३	२३	१४	१६	१८	२१	३३	२८

दैर्घ्य	२१	२१	२३	२३	२३	२५	२५	२५	२७	२७	२७	२९	२९	२९	३१	३१	३१	३१	३३	३३	३३
विस्तार	१९	२१	१९	२१	२३	२१	२३	२५	२३	२५	२७	२५	२७	२९	२५	२७	२९	३१	२७	२९	३१
आय	७	१	५	३	१	५	७	१	५	३	१	५	७	१	७	५	३	१	३	५	७
वार	७	७	६	७	१	७	२	४	३	६	२	१	५	२	३	१	६	४	४	३	२
अंश	९	९	३	९	६	६	३	६	९	९	९	३	९	६	६	९	३	६	९	९	९
द्रव्य	१२	१२	४	१२	८	१२	४	८	१२	१२	१२	४	१२	१२	१२	१२	४	८	१२	१२	१२
ऋण	५	३	७	१	३	७	५	३	७	१	३	७	५	३	५	७	१	३	१	७	५
नक्षत्र	६	१८	१३	३	२०	१५	१०	५	२७	२७	२७	२२	२७	५	१७	२७	१०	२०	२७	१५	३
तिथि	१२	३	१	९	२	१५	१०	५	३	१५	१२	१०	९	८	५	६	७	८	३	६	९
योग	३	९	२०	१५	१०	२१	५	१६	२७	२७	२७	११	२७	१६	२२	२७	५	१०	२७	२१	१५
आयु	७२	४८	१६	२४	३२	१२०	४०	८०	४८	१२०	७२	४०	२४	८	६०	९६	११२	८	४८	९६	२४

दैर्घ्य	[illegible]	४७	४७	४५	४५	४५	४३	४५	४३	४१	४१	४१	४३	३९	४९	३७	३५	४९	३५	४९	४९	५१
विस्तार	४५	४१	३९	४३	४१	३९	३९	४५	३५	३९	३५	३	४१	३३	४५	३१	४५	४१	३३	४३	४७	४९
आय	३	७	१	७	५	३	५	१	३	७	३	१	३	७	५	३	१	१	३	३	७	३
वार	२	४	५	६	१	३	१	४	७	६	७	४	५	५	७	५	७	७	७	७	७	७
अंश	९	६	९	९	९	९	९	९	६	९	६	९	३	९	९	६	६	३	९	६	३	९
द्रव्य	१२	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	१२	८	१२	४	१२	१२	८	८	४	१२	८	४	१२
ऋण	५	५	३	५	७	१	७	३	१	५	१	३	१	५	७	१	३	३	१	१	५	१
नक्षत्र	[illegible]	२६	३	६	१८	२७	२४	२३	५	२१	५	२४	१०	९	९	२३	२६	७	६	८	१०	१२
तिथि	१५	११	९	१५	१५	१५	६	१५	५	१२	५	९	४	६	१५	१०	५	७	१५	११	४	१२
योग	९	१३	१५	१८	९	२७	१२	२७	१६	२६	१६	१२	५	१२	१८	२५	१३	१७	३	४	५	६
आयु	१२०	९६	२४	१२०	१२०	१२०	९६	१२०	८	७२	८०	२४	६४	९६	१२०	५६	८०	११२	१२०	५६	६४	७२

दैर्घ्य तथा विस्तारक घाते पिण्ड। पिण्ड मे ९, ९, ६, ८, ३, ८, ८, ४, ८, सँ क्रमशः गुणन एवं ८, ७, ९, १२, ८, २७, १५, २७, १२०सँ क्रमश भा[illegible] ना पर आयवारादि होइछ। विषमाय शुभ। सूर्यारवार शून्यांश अशुभ। द्विराश्यात्मक नक्षत्र कृत्तिका आदिमे एक शेषने मेष, दू आदिमे वृष ऋणसँ धन अधिक शुभ, कर्तृ भात् तारादिक ज्ञान। गृह तथा प्राकर पतिक नक्षत्र एके नहि नीक। गज पृष्ठ (शुभ)-द. प. दिशा, नै. वा. कोण ऊँच हो। कूर्म पृष्ठ (शुभ) मध्य[illegible] ऊँच, बाह्य कात नीच। नाग पृष्ठ (अ.) द. उ. ऊँच, बीचमे नीच। दैत्य पृष्ठ (अ.) पू. ई. अ. ऊँच, प. नीच।

92-32